नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वैद्यजीवन	कायस्थ धर्म्म निरू-	गीतगोविन्द	शिशुबोध
औषधिसंग्रह कल्प-	तथा छोटा	कथा सत्यनारायण	पत्र हितैषिणी
वल्ली	मथुरा सभा	परमार्थ सार	पत्र दीपिका
अमृतसागर बड़ा	ज्योतिष	शार्ङ्गधरसंहिता	विद्या चक्र
अमृतसागर छोटा	मुहूर्त गणपति	पाराशरी सटीक	विद्यांकुर
इलाजुल गुर्बा	मुहूर्त्त चक्रदीपिका	शीघ्रबोध सटीक	पदार्थ विद्यासार
वैद्य मनोत्सव	मुहूर्त चिन्तामणि स-	लघुजातक	पदार्थ ज्ञान दर्पण
[illegible]	मुहूर्त दीपक	षट्पञ्चाशिका	भोजप्रबन्धसार
ज्योतिष भाषा	बृहज्जातक सटीक	ताजिक	राजनीति
जातक चन्द्रिका	जातकालंकार	गरुड़पुराण	भाषालघुव्याकरण
जातकालंकार	जातकाभरण	रामविवाहोत्सव	१ भाग व २ भाग
दैवज्ञाभरण	होरामकरन्द	सरिश्ते ताली-	भाषा तत्त्व दीपिका
ज्ञान स्वरोदय	मुहूर्त मार्तण्ड सटीक	म की पुस्तकें	भाषा चन्द्रोदय
रमलसार	संस्कृत उर्दू टीका	संस्कृत	भूगोल तत्त्व
रमल नौरत्न	मनुस्मृति	ऋजुपाठ १ भाग	भूगोल दर्पण
[illegible]	विष्णु हारीत	तथा २ भाग	इतिहास तिमिरना-
संस्कृत की पुस्तकें	महिम्नस्तोत्र	तथा ३ भाग	शक १ भाग व २ भाग
लघुकौमुदी	शतार्क	[illegible]	तथा ३ भाग
सिद्धान्त चन्द्रिका	याज्ञवल्क्य स्मृति	नागरी कैथी	अवध देशीय भूगोल
भाषा तत्त्व प्रकाश	संस्कृत भाषा	अक्षरमाला कैथी	इंग्लिस्तान का इति-
पञ्च महायज्ञ	टीका	१ भाग व २ भाग	हास
निर्णयसिन्धु	अमरकोष तीनों	तथा कैथी फार-	हितो पत्रिका
कर्म्मविपाक	काण्ड	सी नागरी	बाला भूषण
संग्रह शिरोमणि	याज्ञवल्क्य स्मृति	हरूफ़ मुफ़र्दात	पद्य संग्रह
भगवद्गीता पञ्चरत्न	सन्ध्या पद्धति	अक्षरारम्भ	भाषा काव्य संग्रह
दुर्गापाठ मूल	शतार्क	वर्णप्रकाशिका १	कवित्त रत्नाकर १ भा०
दुर्गापाठ सटीक	भगवद्गीता टीका	भाग व २ भाग	तथा २ भाग
विष्णु भागवत	हरिवंश लाल	सूरजपुर की कहानी	मंगल कोष
कथा भ्रातृद्वितीया	भगवद्गीता टीका	धर्म्मसिंह का वृत्तान्त	अंक प्रकाश
अपराधभंजन स्तोत्र	आनन्दागिरि	शिक्षावली	

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वाराह पुराण	कृष्णप्रिया	ब्रह्मसार	गोकर्णमाहात्म्य
भविष्योत्तर पुराण	विनय मुक्तावली	शिवसिंह सरोज	श्रीगोपालसहस्रनाम
स्कन्द पुराण	उपदेश चन्द्रिका	भक्तमाल	कथा सत्यनारायण
वाल्मीकीय रामायण	मंगल विनोद	इन्द्रसभा	सटीक
अद्भुत रामायण	विजय चन्द्रिका	विक्रम विलास	हनूमान बाहुक
सुन्दर विलास	सिद्धान्त संग्रह	बैताल पचीसी	जनक पचीसी
शुक्रनीति	रामविनय शतक	सिंहासन बत्तीसी	हरिहर सगुण निर्गु-
रसदृष्टि व रसचन्द्रोदय	अनेकार्थ	पद्मावती खण्ड	ण पदावली
सुदामा चरित्र	छन्दोर्णव पिङ्गल	शुक बहत्तरी	वनयात्रा
कृष्ण गीतावली	रसराज	बकावली सुमन	कायस्थ वर्ण निर्णय
श्री अनुराग रस	सतसई मूल	बहार दरवेश	विहार वृन्दावन
सौदागर लीला	सतसई सटीक	क़िस्सा हातमताई	समर विहार वृन्दावन
रासलीला	सभाविलास	अपूर्व कथा	[illegible]
नाटक	बुलबुल विलास	क़िस्सा गुलसनोबर	लक्ष्मी [illegible]
प्रबोधचन्द्रोदय	तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	सहस्र रजनी चरित्र	**इल्मी**
रामाभिषेक	भजनावली	[illegible] का इतिहास	अक्षरावली
आनन्द रघुनन्दन	प्रेमाल	सीता हरण	स्वरबोध
[illegible] का नाटक	चित्र चन्द्रिका	हरि विलास	ज्ञान चालीसी
हनुमन्नाटक	बारहमासा बलदेव	क़िस्सा अई औरत	दोहावली
वेदान्त	मनोहर लहरी	सांगीत प्रह्लाद	बालबोध
योग वाशिष्ठ	गंगा लहरी	**मुतफ़र्रिक़ात**	विद्यार्थी की प्रथम
आनन्दामृतवर्षिणी	यमुना लहरी	शनिश्चर की कथा	पुस्तक
सांख्य तत्त्व कौमुदी	जगद्विनोद	ज्ञानमाला	किताब जन्त्री
काव्य	शृंगार बत्तीसी	गोपीचन्द भरतरी	गणित कामधेनु
सूरसागर	नवीन संग्रह	कथा श्री गंगा जी	लीलावती
कृष्णसागर	**राग**	अवध यात्रा	पटवारियों की पुस्त-
विश्राम सागर	रागप्रकाश	भरतरी गीत	क ६ भाग
प्रेमसागर	लावनी	रामलीला [illegible]	**वैद्यक शास्त्र**
भजनविलास बड़ा	**क़िस्सा बोहद**	दोहावली रत्नावली	निघण्टु
भजनविलास छोटा	नानार्थ संग्रहावली	रसायन प्रकाश	अमर विनोद

कल्पमनसिकेशवं।१६१।

टी॰ सौ करोड़ कल्प के पापसब भ-
स्म हो जावैं। हे अर्जुन पीपल के
वृक्ष के पास मन में निश्चय करके॥१६१॥

मू॰ पठेन्नाम सहस्रं तु गवां
कोटिफलं लभेत्। शिवा-
लये पठेन्नित्यं तुलसीव-
न संस्थितः॥ १६२॥

टी॰ यह सहस्र नाम पढ़े तो करोड़
गोदान का फल प्राप्त हो। और जो
शिवालय में नित्य पढ़े और तुल-
सी के बन में स्थित होकर॥१६२॥

मू॰ नरो मुक्तिमवाप्नोति
चक्रपाणेर्वचो यथा। ब्रह्म
हत्यादिकं पापं सर्व्वपापं
विनश्यति॥१६३॥

टी॰ तो वह मनुष्य मुक्ति को प्राप्त
हो चक्रपाणि भगवान का वचन है
ब्रह्महत्या आदि जो पाप हैं वह स-
ब उसके नाश हो जावैं॥१६३॥

इति श्री विस्नु सहस्र
नाम स्तोत्रं समाप्तं।

کرتوا فنس کیشو نک -

ٹیکا ۱۶۱

تو سو کروڑ کلپ کے پاپ سب بھسم ہو جاوین
اور ہے ارجن اگر پیپل کے درخت کے پاس اعتقاد کر کے

اشلوک ۱۶۲

پٹھین نام سہسر نت گوانگ کوٹ
پھلنگ لبھیت - شوالیے پٹھے
نتینگ تلسی بن سنستھتہ -

ٹیکا ۱۶۲

یہ سہسر نام پڑھے تو کروڑ گئو دان کا پھل ہو اور
اگر شوالے میں یا تلسی کے بن میں نت پڑھے
تو بلا شک وشبہہ -

اشلوک ۱۶۳

نرو مکت مواپنوت چکر پانیر بچو
یتھا - برہم ہتیا دکنگ پاپنگ
سرب پاپنگ بنشیت -

ٹیکا ۱۶۳

وہ آدمی مکت پر وہی پاوے چکر دھاری
بھگوان کا یہ بچن ہے - برہم ہتیا وغیرہ جو پاپ
ہین وہ سب اس کے ناش ہو جاین - فقط

شری بشن سہسر نام استوتر
سماپت ہوا

मू॰ येनध्यातंश्रुतं येनये
नायंपठितःस्तवः। दत्ता-
नि सर्व्वदानानि सुराःस
र्वे समर्चिताः ॥ १५९ ॥
टी॰ जो कोई इसको ध्यान क
रता है और जो सुनता है और
जो पढ़ता है। वह मानो सबदा
न दे चुका और सबदेवताओं
की पूजा कर चुका ॥ १५९ ॥
मू॰ इहलोके परे वापि न
भयंविद्यते क्वचित्। ना
म्नां सहस्रंयोधीते द्वाद-
श्यांममसन्निधौ ॥ १६० ॥
टी॰ इस लोक में और परलोक
में उसको कभी भय नहीं है।
भगवान् कहते हैं कि जो इस
सहस्र नाम की द्वादशी के दि
न हमारे पास पढ़े तो ॥ १६० ॥
मू॰ सनिर्दहति पापानि
कल्पकोटिशतानिच।
अश्वत्थसन्निधौ पार्थ

اشلوک ۱۵۹
یینہ دھیاتنگ شرتنگ یین
ییناینگ پٹھتہ استوہ ۔ دتّان سرب
دانان سُراہ سربے سمرچتاہ ۔
ٹیکا ۱۵۹
جو کوئی اس استوتر کا دھیان کرتا ہے اور جو
سنتا ہے اور جو پڑھتا ہے ۔ وہ گویا سب دان
دے چکا اور سب دیوتون کی پوجا کر چکا ۔
اشلوک ۱۶۰
اِہ لوکے پرے واپی نہ بھینگ
بدییتے کوچت ۔ نامنانگ سہسنگ
یو دھیتے دوادشیانگ مم سنّدھو ۔
ٹیکا ۱۶۰
اس لوک اور پرلوک مین اسکو کبھی ڈر نہوگا
بھگوان کہتے ہین کہ اگر اس سہسر نام کو ہمارے
پاس دوادشی کے دن پڑھے تو ۔
اشلوک ۱۶۱
سنردہت پاپان کلپ کوٹ
شتانچ ۔ اشوتھ سنّدھو پارتھ

सोई फल इस स्तोत्र के पाठक-
रने वाले को प्राप्त होगा ॥१५६॥

मू॰ योनरः पठते नित्यं त्रि
कालं केशवालये । द्विका
लमेककालं वा क्रूरं सर्व्वं
व्यपोहति ॥१५७॥*॥

टी॰ भगवान् के मन्दिर में जा-
कर जो मनुष्य इस को प्रातः म-
ध्यान्ह सन्ध्या तीनों काल पढ़े
अथवा दोही काल अथवा ए-
कही काल पाठ करै तो जो दुःख सं-
सार के हैं वह सब दूर होजांय।१५७

मू॰ दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौ
म्याः सर्व्वे सदा ग्रहाः । वि-
लीयन्ते च पापानि स्तवे
ह्यस्मिन्प्र कीर्तिते १५८

टी॰ इसके सब शत्रु भस्म होजा-
ते हैं और सब ग्रह इसपर स-
दा प्रसन्न रहते हैं । और उस
के पापों का नाश होजाता है इ-
स स्तोत्र में यह बात कही है १५८

وہی پھل برابر ملتا ہے اُس شخص کو
جو اِس اِستوتر کو پڑھتا ہے —

اشلوک ۱۵۷

یو نرہ پٹھتے نینگ ترکالنگ
کیشوالیے - دوکالمیک
کالنگ با کروننگ سربنگ بیپوہتے

ٹیکا ۱۵۷

جو آدمی بھگوان کے مندر میں جاکر صبح اور
دوپہر اور شام کو تینوں وقت خواہ دو
وقت یا ایک ہی وقت اسکو پڑھیگا تو جو
دکھ سنسار کے ہیں وہ دور ہو جاینگے —

اشلوک ۱۵۸

دہینتے رپوستسیہ سومیاہ سربے
سدا گرہاہ - بلی ینتے چہ پاپان
استوہیہ سمین پرکیرتتے -

ٹیکا ۱۵۸

اور اُسکے سب دشمن نابود ہوجاینگے اور سب
گرہ اُسپر ہمیشہ خوش رہینگے - اور اُسکے سب
پاپ ناش ہوجاینگے یہ بات اِس استوتر میں کہی ہے

सर्व्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ॥ १५४ ॥

टी॰ जैसे आकाश से जल गिर कर समुद्र को जाता है। वैसे ही जिस देवता को कोई नमस्कार करै वह भगवान् को पहुँचता है ॥ १५४ ॥ १५४ ॥

मू॰ एष निष्कण्टकः पंथा यत्र संपूज्यते हरिः । कुपथं तं विजानीयाद्गोविन्दरहितागमं ॥ १५५ ॥

टी॰ जो भगवान् की पूजा है वही राह निःकण्टक है। भगवान् करके रहित जो पूजा है वह राह कुराह है ॥ १५५ ॥

मू॰ सर्व्ववेदेषु यत्पुण्यं सर्व्वतीर्थेषु यत्फलं । तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वा देवं जनार्द्दनं ॥ १५६ ॥

टी॰ सब वेदों का जो फल है व तीर्थों का जो फल है।

سرب دیو نمسکار نہ کیشونگ
پرت گچھت ـ

ٹیکا
۱۵۴
جیسے آکاش سے جل گر کر سمندر کو جاتا ہے ویسے ہی کوئی چاہے کسی دیوتا کو نمسکار کرے وہ بھگوان کو پہنچتا ہے ـ

اشلوک
۱۵۵
ایکھ نش کنٹکہ پنتھا یتر سمپوجیتے ہرہ ـ کپتھنگ تنگ وجانیات گوبند رہتا گمنگ ـ

ٹیکا
۱۵۵
بھگوان کی جو پوجا ہے وہی راہ بے کانٹوں کی ہے ـ اور جو پوجا بھگوان سے الگ ہے وہی راہ خراب ہے ـ

اشلوک
۱۵۶
سرب بید یشو یت پنیم سرب تیرتھیشو یت پھلم تت پھلم سماپنوتی ستوتوا دیونگ جناردننگ

ٹیکا
۱۵۶
سب بید کا جو پھل ہے اور سب تیرتھوں کا جو پھل

वासितं भुवनत्रयं । सर्व्वभूत निवासीनां वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ १५२ ॥

टी. इस संसार की जो वासना है उसको नाश करने वाले और तीनों भुवन में व्याप्त हैं । सब भूतों अर्थात सब प्राणियों में जो निवास करते हैं वासुदेव उनको नमस्कार है ॥ १५२ ॥ १५२ ॥

मू. नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः ॥ १५३ ॥

टी. जो ब्राह्मण के मानने वाले हैं उनको और जो गुरु और ब्राह्मण के हितकारी हैं उनको नमस्कार है । जो जगत के हितकारी हैं और कृष्ण रूप हैं और गौवों के स्वामी हैं उनको नमस्कार है १५३

मू. आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरे ।

بھون تریگ - سرب بھوت
نواسی نانگ باسدیو نمو ستتے

ٹیکا

۱۵۲
اس سنسار کی جو باسنا ہے انکو ناش کرنے
والے ہیں اور تینون بھون مین بیاپت ہین
جو باسدیو سب جیوون مین بستے ہین انکو
نمسکار ہے —

اشلوک

۱۵۳
نمو برہمنیہ دیواسے گو براہمن
ہتایچ - جگت وھتای کرشنا
گوبندا اسے نمو نمہ —

ٹیکا

۱۵۳
جو براہمن کے ماننے والے اور گئو اور
براہمن کے ہتکاری ہین انکو نمسکار ہے
جو جگت کے ہتکاری ہین اور کرشن
روپ ہین اور گئوون کے سوامی ہین
انکو نمسکار ہے —

اشلوک
۱۵۴
آکاشات پتتنگ تویںگ
یتھا گچھت ساگرے -

जिनकी सहस्त्र मूर्त्ति हैं उनको न-
मस्कार है हजार हैं चरण और
शिर और जंघा और भुजा जिन
के उनको नमस्कार है हजार
नाम हैं जिनके और पुरुष रू-
प हैं और निरन्तर हैं और
सहस्त्र कोटि युग के धारण
करने वाले हैं उनके अर्थ न
मस्कार है ॥ १५० ॥ १५० ॥

मू० नमः कमलनाभाय
नमस्ते जलशायिने । न-
मस्ते केशवानन्त वासुदे
व नमोस्तु ते ॥ १५१ ॥

टी० नमस्कार है उनको कि जि
नकी नाभि से कमल निकला है
और नमस्कार है उनको जो ज
ल में शयन करते हैं । नमस्का
र है उनको जो केशव हैं अन-
न्त हैं और जो वसुदेव के पुत्र हैं
उनको नमस्कार है ॥ १५१ ॥

मू० वासनाद्वासुदेवस्य

جنکی ہزار مورت ہیں انکو نمسکار ہے ہزار
ہیں چرن اور نیتر اور سر اور زانو اور
اور بازو جنکے انکو نمسکار ہے - ہزار
ہیں نام جنکے اور پرش روپ ہیں اور
نرنتر ہیں اور ہزار کروڑ جگ کے دھارن
کرنے والے ہیں انکو نمسکار ہے -

اشلوک

۱۵۱

نمہ کمل نابھاے نمستے
جل شاینے - نمستے کیشوانت
باسدیو نموستتے -

ٹیکا

۱۵۱

نمسکار ہے انکو کہ جنکی نابھ سے کمل نکلا
ہے اور انکو نمسکار ہے کہ جو جل میں سوتے ہیں یعنی
آرام کرتے ہیں - جو کیشو ہیں اور اننت
ہیں انکو نمسکار ہے اور جو بسدیو کے پتر
ہیں انکو نمسکار ہے -

اشلوک

۱۵۲

باسنا باسدیوسیہ باسنگ

नयन पद्म के पत्र से भी हैं विशाल नेत्र तुम्हारे। जो भक्त हैं और जो स्तुति करैं उनकी रक्षा करी हे जनार्दन भगवान्॥२४८॥

मू॰ श्री भगवानुवाच॥
यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव। सो हमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः॥२४९॥

टी॰ श्री भगवान् बोले॥ कि जो पुरुष मेरी सहस्र नाम करके स्तुति करने की इच्छा करते हैं। सो एकही श्लोक के पढ़ने में वही स्तुति होजाती है॥२४९॥

मू॰ नमोस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्त्तये सहस्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटी युगधारिणे नमः॥२५०॥२५०॥

टी॰ जो भगवान् अनन्त हैं और

کمل کے پتر سے بھی آدھاک سندر ہین نیتر تمھارے - جو تمھاری بھگت یا استت کرین انکی تم رچھا کرو ہے جنار دن بھگوان -

اشلوک

۱۴۹

شری بھگوان اواچ - یو مانگ نام سہسرین استوت مچھت پانڈو - سوہ میکین اشلوکین استت ایو نہ سنشیہ -

ٹیکا

۱۴۹

شری بھگوان نے کہا کہ جو پرش میری استت سہسر نام کی کرنے کی اچھا کرتا ہے تو ایک ہی اشلوک کے پڑھنے مین وہی استت ہو جاتی ہے -

اشلوک

۱۵۰

نمو ستوننتائے سہسر مورتیے سہسر پاداکش شرو باہیے - سہسر نامنے پرشاے شاشوتے سہسر کوٹی جگ دھارنے نمہ -

ٹیکا

۱۵۰

جو بھگوان اننت یعنی لا انتہا ہین اور

र्तितं । पठेद्य इच्छेत्तु-
रुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखा-
नि च ॥ २४६ ॥ २४६ ॥

टी॰ यह स्तुति भगवान् वि-
ष्णु की व्यास जी ने कही है । व-
ह पुरुष पढ़े जिसको इच्छा क-
ल्याण और सुख की हो ॥ २४६ ॥

मू॰ विश्वेश्वरमजं देवं ज-
गतः प्रभवाप्ययं । भजं-
ति ये पुष्कराक्षं न ते या-
न्ति पराभवं ॥ २४७ ॥

टी॰ विश्व के ईश्वर जन्म रहित
देव रूप जगत् की उत्पत्ति और
नाश करने वाले हैं । जो भज-
ते हैं कमल नेत्र को वे तिरस-
कार को प्राप्त नहीं होते ॥ २४७ ॥

मू॰ अर्जुन उवाच ॥ पद्मपत्र
विशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्त-
म । भक्तानामनुरक्तानां त्रा-
ता भव जनार्दन ॥ २४८ ॥

टी॰ अर्जुन बोले ॥ हे कमल

پٹھید یہ اچھیت پرشہ شریسے یہ
پراپتنگ سکھانچ -

ٹیکا ۱۴۶

یہ استت بشن بھگوان کی بیاس جی نے کہی ہے
اسکو وہ پرکھ پڑھے جسکو سکہ اور کلیان کی اچھا ہو

اشلوک ۱۴۷

بشویشورمجنگ دیونگ جگتہ
پربھوا پیینگ - بھجنت یے
پشکر اکشنگ نتے یانت پرابھونگ

ٹیکا ۱۴۷

بشو کے ایشور جنم رہت دیو روپ جگت کی
اتپت اور ناش کرنیوالے ہیں - جو بھجتے ہیں
کمل نیتر بھگوان کو وہ بھوف رہتے ہیں -

اشلوک ۱۴۸

ارجن اباچ - پدم پترا بشالا کش پدم
نابھ سرو تمہ - بھکتانانگ انرکتانانگ
تراتا بھوجنا ردنہ -

ٹیکا ۱۴۸

ارجن کہنے لگے - کہ ہے کمل نین

मू· योगो ज्ञानं तथा सां
ख्यं विद्याः शिल्पादि क-
र्म्मच । वेदाः शास्त्राणि
विज्ञानमे तत्सर्व्वं जना
र्द्दनात् ॥१४४॥१४४॥

टी· योग और ज्ञान और सां-
ख्य और चौदही विद्या और
कारीगरी । और वेद और शा-
स्त्र और विज्ञान यह सब भग
वान से पैदा हुवे ॥ १४४ ॥

मू· एको विष्णुर्महद्भू
तं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रिलोकान्व्याप्य भूता-
त्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्य
यः॥१४५॥१४५॥

टी· एक विष्णु हैं जो पञ्च भूत
और सम्पूर्ण प्राणी । तीनों लो-
क को व्याप्त करके भोगैं हैं वि-
श्व के भोक्ता हैं ॥१४५॥॰॥

मू· इमं स्तवं भगव-
तो विष्णोर्व्यासेन की-

۱۴۴ اشلوک

جوگو گیانم تتھا سانکھینک
بدیاہ شلپادو کرم چ - بیداہ شاستران
بگیان مے تت سرونگ جناردنات -

ٹیکا ۱۴۴

جوگ اور گیان اور سانکھیہ شاستر اور چودہ بدیا
اور کاریگری - اور بید اور شاستر اور بگیان
یہ سب بھگوان سے پیدا ہوئے -

۱۴۵ اشلوک

ایکو بشنر مہد بھوتنگ پرتھک
بھوتانیہ نیکشہ - ترلوکان بیاپیہ
بھوتاتما بھنکتے بشو بھگ ببیہ -

ٹیکا ۱۴۵

ایک بشن ہین جو تینون لوک مین بیاپت
ہوکر پنچ بھوت اور سارے پرانیونکو بھوگ
کرتے ہین یعنی بشو کے بھوکتا ہین -

۱۴۶ اشلوک

امنگ استونگ بھگوتو
بشنور بیاسین کیرتتنگ -

सत्वं तेजो बलं धृतिः। वा-
सुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं
क्षेत्रज्ञमेवच ॥१४१॥

टी० दशौ इन्द्री मन बुद्धि पराक्र-
म तेज बल धीर्य्य। सब भगवा-
न का रूप है देह और जीव ॥१४१॥

मू० सर्व्वागमानामाचारः
प्रथमं परिकल्पते। आ-
चारप्रभवो धर्म्मो धर्म्म-
स्य प्रभुरच्युतः ॥१४२॥

टी० सब वेदों के आचार हैं। आ-
चार से धर्म्म पैदा हुवे और ध-
र्म्म के पति भगवान् हैं ॥१४२॥

मू० ऋषयः पितरो देवाः
महाभूतानि धातवः।
जङ्गमाजङ्गमञ्चेदं ज-
गन्नारायणोद्भवं ॥१४३॥

टी० ऋषि और देवता पञ्च भूत
सातौ धातु। और स्थावर और
जंगम यह सब जगत नाराय-
ण से पैदा हुवे ॥१४३॥१४३॥

تیجو بلنگ دھرت - باسدیواتم
کانیاہُہ چھیتر نگ چھیتر گیہ میوچ -

ٹیکا
۱۴۱

دسو اندری من بدھ پراکرم تیج بل دھیرج
دیہہ اور جیو یہ سب بھگوان کا روپ ہیں -

اشلوک
۱۴۲

سرباگما نا ما چارہ پرتھمنگ پرکلپتے
آچار پربھوو دھرمو دھرمسیہ
پربھور چیتہ -

ٹیکا
۱۴۲

سب بیدوں سے آچار پیدا ہوا آچار سے دھرم
پیدا ہوا دھرم کے مالک بھگوان ہوئے -

اشلوک
۱۴۳

رکھیہ پترو دیوا مہا بھوتان
دھاتوہ - جنگما جنگمنگ چیدنگ
جگنا راینو بھونگ -

ٹیکا
۱۴۳

رکھ پتر دیوتا پانچ بھوت ساتو دھات - اور
استھاور جنگم جگت نارائن سے پیدا ہوئے -

अशुभ को नहीं प्राप्त होंगे ।
जन्म और मरण और बुढ़ा-
पा और व्याधि और भय उन
को नहीं होता है ॥ १२६ ॥

मू॰ इमंस्तवमधीयानः
श्रद्धाभक्तिसमन्वितः
युज्येनात्मसुखक्षांति
श्रीधृतिस्मृतिकीर्त्ति-
भिः ॥ १२७ ॥ १२७ ॥

टी॰ इस सहस्रनाम को पढ़ता
हुआ श्रद्धा और भक्ति करके
युक्त हो । जीवात्मा सुखी र-
है और क्षमा और लक्ष्मी औ
र वीर्य्य और स्मृति और की-
र्त्ति को युक्त होगा ॥ १२७ ॥

मू॰ न क्रोधो न च मात्
सर्य्यं न लोभो नाशुभा
मतिः । भवन्ति कृत
पुण्यानां भक्तानां पुरु-
षोत्तमे ॥ १२८ ॥ १२८ ॥

टी॰ न क्रोधी हो न ईर्षा हो न लोभ हो

اشبھ کو نہیں پراپت ہونگے - اور جنم
اور مرن اور بڑھاپا اور خوف و بیماری
انکو نہیں پراپت ہوتی ہے -

اشلوک ۱۲۷

اِمنگ استو مدھی یانہ شردھا
بھکت سمنوتہ - یجیتے آتم
سکھنگ کشانت شری دھرت
اسمرت کیرت بھِہ -

ٹیکا ۱۲۷

اس سہسر نام کو پڑھتا ہوا شردھا اور بھگت
کے ساتھ جو کوئی جگت ہو - وہ جیو آتما سکھی
رہیگا اور چھما اور لچھمی اور بیرج اور اسمرت
اور کیرت کو جگت ہوگا -

اشلوک ۱۲۸

نکرودھو نَمّاتسرینگ نہ لوبھو نا
شبھامتہ - بھونت کرت پنیا
نانگ بھگتانانگ پرکھوتمے -

ٹیکا ۱۲۸

نہ کرودھ ہو نہ حرص ہو نہ لالچ ہو نہ کھوٹی

स्तुवन्नामसहस्रेणनित्यं
भक्तिसमन्वितः ॥१३४॥
टी॰ कठिन कामों को तर जाय
गा पुरुष पुरुषोत्तम की स्तु-
ति हज़ार नाम की करके नि-
त्य जो भक्ति करे ॥ १३४ ॥
मू॰ वासुदेवाश्रयोमर्त्यो
वासुदेवपरायणः। सर्व्व
पापविशुद्धात्मायाति
ब्रह्मसनातनम् ॥१३५ ॥
टी॰ जो वासुदेव के आश्रय है
और वासुदेव के आधीन है ।
उसके सब पाप छूट जांयगे और
सनातन ब्रह्म को प्राप्त होगा १३५
मू॰ नवासुदेव भक्तानाम
शुभं विद्यते क्वचित
जन्म मृत्यु जराव्याधि
भयं नैवोपजायते ॥
॥ १३६ ॥ १३६ ॥ १३६ ॥
टी॰ वासुदेव के जो भक्त हैं वह

اَستُوَن نام سہسترین نِتّیک
بھکت سَمَنوِتہ ۔
ٹیکا ۱۳۴
کٹھن کاموں کو بھی طے کر جاوے پُرش پُرشوتم کی
اُستُت ہزار نام کرکے نِت جو بھکت سیوا کرے
اشلوک ۱۳۵
باسدیو آشرَیو مَرتیو باسدیو
پرایَنہ ۔ سَرب پاپ بِشُدّھاتما
یاتِ برہم سناتنم ۔
ٹیکا ۱۳۵
چونکہ باسدیو کے آشرے ہیں اور باسدیو
آدھین ہیں ۔ اُسکے سب پاپ چھوٹ جاینگے اور
سناتن برہم کو پاویگا ۔
اشلوک ۱۳۶
نہ باسدیو بھگتانام اشُبھم بِدّیتے
کوچت ۔ جنم مرتیو جرا بیادھ
بھینک نیوپ جایتے ۔
ٹیکا ۱۳۶
باسدیو بھگوان کے جو بھگت ہیں وہ

मू॰ नभयंक्वचिदाप्नोति वीर्य्यंतेजश्चविंदति। भवत्यरोगोद्युतिमानबलरूपगुणान्वितः ॥ १३२॥

टी॰ कभी भय को नहीं प्राप्त होगा पराक्रम और तेजवाला होगा। आरोग्य होगा शोभावाला होगा बल और रूप और गुण करके युक्त होगा ॥ १३२ ॥

मू॰ रोगार्त्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्। भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥ १३३ ॥ १३३ ॥ १३३ ॥

टी॰ रोगी रोग से छूट जायगा और कैदी कैद से। डरा हुआ डर से छूट जायगा और विपत्ति वाला पीड़ा से छूट जायगा ॥ १३३ ॥ १३३ ॥

मू॰ दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमं ।

اشلوک ۱۳۲

نہ بھینگ کوچد اپنوت ویرینگ تیجش چ وندت ۔ بھوتیرگو دیوتمان بل روپ گناتوتہ ۔

ٹیکا ۱۳۲

اور کبھی اسکو کسی سے خوف نہوگا اور صاحب قدرت و صاحب رعب ہوگا ۔ اور تندرستی اور شوبھا اور بل اور روپ اور گن والا ہوگا ۔

اشلوک ۱۳۳

روگارتو مچیے روگا بدھو مچیت بندھنات ۔ بھیان مچیت بھیت است مچیے واپن اپدہ ۔

ٹیکا ۱۳۳

بیمار آدمی بیماری سے چھٹکارا پاویگا اور قیدی قید سے چھوٹ جاویگا ۔ ڈرا ہوا ڈر سے بیڈر ہوجاویگا اور مصیبت والا مصیبت سے چھوٹ جاویگا ۔

اشلوک ۱۳۴

درگانیہ تترتیاشو پرکھہ پرکھوتمم

अर्थ को प्राप्त होगा । काम-
ना वाला कामना को प्राप्त हो-
गा संतान की इच्छा वाला सं-
तान को प्राप्त होगा ॥ १२९ ॥

मू॰ भक्तिमान्यः सदोत्था-
य शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्ना-
मेतत्प्रकीर्तयेत् ॥ १३० ॥

टी॰ भक्तिवाला पुरुष सदा उ-
ठ कर पवित्र होकर भगवान में
मन लगाकर । जो हजार नारा-
यण के नित्य कीर्तन करैगा १३०

मू॰ यशः प्राप्नोति विपुलं
ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रे-
यः प्राप्नोत्यनुत्तमम् । १३१ ।

टी॰ उसको यश प्राप्त होगा अ-
पनी जाति में प्रधान होगा ।
अचल लक्ष्मी को प्राप्त हो-
गा और कल्याण को प्राप्त हो-
गा उत्तम होगा ॥ १३१ ॥

مرادکو پاویگا - اور آرزومند کی آرزو
پوری ہوگی اور اولاد کی تمنا رکھنے والا
اولاد پاویگا -

اشلوک

۱۳۰
بھکت مانیہ سدوتھای شچیش
تدگت مانس سہسرنگ باسدیو
نامنامیتت پرکیرتیت -
یگا

۱۳۰
جو بھکت والا پرش سدا اٹھکر پوتر ہوکر
بھگوان مین من لگاکر - یہ ہزار نام نارائن
کے نت پاٹھ کریگا -

اشلوک

۱۳۱
یشہ پرابنوت ویپلنگ گیات
پرادھانیہ میوچ - اچلانگ شری
ماپنوتی شریہ پرابنوتینتمم -
گا

۱۳۱
اسکو جس ملیگا اور اپنی ذات مین پردھان
ہوگا - اور اچل لچھمی پاویگا اور بھلا ہوگا
اور سب سے اُتم ہوگا -

वह अशुभ को नहीं प्राप्त हो-
गा परलोक में और इस लो-
क में ॥१२७॥१२७॥१२७॥

मू॰ वेदान्त गो ब्राह्मण
स्स्यात्क्षत्रियो विजयीभ
वेत् । वैश्यो धन समृद्ध-
स्स्याच्छूद्रः सुख मवा-
प्नुयात् ॥१२८॥१२८॥

टी॰ जो ब्राह्मण पढ़ैगा वेदान्त
को जानैगा और क्षत्री विजय
को प्राप्त होगा । वैश्य धन को
प्राप्त होगा और शूद्र सुख को
प्राप्त होगा ॥१२८॥१२८॥

मू॰ धर्म्मार्थी प्राप्नुयाद्ध-
र्म्ममर्थार्थी चार्थमाप्नु-
यात् । कामानवाप्नु-
यात्का [illegible]
नुयात्प्रजाः ॥ १२९ ॥

टी॰ धर्म्म की इच्छावाला धर्म्म
को प्राप्त होगा द्रव्य की इच्छावा-
ला द्रव्य को प्राप्त होगा अर्थवाला

وہ اس لوک اور پرلوک میں اشبھ کو
نہ پراپت ہوگا —

اشلوک ۱۲۸

بیدانت گو براہمنہ سیات کشتریو
وجئی بھویت ۔ ویشیو دھن سمردھہ
سیات شودرہ سکھ مواپنیات —

ٹیکا ۱۲۸

جو براہمن اسکو پڑھیگا وہ بیدانت کو جانیگا
اور چھتری فتح پاویگا ۔ اور ویشیہ دھن دولت
اور شودر سکھ پاویگا —

اشلوک ۱۲۹

دھرمارتھی پراپنیات دھرم
مرتھارتھی چارتھماپنیات —
کاما نواپنیات کامی پرجا
رتھی پراپنیات پرجا —

ٹیکا ۱۲۹

دھرم چاہنے والا دھرم کو پاویگا اور دولت
چاہنے والا دولت کو پاویگا اور مراد چاہنے والا

रक्षा करता है सर्व्वप्रहर-
णायुधः सम्पूर्ण शास्त्र प्र-
हार करने वाले पास हैं जि-
स के ॥१२५॥१२५॥१२५॥

ॐ सर्व्वप्रहरणायुधः

अथ माहात्म्य ॥

मू॰ इतीदं कीर्त्तनीय-
स्य केशवस्य महात्म-
नः। नाम्नां सहस्रं दि-
व्यानामशेषेण प्रकी-
र्त्तितं ॥१२६॥१२६॥

टी॰ यह नाम कीर्त्तन करते हुवे
केशव महात्मा के। हजार ना-
म दिव्य सारे कीर्त्तन करे॥१२६॥

मू॰ य इदं शृणुयान्नि-
त्यं यश्चापि परिकीर्त्त-
येत्। नाशुभं प्राप्नुया-
त्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च-
मानवः ॥१२७॥१२७॥

टी॰ जो कोई इन नामों को नि-
त्य सुने और जो कोई कीर्त्तन करे

رچھا کرتا ہے۔ سرب پرہرنا
یدھ سب ہتھیار پرہار کرنے والے
پاس ہیں جسکے

ماہاتم

**اونگ سرب
پرہرنا یدھ**

اشلوک ۱۲۶

اِتی دَنگ کیرتنی یسیہ کیشوسیہ
مہاتمنہ۔ نامناںگ سہسرنگ
دِبیاناںگ شیکھین پرکیرتتنگ

ٹیکا ۱۲۶

یہ نام کیرتن کرتے ہوئے کیشو مہاتما کے
ہزار نام دبیہ سارے کیرتن کری۔

اشلوک ۱۲۷

یہ اِدنگ سرنُ یان نتینگ یشچاپی
پرکیرتییت۔ ناشبھنگ پراپنُیا
کنچت سومترہ چ مانوہ۔

ٹیکا ۱۲۷

جو کوئی اِن ناموں کو ہمیشہ سنے اور جو گاوی

वीरवान: वाराह रूप धारण करके हिरण्याक्ष को मारनेवाला है सामगायन: सामवेद का गाने वाला है देवकीनंदन: देवकी का पुत्र है स्रष्टा जगत का रचनेवाला है क्षितीश: पृथ्वी का मालिक है पापनाशन: पापों का दूर करने वाला है ॥ १२४ ॥

मू. शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः । रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

टी. शङ्खभृत् शङ्ख का धारण करने वाला है नन्दकी विद्यारूप तलवार है जिसके चक्री सुदर्शन चक्र वाला है शार्ङ्गधन्वा शार्ङ्ग धनुष का धारण करनेवाला है गदाधरः गदा का धारण करने वाला है रथाङ्गपाणि रथ का पहिया है हाथ में जिसके अक्षोभ्यः

بکیھا ئیہ باراہ رُوپ دھارن کرکے
ہرنیاکش دیت کو مارنیوالا ہی سام
گاینہ سام بید کا گانیوالا ہی دیوکی
نندنہ دیوکی کا پُتر ہی سرشٹا
جگت کا رچنے والا ہی چھتیشہ پرتھوی
کا مالک ہی پاپ ناشنہ پاپونکا
دُور کرنے والا ہی

اشلوک

۱۲۵

شنکھ بھرت نندکی چکری شارنگ
دھنوا گدا دھرہ - رتھانگ
پانر اکشوبھیہ سرب پرہرنا یدھہ

ٹیکا

۱۲۵

شنکھ بھرت شنکھ کا دھارن کرنے
والا ہے نندکی ودیا روپ تلوار ہے
جسکے چکری سدرشن چکر والا ہے
شارنگ دھنوا شارنگ دھنکھ کا
دھارن کرنیوالا ہی گدادھرہ گدا کا
دھارن کرنے والا ہے رتھانگ
پان رتھ کا پہیا ہی ہاتھ میں جسکے اکشوبھیہ

मू· यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी य-
ज्ञभुग्यज्ञसाधनः। य-
ज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्न-
मन्नाद एव च ॥ १२३ ॥

टी· यज्ञभृद् यज्ञ का धारण
करने वाला है यज्ञकृद् य-
ज्ञ करने वाला है यज्ञी यज्ञ-
वाला है यज्ञभुग् यज्ञ को भो-
क्ता है यज्ञसाधनः यज्ञ का
साधने वाला है यज्ञांतकृत्
यज्ञ का फल देने वाला है यज्ञ
गुह्यं ज्ञान यज्ञ रूप है अन्नं
अन्न रूप है अन्नाद एव च
अन्न का खाने वाला है ॥१२३॥

मू· आत्मयोनिः स्वयं-
जातो वैखानः सामगाय-
नः। देवकीनन्दनः स्रष्टा
क्षितीशः पापनाशनः १२४

टी· आत्मयोनिः आत्मा का
उत्पन्न करने वाला है स्वयंजा-
तो किसी से पैदा नहीं हुआ है

اشلوک ۱۲۳
یگیہ بھر دیگیہ کرد یگیی یگیہ
بھگ یگیہ سادھنہ یگیانت
کرد یگیہ گہیم منّا دایوچ -

ٹیکا ۱۲۳
یگیہ بھرد جگ کا دھارن کرنے والا ہے
یگیہ کرد جگ کرنیوالا ہی یگیی جگ
والا ہی یگیہ بھگ جگ کا بھوگ کرنے
والا ہی یگیہ سادھنہ جگ کا سادھنے
والا ہی یگیانت کرت جگ کا پھل دینے
والا ہے یگیہ گہیم گیان جگ روپ
ہی ان ان روپ ہی انّادایوچ
ان کا کھانے والا ہے -

اشلوک ۱۲۴
آتم یونہ سویں جاتو بیکھانہ
سام گاینہ - دیوکی نندنہ سرشٹا
چھتیشہ پاپ ناشنہ -

ٹیکا ۱۲۴
آتم یونہ آتما کا پیدا کرنیوالا ہی سویں
جاتو کسی سے پیدا نہیں ہوا ہے

एकात्मा एक आत्मा है अर्थात् एक है जन्ममृत्युजरातिगः जन्म मरण आदि से रहित है ॥ १२१ ॥

मू० भूर्भुवः स्वस्तस्तारः सपिताप्रपितामहः । यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ १२२ ॥ १२२ ॥

टी० भूर्भुवः स्वस्तरुः महाप्रलय करके जगत् को रचनेवाला और तारने वाला है तारः अपने भक्तों को संसार सागर से तारने वाला है सपिता सब का पिता आप ही है प्रपितामहः सब का आजा है यज्ञो यज्ञ रूप है यज्ञपतिः यज्ञों का मालिक है यज्वा यज्ञ करने वाला है यज्ञाङ्गो यज्ञों का मालिक बाराह रूप है यज्ञवाहनः मुक्ति चाहने वालों को मुक्ति का देने वाला है ॥१२२॥१२२॥

ایکاتما ایک ہی آتما جسکی یعنی ذات واحد و محیط کل موجودات ہے جنم مرتیہ جراتگ جنم اور مرن سے رہت ہے یعنی پیدائش اور فنا سے مبرّی و علیحدہ ہے -

اشلوک ۱۲۲

بھوربھوہ سوستر ستارہ ستا پرپتامہ - یگیو یگیہ پتر یجوا یگیانگو یگیہ باہنہ -

ٹیکا ۱۲۲

بھوربھوہ سوسترہ مہاپرلے کرکے جگت رچنے والا ہے اور جگت کو تارنے والا ہے تارہ اپنے بھگتوں کو سنسار ساگر سے تارنیوالا ہے سپتا سب کا پتا ہی یعنی خالق جملہ مخلوقات کا ہے پرپتامہہ سب کا یعنی جد امجد ہے یگیو یگ روپ ہے یگیہ پتہ یگون کا مالک ہے یجوا یگیہ کرنیوالا ہے یگیانگو یگوں کا مالک باراہ روپ یگیہ باہنہ مکت چاہنے والونکو مکت دیتا ہے

अर्थात् सकल सृष्टि से उत्तम
है सत्पथाचार: श्रेष्ठ मा-
र्गों का आचारी है अर्थात् मनु
ष्यों को अच्छी राह पर चला-
ता है प्राणद: प्राण देने वा-
ला अर्थात् जीवों की उत्पत्ति
करने वाला है प्रणव: ओंकार
रूप है पण: व्यवहार करने
में सच्चा है ॥ १२० ॥ १२० ॥

मू॰ प्रमाणं प्राणनिलय:
प्राणभृत्प्राणजीवन:। त
त्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्म
मृत्युजरातिग: ॥१२१॥

टी॰ प्रमाणं सिद्ध प्रकाश ब्र-
ह्म का कहने वाला है प्राण
निलय: ज्ञान इन्द्रियों का
आसरा है प्राणभृत प्रा-
णों का प्रसन्न करने वाला है
और शक्ति देने वाला प्राण
जीवन: प्राणों का जिलाने-
वाला है तत्त्वं तत्त्व है, जिसका
नाश नहीं तत्त्वविद तत्त्व अ-
र्थात् आत्मा का जानने वाला है

یعنی تمام عالم سے فائق تر ہے ست
پتھاچارہ اچھے مارگوں کا آچاری ہے
یعنی آدمیوں کو طریقہ نیکوکاری پر چلانیوالا
ہے پران دہ پران دینے والا ہے یعنی
جانوں کو پیدا کرنیوالا ہے پرنوہ اونکار
روپ ہے پنہ بیوہار کرنے میں سچا ہے
یعنی بطریقہ راستی بیوہار رکھتا ہے

اشلوک ۱۲۱

پرمانگ پران نلیہ پران بھرت
پران جیونہ۔ تتونگ تتو
بدیکاتما جنم مرتیو جراتگہ۔

ٹیکا ۱۲۱

پرمانگ سدھ پرکاش گیان روپ برہم کا
کہنے والا ہے پران نلیو گیان اندریوں کا
آسرا ہے پران بھرت پرانوں کا پرسن
کرنیوالا ہے یعنی قوت دہندہ نفس آئندہ و
روندہ پران جیونہ پرانوں کا جلانے والا
ہے تتونگ تتو ہے اور جسکا ناش نہیں ہے
تتوبد آتما کا جاننے والا ہے یعنی
دانندہ خلاصہ عالم کا ہے

उत्पत्ति का आदि कारण है
जनजन्मादिः उत्पन्न हो-
ने वालों का जन्म देने वाला है
भीमो डरे हुवे हैं सब जिससे
भीमपराक्रमः डराने वा-
ले हैं पराक्रम जिसके राक्षसों
को अर्थात् उसकी शक्ति सा-
मर्थ्य से सब डरते हैं ॥ ११९ ॥

मू॰ आधारनिलयो
धाता पुष्पहासः प्र-
जागरः । ऊर्द्ध्वगस्स-
त्पथाचारः प्राणदः प्र-
णवः पणः ॥ १२० ॥

टी॰ आधारनिलयो पंच
महाभूतों का आसरा है अर्था-
त् सब संसार उसी से ठहरा है
धाता जिसका कोई उद्धार
करने वाला नहीं है पुष्प
हासः फूलों की तरह है हँ-
सी जिसकी अर्थात् फूल की
तरह हँसता है प्रजागरः
अज्ञान दूर हो गया है जिसका
ऊर्द्धगः संसार के रहने-
वालों से ऊँचा है स्थान जिसका

جن جناردہ پیدا ہونے والوں کو پیدا کرنے
والا ہے بھیمو ڈرتے ہیں سب جس سے
یعنی سبب دہشت دارین کا ہے بھیم
پراکرم ڈرانے والے ہیں پراکرم
جسکے راکھشسوں کو یعنی اسکی قوت قوی سے
سب خوف کھاتے ہیں ۔

اشلوک

۱۲۰

آدھار نلیو دھاتا پشپ ہاسہ
پرجاگرہ ۔ اوردھ گہ ست
پتھاچارہ پران دہ پرنوہ پنہ

ٹیکا

۱۲۰

آدھار نلیو پنچ مہا بھوتوں کا آسرا ہے
یعنی قائم و دارندۂ عالم ہے دھاتا جسکا
دوسرا آدھار کرنیوالا نہیں ہے پشپ
ہاسہ پھولوں کی طرح ہے ہنسی یعنی خندہ
جسکا پرجاگرہ اگیان دور
ہوگیا ہے جسکا یعنی بصورت عقل خاص
کے ہے اوردھ گہ سنسار کے
رہنے والوں سے اونچا ہے استھان جسکا

जिसका अर्थात् कोई उसको
पा नहीं सक्ता **विदिशो** हर-
एक को यथायोग्य फल देता
है **व्यादिशो** अनेक आज्ञा
को देने वाला है अर्थात् इन्द्र
ब्रह्मा आदि सब उसके आ-
ज्ञाकारी हैं **दिशः** कर्म्मफ-
ल का देने वाला है ॥ ११८ ॥

**मू॰ अनादिर्भूर्भुवो ल-
क्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः
जननो जनजन्मादिर्भी-
मोभीमपराक्रमः ॥ ११९ ॥**

टी॰ **अनादिः** जिसका आदि
कारण कोई नहीं है अर्थात् आ-
दि नहीं रखता है **भूर्भुवो** पृ-
थ्वी का आसरा अर्थात् सब
की उत्पत्ति का आदि कारण
है **लक्ष्मीः** धनवान् है **सु-
वीरो** सुन्दर है गति जिसकी
रुचिराङ्गदः सुहावन है
बिजायठ जिसका और यह
कि कुशलानन्द भूषण उसका
है **जननो** जीवों का पैदा क-
रने वाला है अर्थात् सृष्टि की

جسکا یعنی اُسکو کوئی پا نہیں سکتا بدِشو
ہر ایک کو موافق مرتبہ کے ثمرہ دیتا ہے
بیادِشو انیک آگیا کرنے والا ہی یعنی
اِندر اور برہما وغیرہ سب پر اُسکا حکم جاری
ہی دِشہ کرم پھل کا دینے والا ہی یعنی
دہندۂ نتائج اعمال ہی ۔

اشلوک

۱۱۹

**انادِر بھور بھوو لکشمی سُبیرو
رُچِرانگدہ - جننو جن جنمادِر
بھیمو بھیم پراکرمہ -**

ٹیکا

۱۱۹

اناوِہ جسکا آدکارن کوئی نہیں ہی یعنی
ابتدا نہیں رکھتا ہی بھور بھوو پرتھوی کا
آسرا یعنی سبب پیدائش سب کا ہی لکشمی
دھن وان ہی سُبیرو سُندر ہی گت جسکی
رُچِرانگدہ سُہاون ہیں بازوبند
اور یہ کہ خیریت دائمی زیور اُسکا ہی جننو
جیوونکا پیدا کرنے والا ہی یعنی وہ ذات
ہی کہ اول سبب پیدائش عالم کا ہی

नाम के स्मरण से मनुष्यों के पाप
दूर करता है **दुःस्वप्ननाशनः**
खोटे स्वप्न को नाश करने वाला है
वीरहा संसार बन्धन से छुड़ा
कर मुक्ति देता है **रक्षणः** रक्षा
करने वाला है **शान्तो** अच्छे
मार्ग में होने वाला भगवान्
रूप **जीवनः** सम्पूर्ण प्रजाको
जिलाने वाला है **पर्य्यवस्थि**
तः बाहर भीतर सब जगह
स्थित और व्यापक है ॥११८॥

मू॰ अनन्तरूपोनन्तश्री
र्जितमन्युर्भयापहः। च
तुरस्रो गम्भीरात्मा विदि
शो व्यादिशो दिशः॥११९॥

टी॰ **अनन्तरूपो** अनन्त
रूप हैं जिसके **अनन्तश्री** अनंत
है शोभा जिसकी **जितमन्युः**
जीता है क्रोध जिसने **भया**
पहः भय का दूर करने वाला
है **चतुरस्रो** जैसे कर्म्म हैं
वैसे ही फल देने वाला है **ग**
म्भीरात्मा अथाह है मन

نام لینے والون کے سب پاپ دور کرتا ہی
وہ **سُوپن ناشنہ** بُرے خواب کی تاثیر
کا دور کرنے والا ہی **بیرہا** سنسار کے بندھن
سے چھڑا کر مکت دیتا ہی **رکشنہ** رچھیا کرنے
والا ہی یعنی محافظ حقیقی وہی ہی **شانتو** اچھے
مارگ مین ہونیوالا ہی بھگوان روپ **جیونہ**
سبکا جلانیوالا ہی **پری وستھتہ**
اندر باہر تمام عالم مین محیط ہوکر قائم ہی —

اشلوک ۱۱۹

انت روپونت شری جت
منیور بھیاپہہ چترسرو گمبھیر اتما
ودشو بیاد شو دشہ —

ٹیکا ۱۱۹

انت روپو بے انتہا ہین روپ جسکے
انت شری بہت ہی شوبھا جسکے
یعنی قوت و قدرت بے انتہا رکھتا ہے
جت منیہ جیتا ہی کرودھ جسنے یعنی قوت
غضبیہ پر غالب ہی **بھیاپہہ** بھی کا دور کرنے
والا ہی **چترسرو** جیسے کرم ہین ویسے پھل
دینے والا ہی **گمبھیر اتما** اتھاہ ہے من

टी॰ अक्रूरः क्रूरतासे रहित है पेशलो अच्छा है मन बाणी शरीर कर्म्म जिस का दक्षो जल्दी करने वाला है दक्षिणः भक्तों को जल्दी फल देने वाला है क्षमिणाम्बरः क्षमावालों में श्रेष्ठ है विद्वत्तमो ज्ञानियों मे श्रेष्ठ उत्तम जानने वाला है वीतभयः जाता रहा है भय जिसका अर्थात जन्म मरण के भय से रहित है पुण्यश्रवणकीर्त्तनः पवित्र करने वाला है श्रवण और कीर्त्तन जिसका ॥११६॥

मू॰ उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः। वीरहा रक्षणः शांतो जीवनः पर्य्यवस्थितः॥ ११७ ॥

टी॰ उत्तारणो संसार सागर से भक्तों को पार उतारने वाला है दुष्कृतिहा पापों का दूर करने वाला है पुण्यो पुण्य रूप है अर्थात अपने

ٹیکا ۱۱۶

اکرورہ برائی سے رہت ہی پیشلو اچھا ہی من بانی کرم شریر جسکا دکشو جلدی کرنیوالا ہی دکشنہ بھکتوں کو جلدی پھل دینیوالا ہی چھمنا مبرہ چھما والوں میں سریشٹھ ہی بدوتمو گیانیوں میں سریشٹھ اور بڑا جاننے والا ہی بیت بھیہ جاتا رہا ہی خوف جسکا یعنی خوف پیدائش و مرن سے پاک ہی پنیہ شروَن کیرتنہ پوتر کرنیوالا ہی شروَن اور کیرتن جسکا -

اشلوک ۱۱۷

اُتارنو دشکرت ہا پنیو دہ سپنو
ناشنہ - بیرہا رکشنہ ستو
جیونہ پریوستھتہ -

ٹیکا ۱۱۷

اُتارنو سنسار ساگر سے بھکتوں کو پار اتارنیوالا ہی دشکرت ہا پاپوں کا دور کرنیوالا ہی پنیو پن روپ ہی یعنی اپنے

और यह कि शत्रुता मित्रता से
रहित हो उसको अरौद्र कहते हैं
कुण्डली शेषरूप है **चक्री**
सुदर्शन चक्र है जिसके हाथ में
अर्थात् जीव का तत्व उसके हा-
थ में है **विक्रमी** पराक्रमवा-
ला है **ऊर्ज्जितशासनः** बल-
वान् है आज्ञा जिसकी अर्थात्
वेद वचन उसीका कहा हुआ है
शब्दातिगः सम्पूर्ण शब्दों
को उल्लङ्घन करने वाला है अ-
र्थात् वचन से पहिचानने में नहीं
आता है **शब्दसहः** निर्गुण श-
ब्द कहने वाला है और शब्द
को संभारने वाला है अर्थात् सब
वेदों का तत्व वही है **शिशि-
रः** तीनों ताप का दूर करने वा-
ला है **शर्वरीकरः** माया र-
चने वाला है ॥११५॥ ११५॥

**मू० अक्रूरः पेशलो दक्षो
दक्षिणः क्षमिणांवरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्य-
श्रवणकीर्त्तनः ॥११६॥**

اور یہ کہ جسکو اندیشہ دوستی و دشمنی کا نہو
اسکو بھی ارودر کہتے ہیں **کنڈلی شیش**
روپ ہے **چکری** سدرشن چکر والا ہے یعنی
خلاصہ دلونکا اسکے ہاتھ میں ہے **بکرمی**
پراکرم والا ہے یعنی چالاک و تیز تر ہے
اورجت شاسنہ بلوان ہے آگیا
یعنی حکم جسکا یعنی احکام بید کہے ہوئے
اسی کے ہیں **شبد اتگہ** شبدون کو
نانگھنے والا ہے یعنی وہ ذات ایسی ہے
کہ سخن سے شناخت نہیں ہوتی ہے
شبد سہہ نرگن شبد کہنے والا اور
شبد کو سنبھالنے والا ہے یعنی سب بید
اسکو سب کا خلاصہ کہتے ہیں **ششرہ** تینون
تاپ کا دور کرنیوالا ہے **شروری کرہ**
مایا رچنے والا ہے یعنی اندیشہ و مہر و محبت
اولاد و فرزندان و زن و مال کا ہے ۔

اسلوک

اکرورہ پیشلو دکشو
دکشنا کشمنام ور
بدوتمو بیت بھیہ پنیہ
شروَن کیرتنہ ۔

टी॰ **अनन्तो** नहीं है अन्त जिसका **हुतभुग** भक्तों के पुण्य का भो- गी है **भोक्ता** योगों का भोगने वाला है **सुखदो** सुख देने वाला है **नैकदो** अनेक बार उत्पन्न होने वाला है अर्थात धर्म्म की र- क्षा के लिये बारम्बार अवतार ले- ता है **अग्रजः** सब से आगे पैदा होने वाला है अर्थात सब से पहिले है **अनिर्विण्णः** दोषरहित है अर्थात सब तरह का सुख रखता है और घमण्ड नहीं रखता है **स- दामर्षी** सदा संभारने वाला अ- र्थात भक्तों को सुख देता है **लोका- धिष्ठानं** लोकों का आश्रय अर्था- त तीनों लोक की रक्षा अपने साम- र्थ्य से करता है **अद्भुतम** अद्भुत आश्चर्य्य रूप है अर्थात तरह तर- ह के गुणों से युक्त है ॥ १२३ ॥

मू॰ **सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥ १२४ ॥ १२४ ॥**

ٹیکا

۱۱۳ اننتو نہیں ہے انت جسکا **ہت بہک** بھکتون کے پُن کا بھوگی ہے **بھوکتا** جوگون کا بھوگنے والا ہی **سکھدو** سکھ دینے والا ہی **نیک دو** انیک بار پیدا ہونیوالا ہی یعنی واسطے محافظت طریقہ نیکوکاری کے بارہا قالب اختیار کیا **اگرج** سب سے آگے پیدا ہونیوالا ہی یعنی سب سے اول ظہور اسکا ہی **انربنّاہ** دوش سے رہت ہی یعنی سب طرح کا سامان عیش رکھتا ہی اور غرور نہیں رکھتا ہی **سدامرکھی** سدا سمبھارنیوالا ہی یعنی بھکتونکو سب سکھ دیتا ہی **لوکادھشٹھان** لوگونکا آسرا یعنی تینون لوک کو بقوت اپنی محفوظ رکھتا ہی **ادبھتم** ادبھت روپ ہی یعنی انواع و اقسام کی صفتون سے موصوف ہی

اشلوک

۱۲۴ سناتسناتن تم کپلہ کپ ربیہ سوستدہ سوستکرت سوست سوستبھک سوستدکشنہ

मू॰ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः । रविर्विरोचनः सूर्य्यः सविता रविलोचनः ॥ ११२ ॥

टी॰ विहायसगतिः आकाश है गति जिसकी ज्योतिः स्वयंप्रकाश रूप है सुरुचिः सुंदर है शोभा जिसकी हुतभुग होम का भोजन करनेवाला है विभुः सब जगह व्यापक है रविः सूर्य्य रूप होकर जल को पीता है विरोचनः विशेषता करके शोभावान है सूर्य्यः आकाश पर चलता है अर्थात बड़ा वीर है सविता सब लोकों को अपने कर्मों में लगाता है और सब को उत्पन्न करता है रविलोचनः सूर्य्य है नेत्र जिसके अर्थात सूर्य्य चन्द्रमा उसके नेत्र के प्रकाश हैं ॥ ११२ ॥

मू॰ अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकदोऽग्रजः । अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतं ॥ ११३ ॥

اشلوک ۱۱۲

بہاے سگتہ جیوتہ سُرچہ ہت بھگ بِبھہ - رِبر وچنہ سورجہ سبتا رب لوچنہ -

ٹیکا ۱۱۲

بہاے سگتہ آکاش ہی گت جسکی یعنی فائق تر آسمان سے ہی جیوتہ از خود روشن ہی مثل شعاع سُرچہ سُندر ہی شوبھا جسکی یعنی ظہور اسکا نہایت زیبا ہی ہت بھگ ہوم کا بھوجن کرنیوالا ہی بِبھہ سب جگہ بیاپک ہی یعنی سب جگہ متصرف ہی اور رِب ہر شے عالم ہی رِبہ جل کو سورج ہو کر پیتا ہی برَوچنہ بہت ہی شوبھا والا ہی سورجہ آکاش پر چلتا ہی یعنی شجاعت کامل رکھتا ہی سبتا سبکو اپنے اپنے کرموں مین لگاتا ہی اور سبکو پیدا کرتا ہی رب لوچنہ سورج ہین نیتر جسکے یعنی سورج اور چندرمان اسکی آنکھین ہین -

اشلوک ۱۱۳ - اننتو ہت بھک بھوکتا سکھدو نیکدو اگرجہ - انربنا سدا مرکھی لوکا دھشٹھان مدبھتم -

मू· सत्ववान्सात्विकःस
त्यः सत्यधर्म्मपरायणः।
अभिप्रायःप्रियार्होर्हःप्रि
यकृत्प्रीतिबर्द्धनः॥१११॥

टी· सत्ववान् शूरवीर है सा-
त्विकः सत्यवती गुण रखता
है सत्यः ब्रह्म के जाननेवालों
में उत्तम है अर्थात् अच्छों से
अच्छा है सत्यधर्म्मपराय-
णः सत्य और धर्म्म का आश्र-
य है अभिप्रायः परस्वार्थकी
कांक्षा है जिसके प्रियार्होर्हः
पूजनेयोग्य है और प्यारी वस्तु
देनेवाला है अर्थात् सबकीका-
मना पूरी करनेवाला है और अ-
बिनाशी है प्रियकृत् भक्तों
को प्यार करनेवाला है अर्थात्
जो कोई उसकी पूजा करता है
उसको वह प्रिय रखता है प्री-
तिबर्द्धनः प्रीति का बढ़ा-
ने वाला है अर्थात् अपने
भक्तों से प्रीति बढ़ाता-
है ॥ १११॥

اشلوک

ستوان ساتوک ستیہ ستیہ
دھرم پراینہ۔ ابھپرایہ پریارْ
ہوتہہ پریہ کرت پریت بردھنہ

ٹیکا

ستوان ستو یعنی شجاع کامل ہے
ساتوکہ ستوگنی ہے یعنی نہایت
نیک ہے ستیہ برھم کے جاننے والون
مین اتم ہے یعنی نیکون سے بھی نیک ہے
ستیہ دھرم پراینہ ست اور دھرم
کا آشرے یعنی پناہ ہے ابھپرایہ پرآیا
سوارتھ کر نیکی کامنا ہے جسکو پریارہوتہہ
پوجنے کے لائق ہے اور پیاری چیزونکا دینے
والا ہے یعنی سبکی کامنا پوری کرتا ہے اور
لازوال ہے پریہ کرت بھگتون کو
پیار کرنیوالا ہے یعنی جو کوئی اسکی پرستش
کرتا ہے اسکو دوست رکھتا ہے پریت
بردھنہ پریت کا بڑھانے والا ہے یعنی
جو کوئی اسکی بھگت یا پوجن کرتا ہے تو وہ اسکے
دل مین محبت و اعتقاد زیادہ کرتا ہے۔

और यह कि पवन उसकी आ-
ज्ञा मे चलता है ॥१०६॥१०६॥

मू॰ धनुर्द्धरो धनुर्वेदो द-
ण्डो दमयिता दमः। अप
राजितः सर्व्वसहो नियंता
नियमो यमः ॥११०॥

टी॰ धनुर्द्धरो धनुषधारी रा-
मचन्द्र धनुर्वेदो बाणविद्या
जानने वाला है दण्डो खोटे मा-
र्ग से हटाने वाला और अच्छे
मार्ग में लगाने वाला है दम-
यिता धर्म्मराज होकर जीवों
को दण्ड देता है दमः कुमार्गि-
यों को अच्छे मार्ग में लगाने वा-
ला है अपराजितः सब कि-
सी को जीते हुवे है अर्थात शत्रु
उसपर प्रबल नहीं हो सक्ता है
सर्व्वसहो सब कुछ स-
हने वाला है नियंता ब्रह्मा-
दिकों को सृष्टि रचने में लगाने वा-
ला है नियमो यमः जिसका
कोई सिक्षा देने वाला नहीं है
और जिसके मृत्यु नहीं है ॥१११॥

اور نیز یہ کہ ہوا اُسکے خوف سے رواں ہی۔

اشلوک

۱۱۰

دھنُر دھرو دھنُر بیدو ونڈو
دمیتا دمہ۔ اپراجتہ سرب
سہو نینتا نیمو یمہ۔

ٹیکا

۱۱۰

دھنُر دھرو دھنکھ دھاری ہی یعنی شری
رام چندر دھنُر بیدو علم تیر اندازی کا
عالم ہی ڈنڈو کھوٹی راہ سے ہٹانیوالا
اور اچھی راہ پر لگانیوالا ہی دمیتا
دھرم راج رُوپ ہی یعنی بصورت
ملک الموت ہوکر خلائق کو سزا سے اعمال
دیتا ہی دمہ کُمارگیوں کو سُمارگ مین
لگانے والا ہی اپراجتہ سبکو جیتے ہوئے
ہی کوئی اُسپر غالب نہین سرب سہو
سب کچھ سہنے والا ہے نینتا برہما
وغیرہ کو سرشٹ کے رچنے مین لگانے
والا ہے نیمو یمہ جسکا کوئی سکھانیوالا
نہین اور جسکے موت نہین ہے۔

वर्द्धनः जगत् का बढ़ानेवाला है ॥ १०८ ॥ १०८ ॥ १०८ ॥

मू॰ भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्व्वकामदः। आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ १०९ ॥

टी॰ भारभृत् पृथ्वी का भार धारण करने वाला है कथितो श्रेष्ठ है योगी जीव को ब्रह्म प्राप्त हो जिस करके ऐसा योगवाला है योगीशः योगियों का मालिक है सर्व्वकामदः सब कामना देने वाला है आश्रमः सुख देने वाला है श्रमणः जन्म मरण करके जीवों को भरमाता है अर्थात् बुद्धिमानों को भोग्य देता है क्षामः सब कामना को अन्त काल में दूर कर देता है और अति पवित्र है सुपर्णो अच्छे वेद रूपी पत्नी अर्थात् संसार वृक्ष रूपी श्रीवेद पत्नी रूप है वायुवाहनः प्राणों का धारण करने वाला है

بردھنہ جگت کا بڑھانیوالا ہی —

اشلوک

١٠٩

بھار بھرت کتھتو جوگی جوگیشہ

سرب کام دہ - آشرمہ شرمنہ

چھامہ سپرنو بایو باہنہ -

ٹیکا

١٠٩

بھار بھرت پرتھوی کا بوجھ دھارن کرنیوالا ہی کتھتو سریشٹھ یعنی اچھا ہے جوگی جس جوگ سے جیو کو برہم پراپت ہو ایسے جوگ والا ہی جوگیشہ جوگیوں کا مالک ہی سرب کام دہ سب کامنا کا دینے والا ہی آشرمہ سکھ کا دینے والا ہے شرمنہ جنم مرن کرکے جیوونکو بھرماتا ہی یعنی تقدیر دہندہ عاقلان ہی چھامہ سب کامنا انت کال میں دور کر دیتا ہی اور نہایت لطیف و پاک ہی سپرنو اچھے بید روپی ہے پتی جسکی یعنی عالم صورت درخت ہی اور بید صورت پرند ہے بایو باہنہ پران کا دھارن کرنے والا ہے

हैं अर्थात् सूर्य चन्द्रमा आदि
सात नक्षत्र **सप्तवाहनः** सा-
त हैं घोड़े जिसके अर्थात् सात
दिन जो हैं वही उसके सात घोड़े
हैं और सूर्य के रथ में जो घोड़ा है
उसके सात मुख हैं **अमूर्त्तिः**
चराचर भोजन करके रहित है अ-
र्थात् कुछ भोजन नहीं करता व-
ह ऐसा है कि इन्द्रियों से परे और
निरूप है **अनघो** पाप दोष से
रहित है **अचिन्त्यो** चिन्ता करने
योग्य नहीं है अर्थात् ध्यान में न-
हीं आता है **भयकृत्** कुकर्मि-
यों को नरक का भय देनेवाला है
भयनाशनः भक्तों का भय
दूर करनेवाला है ॥ १०७ ॥

मू॰ अणुर्वृहत्कृशः
स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो
महान । अधृतः स्वधृ-
तः स्वास्यः प्राग्वंशो वं-
शवर्द्धनः ॥ १०८ ॥

टी॰ **अणुः** पाप दोष से रहित है
अर्थात् ऐसा है कि उसका कोई

یعنی سات ستارے سپت باہنہ
سات ہین گھوڑے جسکے یعنی سات دن
جو ہین وہ اسکے گھوڑے ہین اور سورج کی
سواری مین جو گھوڑا ہے اسکے سات منہہ
ہین اموُرتہ چراچر بھوجن سے رہت
ہے یعنی کچھ بھوجن نہین کرتا ہے یہ وہ ذات کہ
محسوس نہین ہے اور صورت نہین رکھتا
انگھو پاپ دوش سے رہت ہے یعنی بے
عیب و بے علت ہے اچنتیہ چنتا کرنیکے
جوگ نہین یعنی بیچ تصور دل کے نہین آتا ہے
بھی کرت بدکارونکو نرک کا خوف دینے
والا ہے بھی ناشنہ دھرماتما لوگون کا خوف
دور کرنے والا ہے۔

اشلوک ۱۰۸

انر برہت کرشہ استھولوگن بھر
نرگنو مہان - ادھرت سودھرتہ
سواسیہ پراگ بنشو بنش بردھنہ

ٹیکا ۱۰۸

انُہ پاپ دوش سے رہت ہے یعنی وہ ایسا ہے
کہ بجز اندیشہ دل کے اسکو کوئی

सुन्दर है संकल्प जिसका **सिद्धः** सिद्ध पुरुष है **शत्रुजित्** शत्रुओं को जीतने वाला अर्थात मारने वाला है **शत्रुतापनः** शत्रुवों को दण्ड देने वाला है **न्यग्रोधो** सब के ऊपर प्रीति करनेवाला और भुलाने वाला भी है **दुम्बरो** आकाश से अधिक निर्मल और संसार की उत्पत्ति का कारण है **अश्वत्थः** जगत रूप है अर्थात वह ऐसा है कि जड़ ऊपर और पालव नीचे **चाणूरान्ध्रनिषूदनः** चाणूर और अन्ध्रजात राक्षसों को नाश करने वाला है ॥ १०६ ॥ १०६ ॥

मू॰ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्त्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ १०७ ॥

टी॰ **सहस्रार्चिः** अनन्त हैं किरण जिसके **सप्तजिह्वः** सात हैं जिव्हा जिसके अर्थात सातो द्वीप की अलग स्वामी हैं **सप्तैधा** सात तरह के प्रकाश अग्नि रूप

ستسنکلپ ہیں سنکلپ جسکے سدّھہ سدّھ پُرش یعنی ذات کامل ہی شترجت دشمنونکو مارنے والا ہی شترتاپنہ دشمنونکو عذاب دینے والا ہی نگرودھو سبسے پریت کرنیوالا ہی اور پردۂ غفلت بھی ڈالنیوالا ہی دمبرو آکاش سے بھی اچھا نرمل ہی اور سبب پیدایش عالم کا ہی اشوتھہ جگت روپ ہی یعنی وہ ایسا درخت ہی کہ جسکی جڑ اوپر اور شاخ نیچے ہے چانور آندھر نشودنہ چانور اور اندھرت ذات راچھسون کو نیست و نابود کرنے والا ہے

اشلوک

۱۰۷

سہسرارچہ سپت جہو سپت
ودھا سپت باہنہ - امورت
رنگھو چنتو بھی کرد بھی ناشنہ -

ٹیکا

۱۰۷

سہسرارچہ انت ہیں کرن جس کے سپت جہو سات ہیں زبان جسکے یعنی ساتو دیپون کی الگ الگ بولی ہی سپت ودھا سات ہیں پرکاش اگن روپ

मू. सुवर्णबिन्दु रक्षोभ्यः सर्व्ववागीश्वरेश्वरः। महाह्रदो महागर्त्तो महाभूतो महानिधिः॥२०४॥

टी. सुवर्णबिन्दु ओंकारस्वरूप है और यजुर्वेद में लिखा है कि सब अङ्ग सुवर्ण रंग के हैं रक्षोभ्यः राग और द्वेष वालों से विकार को प्राप्त नहीं होता अर्थात् शत्रु मित्र किसी से उसको भय नहीं है अपनी जगह पर स्थित है सर्व्ववागीश्वरेश्वरः सब ब्रह्मादिकों का ईश्वर है महाह्रदो बे अन्त है महागर्त्तो ज्ञान बिना नहीं प्राप्त होता है महाभूतो बड़ा ऐश्वर्य्यवाला है महानिधिः बड़ा खजाना ब्रह्मानन्द का है॥२०४॥

मू. कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनलः। अमृताशोऽमृतवपुः सर्व्वज्ञः सर्व्वतोमुखः॥ २०५ ॥

टी. कुमुदः पृथ्वी में आनन्द को

اشلوک

۱۰۴

سورن بندر کشوبھیہ سرب باگیشو اِشورہ - مہاہردو مہاگرتو مہا بھوتو مہانِدھہ -

۱۰۴

ٹیکا - سورن بند اونکار روپ ہی اور یجر بید مین لکھا ہی کہ تمام بدن مانند طلاء کے ہی رکشوبھیہ راگ اور دویش والون سے کچھ اُسکو نقصان نہین پہنچتا یعنی دوستی و دشمنی و اندیشہ و وسواس شیطانی سی اپنی جگہہ نہین جاتا ہمیشہ برقرار رہتا ہی سرب باگیشو اِشورہ سب جیسا کلاان برہما وغیرہ کا مالک ہی مہاہردو بے انت ہی مہاگرتو بغیر گیان کے نہین پراپت ہوتا ہے مہابھوتو بڑا ایشوریج والا ہی مہانِدھہ بڑا خزانہ ہی گیان اور آنند کا -

اشلوک

۱۰۵

کمدہ کندرہ کندہ پرجنیہ پاونو اَنلہ امرتاشو مرت بپہ سرنگیہ سرتومکھہ -

۱۰۵

ٹیکا

کمدہ پرتھوی یعنی زمین مین آنند کو

रत्ननाभः सुलोचनः। अर्कोवाजसनः शृङ्गी जयंतः सर्व्वविज्जयी ॥१०३॥

टी॰ उद्भवः जन्म रहित और जगत् का जन्म करने वाला है सुन्दरः मङ्गल का मङ्गल और भाग्यवान् है सुन्दो दया करने वाला और गुणवान् है रत्ननाभः अच्छी है नाभि जिसकी अर्थात् लाल के सदृश प्रकाशित है सुलोचनः सुन्दर है नेत्र जिसके अर्कः ब्रह्मादिकों से पूजित है सब देवता उसको पूजते हैं वाजसनः अन्न का देने वाला है अर्थात् सब प्रकार के अच्छे अच्छे भोजन देता है शृङ्गी मत्स्य रूप भगवान् है अर्थात् प्रलय काल में मत्स्य रूप होकर जल में वास करता है जयंतः बेअन्त वीरों को जीता है जिसने अर्थात् कोई शत्रु उसपर बल नहीं कर सक्ता है सर्व्वविज्जयी सब को जीतने वाला और जानने वाला है १०३

رتن نابھہ سلوچنہ ۔ آرکو
باجسنہ شرنگی جینتہ سرب بجّی ۔

ٹیکا

۱۰۳

ادبھوہ آپ جنم رہت ہی اور جگت کا جنم کرنیوالا ہی سندرہ منگلون کا منگل اور صاحب اقبال ہی سندو دیا کرنیوالا اور مجمع فضائل ہی رتن نابھہ اچھی ہی ناف جسکی یعنی مانند لعل کے روشن و درخشان ہی سلوچنہ سندر ہین نیتر جسکے یعنی چشم زیبا رکھتا ہی ارکو برہمادکون سے پوجت ہی یعنی سب دیوتا اسکو پوجتے ہین باجسنہ ان کا دینے والا ہی یعنی سبکو رزق بخشتا ہی شرنگی مچھ روپ بھگوان یعنی قیامت مین بصورت نہنگ بالاے آب قرار پاتا ہی جینتہ بے انتہا دلاورونکو جیتا ہی جسنے یعنی سب دشمن اس سے مغلوب ہین سرب بجّی سب کا جیتنے والا اور سب کا جاننے والا ہے ۔

दुर्गो दुःख करके प्राप्त होता
है अर्थात् योगी जनों के हृद-
य में कठिनता से आता है दु
राबासो दुःख करके योगी
जन उस को हृदय में लाते हैं
दुरारिहा दुष्टों और दानवों
का मारने वाला है ॥ १०१ ॥

मू॰ शुभाङ्गो लोकसारङ्गः
सुतन्तुस्तन्तुवर्द्धनः । इन्द्र
कर्म्मा महाकर्म्मा कृतक-
र्म्मा कृतागमः ॥ १०२ ॥

टी॰ शुभाङ्गो सुन्दर है अङ्ग
जिसका लोकसारङ्गः भँवर
होकर भक्त जनों की सुगन्धि ले-
ने वाला है सुतन्तुः अच्छा है वि-
स्तार करने वाला जगत् का तन्-
तुवर्द्धनः जगत् का बढ़ाने वा-
ला है इन्द्रकर्म्मा प्रतापवाला
है महाकर्म्मा बड़े हैं कर्म्म जि-
सके कृतकर्म्मा किया है धर्म्म
रूप कर्म्म जिसने कृतागमः
रचा है वेद जिसने ॥ १०२ ॥

मू॰ उद्भवः सुन्दरः सुन्दो

دُرگَو مُشکل سے ملتا ہی یعنی جوگی لوگ بصد
دُشواری تصور اُسکا کرسکے دل میں جگہ دیتے
ہیں دُرآباسو بڑی مشکل سے جوگی لوگ
اُسکو اپنے ہردے میں لاسکتے ہیں دُراریہا
دُشٹوں اور دانوؤں کا مارنیوالا ہی -

اشلوک ۱۰۲

شُبھانگو لوک سارنگہ سُتنتس
تنتُ بردھنہ - اِندر کرما مہاکرما
کرت کرما کرتاگمہ -

ٹیکا ۱۰۲

شُبھانگو سُندر ہی انگ جسکا لوک
سارنگہ بھونرا ہوکر بھگت جنوں کی سگندھ
لیتا ہی سُتنتُس اچھا ہی اوبستار کرنیوالا
جگت کا ہی تنتُ بردھنہ جگت کا
بڑھانیوالا ہی اِندر کرما پرتاپ والا
ہی مہاکرما بڑے ہیں کرم جسکے کرت
کرما کیا ہی دھرم روپی کرم جسنے کرتاگمہ
بیدکو رچا ہی جسنے یعنی پیدا کیا ہی -

اشلوک ۱۰۳

اُدبھوہ سُندرو سُندو

جسنے کہا وہ دھرم ارتھ کام موکش کا
پیدا کرنیوالا ہے یعنی نیکوکاری و دولت و
مراد و رستگاری اُس سے حاصل ہوتی ہے
چتر بید بِد چاروں بیدوں کا جاننے والا ہے
ایک پات سب پرانی ایک حصہ ہیں اور
کچھ ہے تین حصہ یعنی ایک قدم رکھتا ہے

اشلوک ١٠١

سماورتو نورتاتما درجیو درتکرمہ
درلبھو درگمو درگو دراواسو درارہا

ٹیکا ١٠١

سماورتو اگیانیوں کو جنم مرن دینے والا ہے
نورتاتما بشے بھوگ سے ہٹا ہوا ہے من جسکا
یہ وہ ذات ہے کہ جسکو لذت کی خواہش نہیں
ہے درجیو دکھ سے بھگت لوگ اسکو پاتے
ہیں اور کوئی اس پر غالب نہیں ہے درتکرمہ
دکھ سے [illegible] پایا جاتا یعنی مشکل ہے یعنی
عقل و تدبیر بھی اس تک نہیں پہنچ سکتی ہے
درلبھو دکھ سے بھگتوں کو ملتا ہے یعنی جب
عبادت و ریاضت بسیار کے یا نہایت کوشش اور ریاضت
اسکی ذات تک [illegible] پہنچتے ہیں [illegible]
درگمو مشکل سے جاننے میں آتا ہے

चतुर्भावः धर्म अर्थ काम मो-
क्ष का उत्पन्न करने वाला है चतु-
र्वेदवित् चारों वेद का जानने वा-
ला है एकपात् सब प्राणी एक
हिस्सा हैं और कुछ है तीन हिस्सा
अर्थात् एक चरण रखता है ॥२००॥

मू॰ समावर्तोऽनिवृत्ता-
त्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरा-
वासो दुरारिहा ॥२०१॥

टी॰ समावर्तो अज्ञानियों को
जन्म मरण देने वाला है निवृ-
त्तात्मा विषयभोग से हटा हु-
आ है मन जिसका दुर्जयो
दुःख करके जीता जाय भक्तों
को अर्थात् कोई उस पर प्रबल
नहीं हो सक्ता है दुरतिक्रमः
दुःख करके आलिङ्गन नहीं हो
सक्ता अर्थात् बुद्धि का भी पहुँच
ना कठिन है दुर्लभो दुःख कर
के भक्तों को मिलता है अर्थात्
घोर तपस्या करके उसतक मनु
ष्य पहुँचता है दुर्गमो दुः-
ख करके जानने में आता है

को कहते हैं ॥९८॥९९॥

मू॰ चतुर्मूर्त्तिश्चतुर्बाहु
श्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्माचतुर्भावश्चतु
र्वेदविदेकपात् ॥१००॥

टी॰ चतुर्मूर्त्तिः चार हैं मूर्त्ति
जिसकी बिराट रूप हिरण्यग-
र्भ रूप माया युक्त रूप माया र-
हित रूप चतुर्बाहुः चार हैं भु-
जा जिसके शङ्ख चक्र गदा पद्म
चतुर्व्यूहः चार हैं व्यूह अ-
र्थात् पुरुष यथा श्रीकृष्ण बलदे-
व प्रद्युम्न अनिरुद्ध और भी प्रथ-
म शरीर पुरुष दूसरे छंद पुरुष अ-
र्थात् शास्त्र तीसरे वेद पुरुष चौथे
महापुरुष अर्थात् ब्रह्मा चतुर्ग-
तिः चारो आश्रमों को फल देनेवा-
ला है चतुरात्मा अच्छा है आत्मा
जिसका और ऐसा है कि शत्रुता मित्र-
ता लोभ अचेतपन से रहित है और
चित्त चेत ज्ञान आनन्द से युक्त है

اشلوک

۱۰۰

چتر مورتش چتر باہش چتر
بیوہش چتر گتہ چتر اتما چتر
بھاوش چتر بید بدیک پات

ٹیکا

۱۰۰

چتر مورتہ چار ہیں مورت جسکے یعنی
براٹ ہرنیہ گربھ مایا سہت مایا رہت
اول صورت کل عالم دوم صورت بید سوم
صورت دنیا یعنی کچھ عمل رکھتا ہی چہارم
لاہوت چتر باہُہ چار ہیں بھجا جسکے
سنکھ چکر گدا پدم چتر بیوہہ چار ہیں
بیوہ یعنی پرش سری کرشن بلدیو پردمن
انردھ اول شریر پرش دوم چھند پرش
یعنی شاستر سوم بید پرش چہارم مہا پرش
یعنی برہما چتر گتہ چاروں آشرم کو پھل
دینے والا ہی چتر اتما اچھا ہی اتما جسکا
یعنی یہ وہ ذات ہی کہ چاروں صفتوں یعنی
دوستی و دشمنی و طمع و غفلت سے پاک ہے
اور چار قوت رکھتا ہی دل و عقل و خودی و اندیشہ

करने वाला है ॥ ९६ ॥

मू॰ सुवर्णवर्णो हेमाङ्गोव-
राङ्गश्चन्दनाङ्गदी । वीर
हा विषमः शून्यो घृताशी
रचलश्चलः ॥ ९७ ॥

टी॰ सुवर्णवर्णो सुवर्ण का ऐ-
सा रङ्ग है अर्थात ज्योतिस्वरू
प है हेमाङ्गो सुवर्ण का ऐसा रं
ग है जिसका वराङ्गः श्रेष्ठ है
अङ्ग जिसका चन्दनाङ्गदी
आनन्द देने वाला है बिजायठ
जिसका वीरहा हिरण्यकश्य-
प ऐसे शूरवीरों का मारने वाला
है विषमः जिसके बराबर
कोई नहीं है शून्यो अच्छों से
अच्छा है और शरीर नहीं रखता है घृ-
ताशीः किसी का आसरा नहीं
रखता है अचलः ज्ञान से न-
हीं चला हुआ है अर्थात कोई रू-
प उसके नहीं है चलः वायु
रूप होकर चलता है ॥ ९७ ॥

کرنے والا ہے —

اشلوک

۹۷

سبرن برنو ہیمانگو برانگش
چندنانگدی - بیرہا بکھمہ
شُنیو دھرتاشیر چلش چلہ -

ٹیکا

۹۷

سبرن برنو سونے کا ایسا رنگ ہی جسکا
یعنی جوت سروپ ہی ہیمانگو سونے کا ایسا
اچھا انگ ہی جسکا برانگہ سریشٹھ ہی انگ جسکا
چندنانگدی آنند دینے والا ہی بازوبند
جسکا بیرہا ہرنیکشیپ ایسے سوربیرون کو
مارنیوالا ہی بکھمہ طاق و واحد ہی یعنی اسکے
برابر کوئی نہین ہی شُنیو اچھون سے
بھی اچھا ہی یعنی صفت والون سے بھی بہتر
ہی اور مانند ہوا کے جسم نہین رکھتا ہی
دھرتاشی آسا رہت ہی یعنی کسی سے
کسی بات کی امید نہین رکھتا ہی اچلہ اچل
یعنی قائم و لازوال و مستقل و بے خوف ہی
چلہ بایو روپ ہوکر چلتا ہی یعنی بصورت
باد ہوکر روان ہوتا ہی —

आनन्द का देनेवाला है और आ-
नन्दरूप है दुर्द्धरो तथा दुःख क-
रके धारण करते हैं योगी जिस को
अर्थात बड़े परिश्रम से प्राप्त होता
है अपराजितः किसी से जीता
नहीं जाता अर्थात गुप्त प्रकट
किसी से नहीं हारता ॥ ९४ ॥

मू॰ विश्वमूर्त्तिर्महामूर्त्ति
र्दीप्तमूर्त्तिरमूर्त्तिमान्। अ-
नेकमूर्त्तिरव्यक्तः शतमू-
र्त्तिः शताननः ॥ ९५ ॥

टी॰ विश्वमूर्त्तिः चराचर है मू-
र्त्ति जिसकी अर्थात सब सृष्टि उस
की मूर्त्ति है और वह सब का प्राण है
महामूर्त्तिः प्रमाणरहित है मूर्त्ति
जिसकी अर्थात प्रकाश रूप होक-
र संसार में प्रकट हुआ है दीप्तमू-
र्त्तिः ज्ञानमूर्त्ति है अर्थात मनोहर
रूप है अमूर्त्तिमान मूर्त्ति रहि-
त है अर्थात देह नहीं रखता है
अनेकमूर्त्तिः भक्तों की अनुग्र-
ह के वास्ते अनेक हैं मूर्त्ति उस की
अर्थात सृष्टि की रक्षा के वास्ते अ-
वतार धारण करता है अव्यक्तः

آنند کا دینے والا ہی ورتھو آنند روپ ہے
دُردھر وتتھا دکھ سے سادھن کرتے
ہیں جوگی جسکو یعنی بمحنت و بدقت تمام حاصل
ہوتا ہی اپراجت کام کرودھ وغیرہ کوئی
دشمن اسکو جیت نہیں سکتا ہی یعنی ظاہر
و باطن میں کسی سے مغلوب نہیں ہوتا ہی

اشلوک ۹۵

بشومورترمہامورتردیپت مورت
مورت مان - انیک مورت
ربکتہ شت مورت شتانن -

ٹیکا ۹۵

بشومورتہ چراچر ہی مورت جسکی یعنی تمام عالم
اسکی صورت ہی اور وہ جان ہی مہا مورتہ
پرمان رہت ہی مورت جسکی یعنی بصورت روشنی کے
تمام عالم میں پیدا ہی دیپت مورتہ گیان
مورت ہی یعنی بصورت خوب و دلکش ہے
امورت مان کوئی صورت نہیں رکھتا ہے
انیک مورت بھگتون کی بھلائی کیواسطے
بہت ہین مورت اسکی یعنے واسطے محافظت
خلائق کے اوتار دھارن کرتا ہی اسکتہ

ऐश्वर्य जिसका और सृष्टिरूप
होकर प्रकट होता है सत्य-
परायणः सत्पुरुषों का स्था-
न है शूरसेनो शूरवीर है से-
ना जिसकी हनुमंतादि यदु-
श्रेष्ठः यादवों में श्रेष्ठ है स-
न्निवासः सत्पुरुषों का आ-
सरा है सुयामुनः अच्छे हैं
श्री राम और श्री कृष्ण जिनको
गोप प्यारे हैं अर्थात् जिसके ब-
न्धुलोग अच्छे हों और ग्वाल
जिसके साथ हों ॥ ९३। ९३॥

मू॰ भूतावासो वासुदेवः
सर्वासुनिलयोनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरो
ऽथापराजितः ॥ ९४ ॥

टी॰ भूतावासो प्राणियों का स्था-
न है वासुदेवः सब जगत् को
ढकनेवाला है और प्रकाशक है
सर्वासुनिलयो सब प्रा-
णियों का आसरा है अनलः पू-
र्ण शक्ति रखता है दर्पहा गर्व
का दूर करनेवाला है दर्पदो

ایشورج جسکا یہ وہ ذات ہی کہ بصورت
عالم کے ظہور کرتا ہی ست پرائینہ سچے
لوگونکا آسرا ہی یعنی مقام سالکان راہ وحدت
شورسینو بہادر ہی فوج جسکی مثل ہنومان وغیرہ
یدوشریشٹھ یادوون مین بزرگ تر ہے
سن نواسہ اچھے لوگون کا آسرا یعنی
پناہ ہی سیامنہ اچھے ہین شری رام چندر
اور شری کرشن مہاراج جنکو گوپ پیارے ہین
یعنی جسکے وابستگان اچھے ہین گوال ہمراہ ہین -

اشلوک ۹۴

بھوتاواسو واسدیوہ سرواسنلیو
نلہ - درپہا درپدو درپتو
دردھرو تھاپراجتہ -

ٹیکا ۹۴

بھوتاواسو سب جانداروں کا مقام ہے
واسدیوہ تمام عالم کا دیکھنے والا اور پرکاش
کرنیوالا ہی سرواسنلیو سب پرانیونکا آسرا ہے
یعنی تمام عالم کی امیدگاہ ہی نلہ قدرت کامل
رکھتا ہی درپہا گرب کا دور کرنیوالا ہی یعنی جو
مخالف راہ حق ہین انکا غرور کھو دیتا ہی درپدو

استوترم ہی یعنی جس سے استت کرین
استتہ گن والا ہی استوتا بھیکھم آد
روپ ہوکر استت کرنیوالا ہی رن پریہ
جدھ ہی پیارا جسکو یعنی بھگتکو دیت رکھتا
ہی اور سدرشن چکر واسطے محافظت خلق کے رکھتا
ہی پورنہ پورن ہی یعنی سب قدرت اور
سب آرزو اسکو حاصل ہین پورئیتا بھگتون
کی سب کامنا پوری کرتا ہی یعنی سب قدرت
وآرزو آدمیونکو عطا کرتا ہی پنیہ پوتر
روپ ہی یعنی اپنی یاد کرنیوالونکی سب
گناہ معاف کردیتا ہی پنیہ کیرت
پوتر ہی کیرت جسکی یعنی سب اوصاف جسکے
بزرگ ہین انامیہ بیوادرہت ہی یعنی
امراض ظاہری و باطنی نہین رکھتا ہی ۔

اشلوک ۹۲

منوجوس تیرتھ کرو بس
ریتا بس پردہ ۔ بس پردو
باسدیو وبسر بس مناہوی ۔

ٹیکا ۹۲

منوج وہ من کیطرح ہی بیگ جسکا یعنی

स्तोत्रं जिस करके स्तुति करें
स्तुतिः गुण वाला है स्तोता
भीष्म आदि रूप होकर स्तुति
करने वाला है रणप्रियः युद्ध
है प्यारा जिसको अर्थात् भक्तों
की रक्षा के वास्ते सुदर्शन चक्र
रखता है पूर्णः सब तरह से पू-
र्ण है पूरयिता भक्तों की का-
मना पूर्ण करने वाला है अ-
र्थात् सब सामर्थ्य और मनो-
र्थ मनुष्यों को देता है पुण्यः
पवित्र रूप है अर्थात् अपने
नाम स्मरण से मनुष्यों के पापों
को शुद्ध करता है पुण्यकी-
र्त्तिः सब कीर्ति उसकी पवित्र
हैं अनामयः विकार रहित
है अर्थात् किसी तरह का रोग
दोष नहीं रखता है ॥९१॥

मू॰ मनोजवस्तीर्थकरो व-
सुरेता वसुप्रदः। वसुप्र-
दो वासुदेवो वसुर्वसुम-
ना हविः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

टी॰ मनोजवः मन की
तरह है वेग जिसका अर्थात्

अर्थात् वामन रूप महाकर्मा बड़ा है कर्म्म जिसका अर्थात् त्रि प्रमाण सृष्टि का रचना उसी का कर्म है महातेजा बड़ा है तेज जिसका अर्थात् सब तरह की बड़ी योग्यता रखता है महोरगः वासुकि नाग अर्थात् सब सांपों में बड़ा है महाक्रतुः अश्वमेध यज्ञ रूप है महायज्वा बड़ी यज्ञ करने वाला है अर्थात् जप तप में सब से बड़ी यज्ञ है महायज्ञो जप यज्ञ रूप है महाहविः सम्पूर्ण जगत् स्थूल सूक्ष्म होकर लीन करदे महा का अर्थ बड़ा है और हवि का अर्थ हवन है ॥ ८० ॥

मू॰ स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः। पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्त्तिरनामयः॥ ८१ ॥

टी॰ स्तव्यः स्तुति करने योग्य है अर्थात् उसकी स्तुति सब करते हैं वह किसी की स्तुति नहीं करता स्तवप्रियः स्तुति है प्यारी जिसको

کرم مراد قدم اور باون روپ سے ہے مہاکرما بڑا ہے کرم جسکا یعنی پیدا آفرینش عالم کی کرنا اسی کا کام ہے مہاتیجو بڑا ہے تیج جسکا یعنی سب فضیلت بدرجۂ اتم رکھتا ہے مہورگہ باسک ناگ ہے یعنی سب سانپوں میں بڑا ہے مہاکرتو اشومیدہ جگ روپ ہے مہایجوا بڑی جگ کرنے والا ہے یعنی جپ تپ میں سب سے بڑی جگ ہے مہایگیو جپ جگ روپ ہے مہاہب سب جگت استھول اور سوکشم جسمیں مل جاتا ہے مہا کے معنی بزرگ کے ہیں اور ہب کے معنی ہوم کے ہیں

۹۱

اشلوک

استبیہ استوپریہ استوترنگ استتہ استوتارن پریہ - پورنہ پورئیتا پنیہ پن کیرت رنامیہ -

ٹیکا

۹۱

استبیہ استت کرنیکی لائق ہے یعنی وہ ذات ہے کہ اسکی صفت سب کرتے ہیں وہ کسیکی صفت نہیں کرتا ہے استوپریہ استت ہے پیاری جسکو

टी॰ ब्रह्मण्यो ब्राह्मणों का क-
ल्याण करने वाला है अर्थात् जो
तप करते हैं ब्रह्म को जानते हैं
उनको मित्र रखता है ब्रह्म
कृद् तप करने वाला है ब्रह्मा
तपरूप अर्थात् विद्या ज्ञान आ-
नन्द से परिपूर्ण सदा सर्वदा बना
रहता है ब्रह्म ब्रह्म विवर्द्ध-
नः तप का बढ़ाने वाला है ब्र-
ह्मविद् ब्रह्म जानने वाला अ-
र्थात् वेद का जानने वाला है ब्रा-
ह्मणो ब्राह्मण होकर वेद पढ़ा-
वे अर्थात् अवतार धारण करके
सब देखता है ब्रह्मी देव वाणी ब्रा-
ह्मणों का मालिक है अर्थात् वेद
की मूर्त्ति है ब्रह्मज्ञो ब्रह्म का जा-
नने वाला है अर्थात् वेद रूप है
ब्राह्मणप्रियः ब्राह्मण प्या-
रे हैं जिसको ॥ ८९ ॥ ८९ ॥

मू॰ महाक्रमो महाकर्म्मा
महातेजो महोरगः । म-
हाक्रतुर्महायज्वा महाय-
ज्ञो महाहविः ॥ ९० ॥

टी॰ महाक्रमो बड़े हैं कर्म्म जिसके

ٹیکا ۸۹

برہمنیو براہمنوں کا کلیان کرنیوالا
ہی یعنی جو لوگ ریاضت کرتے ہین اور
برہم کو جانتے ہین انکو وہ دوست
رکھتا ہے برہمکرد تپ کرنیوالا ہی
یعنی ریاضت کرتا ہے برہما تپ روپ
ہے یعنی بدیا اور گیان اور آنند سے پورن
ہے برہم برہم بوردھنہ تپ کا
بڑھانے والا ہے برہم ید برہم کا جاننے
والا ہی یعنی دانندہ بید و معنی ہی براہمنو
براہمن ہو کر بید کو پڑھاتا ہی یعنی بصورت
ہستی ہو کر مشاہدہ کرتا ہی برہمی بیدبانی
کا جاننے والا ہی یعنی بید کی صورت ہے
براہمن پریہ براہمن پیارے ہین جسکو

اشلوک ۹۰

مہاکرمو مہاکرما مہاتیجو مہورگ
مہاکرتر مہایجوا مہایگیو مہا
ہبہ —

ٹیکا ۹۰

مہاکرمو بڑے ہین کرم جسکے

अर्थवाला है अर्थात् उसके सब
मनोर्थ सिद्ध होते हैं कान्तः
सुन्दर रूप है कृतागमः वेद
को शुद्ध करने वाला है अर्थात्
सब विद्याओं को उसी ने उत्पन्न
किया है आनिर्देश्य वपुः
सत्य रूप आनन्द रूप है और
यह भी है कि वह कोई रूप और
गुण नहीं रखता है विशुः भ-
क्तों के हृदय में प्रवेश करनेवा
ला है और पृथ्वी से आकाश त-
क व्याप्त होकर स्थित है वी-
रो शूरवीर है अर्थात् सब से अ-
धिक बल रखता है अनन्तो
अविनाशी है अनन्त है धन-
ञ्जयः दिग विजय में सब धन
को जीत लेना है अर्थात् अर्जुन व
राजा रूप हो कर लोगों से बहु-
त दौलत लेता है ॥८८॥८८॥

मू· ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्र-
ह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्द्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्र-
ह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥८९॥

ارتھ والا ہی یعنی اسکی سب مرادین پوری
ہوتی ہین کانتہ سندر روپ ہی یعنی پاب
نیپا کو اختیار کرتا ہی کرتاگمہ بید کو
شدھ کرنے والا ہی یعنی سب شاستر
اور علوم اسی نے پیدا کیے ہین -
انردیشیہ بپہ ست روپ انند
روپ سچدانند روپ ہے اور یہ بھی ہی
کہ وہ کوئی صفت نہین رکھتا ہی بشنہ
بھگتون کے ہردے مین پرویش کرنیوالا
ہی یہ وہ ذات ہی کہ زمین سے آسمان تک
محیط ہوکر قایم ہی بیرو شورویر ہی یعنی
قوت سب سے زیادہ رکھتا ہی اننتو ابناشی ہی
بے انت ہی دھننجیہ دگ بجے مین
سب دھن کو جیت لیتا ہے یعنی بصورت
ارجن اور راجا کے ہوکر لوگون سے
دولت لیتا ہے -

اشلوک ۸۹

برہمنیو برہمکرد برہما برہم
برہم بیردھنہ - برہم بد براہمنو
برہمی برہمگیو براہمن پریہ -

पूजने के योग्य है अर्चितः पूजित
है कुम्भो सारा ब्रह्माण्ड जिसके भी-
तर है विशुद्धात्मा विशुद्ध है आ-
त्मा जिसकी अर्थात् अपनी प्रशंसा
कराने का अभिलाषी नहीं है वि-
शोधनः सबका शुद्ध करने वा-
ला है अर्थात् जो कोई उसका स्म-
रण थोड़ा भी करता है उसके पापों
को दूर कर देता है अनिरुद्धो
नहीं है किसी से रुकने वाला अर्था-
त् निष्काम और निरभिलाषी है अप्र-
तिरथः नहीं है पक्ष जिसके अ-
र्थात् तरफदारी नहीं है और उस
के बराबर कोई नहीं है प्रद्यु-
म्नो बहुत है ज्ञात जिसकी अ-
र्थात् दौलत बहुत है अमितवि-
क्रमः बेप्रमाण है पराक्रम जि-
नके अर्थात् उसके बराबर किसी
को सामर्थ्य नहीं है ॥ ८६ ॥ ४० ॥

मू॰ कालनेमिनिहा वीरः शू-
रः शौरिर्जनेश्वरः। त्रिलो-
कात्मा त्रिलोकेशः केश-
वः केशिहा हरिः ॥ ८७ ॥

टी॰ कालनेमिनिहा कालने-
मि राक्षस का मारने वाला है-

پوجنے کے لائق ہی ارچتہ پوجا گیا ہے
کمبھو سب برہمانڈ یعنی تمام عالم اُسکے
اندر ہی بشدھاتما پاک و صاف ہے
دل جسکا یعنی اپنی نیکی کی تعریف کرانیکا
خواہشمند نہیں ہے بشودھنہ سبکو
پاک کردیتا ہی یہ وہ ذات ہی کہ اگر کوئی تھوڑا
بھی یاد اُسکی کرے تو اُسکو گناہوں سے پاک
کردیتا ہی انرودھو نہیں ہی کسی سے رکنے
والا یعنی لاطمع و لاپرواہ ہی پرتیرتھہ
نہیں ہی پچھ یعنی طرفداری جسکے اور اُسکے
برابر کوئی نہیں ہی پردمنو بہت ہے
ذات جسکی یعنی دولت زیادہ ہی امیت
بکرمہ بے انتہا ہین پراکرم جسکے یعنی اُسکے
برابر کسیکو قوت و قدرت نہیں ہے

اشلوک

کال نیم نہا ویرہ شورہ شوریر
جنیشورہ ترلوکاتما ترلوکیشہ
کیشوہ کیشہا ہرہ

ٹیکا

کال نیم نہا کال نیم راکشس کا مارنیوالا ہے

नहीं है अर्थात उससे बड़ा और
कोई नहीं है शास्वतः स्थिरः
निरन्तर और स्थिर है अर्थात सदा
बना रहता है कभी नाश नहीं होता
भूशयो पृथ्वी में शयन करता है
जैसे श्री रामचन्द्रावतार और ऐसा
है कि पृथ्वी और जल पर शयन क-
रता है भूषणो पृथ्वी की शोभा है
अर्थात अपनी इच्छा से अवतार
धारण करके पृथ्वी को अपने प्रका-
श से प्रकाशित किया भूतिः स-
त्य रूप है विशोकः शोक से रहि-
त है अर्थात आनन्द रूप है शो-
क नाशनः भक्तों का शोक दू-
र करने वाला है अर्थात जो उस
की शरण आता है उसका सब
दुःख दूर कर देता है ॥ ८५ ॥

**मू॰ अर्चिष्मानर्चितः कु-
म्भो विशुद्धात्मा विशोधनः
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्यु-
म्नोऽमितविक्रमः ॥ ८६ ॥**

टी॰ **अर्चिष्मान्** चैतन्य प्रकाश
है अर्थात ब्रह्मा विष्णु महेश
सब उसको पूजते हैं और सब के

نہین ہے یعنی اُس سے بزرگ کوئی نہین ہے
شاشوتہ استھرہ نرنتر اور استھر ہے
یعنی ہمیشہ قائم ہے اور موت نہین رکھتا ہے
بھوشیو پرتھوی پر شین کرتا ہے جیسے
شری رام چندر اوتار ہے وہ ذات ہے کہ زمین
و دریا پر آرام کرتا ہے بھوکھنو پرتھوی
کی شوبھا ہے یعنی بخواہش اپنے اوتار لیکر
اپنے نور سے زمین کو منور کرتا ہے بھوتیہ
سب روپ ہے بشوکہ رنج و غم سے
دور ہے یعنی کوئی غم نہین رکھتا ہے محض
بصورت آرام ہے شوک ناشنہ
بھکتون کا دکھ دور کرتا ہے یعنی جو اسکی
طرف رجوع ہوتا ہے اسکے سب دکھ دور کرتا ہے

اشلوک ۸۶

**ارچشمان ارچتہ کمبھو بشدھاتما
بشودھنہ - انردھو پرت
رتھہ پردمنو متِ بکرمہ**

ٹیکا ۸۶

ارچشمان چیتن پرکاش ہے یعنی وہ ذات ہے
کہ جسکو برمہا بشن مہیش ہمیشہ پوجتے ہین اور

टी· स्वक्षः अच्छे हैं नेत्र जिसके स्वङ्गः अच्छे हैं अङ्ग जिसके शतानन्दो सैकड़ों तरह के आनन्द का रूप है नन्दिः आनन्द का रूप है ज्योतिर्गणेश्वरः ज्योति गण करके ईश्वर है अर्थात् सूर्य्य चन्द्रमा तारागण अग्नि आदि सब उसके प्रकाश से प्रकाशित हैं विजितात्मा जीता है जिसने मन अ विधेयात्मा नहीं है पराधीन आत्मा जिसका अर्थात् कोई उसको बुद्धि के द्वारा जीत नहीं सक्ता सत्कीर्त्तिः श्रेष्ठ है कीर्त्ति जिसकी छिन्नसंशयः दूर है संदेह जिसके ८४

मू· उदीर्णः सर्व्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः। भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ ८५ ॥

टी· उदीर्णः सबसे अधिक है सर्व्वतश्चक्षुः सब का देखनेवाला है अर्थात् सब सृष्टि की आँख है अनीशः जिसका कोई स्वामी

ٹیکا

سوکشہ اچھے ہیں نیتر جسکے سونگہ اچھے ہیں انگ جسکے شتانندو سیکڑوں آنند کا روپ ہے نندہ آنند کا روپ ہے جیوتر گنیشور جوت گن کا ایشور ہے یعنی سورج چندرما اگن تارا گن وغیرہ سب روشنی اس سے روشن ہیں بجتاتما جیتا ہے جسنے من اپنا بدھیاتما نہیں ہے پرادھین آتما جسکا یہ وہ ذات ہے کہ کسیکی عقل اسکا بھید نہیں جان سکتی ستکیرتہ شریشٹہ ہے کیرت جسکی یعنی اسکی نکوکاری کا آوازہ ہمیشہ بلند ہے چھن سنشیہ دور ہیں سندیہ جسکے

اشلوک ۸۵

اودیرنہ سرب تشچکش رنیشہ
شاشوتہ استھرہ - بھوشیو
بھوکھنو بھوتر بشوکہ شوک ناشنہ

ٹیکا

اودیرنہ سب سے زیادہ ہے سرب تشچکش سب کا دیکھنے والا ہے یعنی وہ ذات ہے کہ تمام عالم کی آنکھ ہے انیشہ جسکا کوئی مالک

श्रीमान्लोकत्रयाश्रयः ८३

टी॰ श्रीदः लक्ष्मी का देनेवाला है
श्रीशः लक्ष्मी का ईश है श्री
निवासः शोभा का स्थान है श्री
निधिः माया का खजाना है श्री
विभावनः शोभावाली वस्तु प्राणि-
यों को देनेवाला है अर्थात् अन्न ध-
न संतति भाग्य के अनुसार सबको
देता है श्रीधरः लक्ष्मी का धारण
करनेवाला है श्रीकरः भक्तजनों
को लक्ष्मी देता है अर्थात् अपने स्म-
रण करनेवालों को नित्यानन्द कर
देता है श्रेयः कल्याणरूप है जि-
सका कभी नाश नहीं है श्रीमा-
न् शोभावान् अर्थात् सब सम्पत्ति
वाला है लोकत्रयाश्रयः ती-
नों लोक का आश्रय है । ८३ ॥

मू॰ स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो
नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ॥ वि-
जितात्मा विधेयात्मा सत्की-
र्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ८४ ॥

شری مان لوک ترَیا شریہ

ٹیکا

شری دہ لچھمی کا دینیوالا ہے شری
شہ لچھمی کا ایش یعنی مالک ہے شری
نواسہ شوبھا کا استھان ہے شری
ندھہ مایا کا خزانہ ہے شری بھاونہ
شوبھا والی بست پرانیونکو دیتا ہے یعنی ان
دھن اولاد وغیرہ نعمتیں موافق نصیب کے
سبکو دیتا ہے شری دھرہ لچھمی کا دھارن
کرنیوالا ہے شری کرہ بھکتوں کو لچھمی
دینیوالا ہے یعنی اپنے یاد کرنے والوں کو
بے زوال کر دیتا ہے شریہ
کلیان کا روپ ہے کبھی زوال نہیں ہے
جسکو شری مان شوبھاوان ہے
یعنی سب دولت رکھتا ہے لوک ترَیا شریہ
تینوں لوک کا آسرا یعنی امیدگاہ ہر سہ عالم ہے

اشلوک

سوکشہ سونگہ شتانندو نند
جیوترگنیشورہ بجتاتما بدھ
یاتما ستکیرتہ چھن سنشیہ

कल्याण रूप है अर्थात् उस के स्म-
रण से मनुष्य शुद्ध और सुख का
भागी होता है **श्रीवत्सवक्षाः**
भृगु की लता का चिन्ह है उसकी छा-
ती पर अर्थात भृगुजी ने विष्णु भग-
वान् की सहनशीलता की परीक्षा ले-
ने के वास्ते सोते हुवे भगवान् की छा-
ती पर लात मारी परन्तु विष्णु भग-
वान ने कुछ बुरा न माना और भृ-
गु जी से कहा कि मेरी छाती अति
कठोर है और आप के चरण अति
कोमल हैं आप के चरणों में मेरी
छाती की चोट लगी होगी सो अप-
राध क्षमा कीजिये **श्रीवासः**
लक्ष्मी जिसमें वास करती है **श्रीप-
तिः** लक्ष्मी के पति हैं **श्रीमतां
वरः** शोभावालों में श्रेष्ठ है ॥८२॥

**मू०-श्रीदः श्रीशः श्रीनि-
वासः श्रीनिधिः श्रीवि-
भावनः श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः**

کلیان روپ ہی یعنی اپنے نام کے یاد
کرنیوالونکو پاک و لطیف کر دیتا ہے
شری بتس بکشاہ بھرگ جی کی
لات کا چنہہ ہی جسکی چھاتی پر یعنی کسی زمانہ
مین بھرگ براہمن نے بشن بھگوان کا حلم
و برداشت آزمانے کے واسطے بشن بھگوان
کی چھاتی پر جبکہ وہ سو رہے تھے لات
ماری تب بشن بھگوان نے بھرگ جی سے
کہا کہ میری چھاتی اَت کٹھور ہی اور آپکا
چرن اَت کومل ہی سو آپکے چرنوں میں میری
چھاتی کی چوٹ لگی ہوگی سو اپرادھ چھما کیجیے
شری باسہ لچھمی بستی ہی جسکے یعنی دولت
لازوال یعنی ازلی رکھتا ہی **شری پتہ**
لچھمی کے پت ہین یعنی صاحب دولت ہین
شری متا مبرہ شوبھا والوں مین
سریشٹھ یعنی افضل ہے

اشلوک

**شری دہ شری شہ شری
نواسہ شری ندھہ شری بھاو
شری دھرہ شری کرہ شریسہ**

पृथ्वी का भार उतारने के वास्ते
अवतार लिया गोपतिः पृथ्वी
का पति है गोप्ता अपने आप
को रक्षा करने वाला और संसा-
र को सब आपत्ति से छुड़ाने वा-
ला और अपने आप को अपनी
महिमा में गुप्त रखने वाला है वृ-
षभाक्षो अपनी दृष्टि से सब
की कामना पूरण करता है वृ-
षप्रियः धर्म्म है प्यारा जिसको।८१

मू· अनिवर्त्ती निवृत्ता-
त्मा संक्षेप्ता क्षेम कृ-
च्छिवः। श्रीवत्स व-
क्षाः श्रीवासः श्रीप-
तिः श्रीमतां वरः।८२।

टी· अनिवर्त्ती धर्म्म से न-
हीं हटने वाला है और धर्म का
रक्षक है निवृत्तात्मा नि-
वृत्त है आत्मा जिसकी संक्षे-
प्ता उत्पत्तिकाल में सब जगत
को भुलाता है और संहारकाल में
अपने में लीन करता है क्षेमकृ-
च्छिवः कल्याण करने वाला

زمین کا بوجھ اتارنیکے واسطے اوتار لیوی
گوپتہ پرتھوی کا پت یعنی مالک زمین
کا ہی گوپتا اپنے آپ کو رچھا کرنیوالا
ہی یعنی تمام عالم کو حملہ آفات سے امن
مین رکھی اور اپنے آپ کو پردہ صفات
مین نہان رکھی برکھبھا کشو اپنی نظر
سے سبکی آرزو پوری کرتا ہی یعنی سب پر
نظر رحم وکرم کی رکھتا ہی برکھ پریہ
دھرم ہی پیارا جسکا۔

اشلوک ۸۲

انرورتی نیبرتاتما سنچھیپتا چھیم
کرچھوہ۔ شری بتس بکشاہ
شری باسہ شری پتہ شری متامبرہ

ٹیکا ۸۲

انرورتی دھرم سے نہین ہٹنیوالا ہی
یہ وہ ذات ہی کہ طریقہ نیکوکاری کو دوست
رکھتا ہی نیبرتاتما ہٹا ہوا ہی من جسکا
سنچھیپتا پیدایش کے وقت تمام عالم
کو پھیلاوی اور سنگھار کال مین اپنے مین
لین کری یعنی قیامت مین سبکو فنا کرے
چھیم کرچھوہ کلیان کرنے والا

कुमुदः कुवलेशयः। गोहितोगोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः॥ ८१॥

टी. शुभाङ्गः अच्छे हैं अङ्ग जिसके शांतिदः शांति देनेवाला है अर्थात् मित्रता शत्रुता से रहित करदेता है स्रष्टा सब का उत्पन्न करने वाला है कुमुदः पृथ्वी पर अवतार लेकर आनन्द करने वाला है अर्थात् जब सब जल ही जल था तब कुमुद के फूल के सदृश पानी में विष्णु रूप होकर खिला इसवास्ते कुमुद नाम पाया कुवलेशयः जल में शयन करनेवाला है कुवलय उसको कहते हैं किजो पृथ्वी को अपने में छिपावै औरशय शयन करने को कहते हैं जोकि यह दोनो गुण विष्णु रूप में है इस्से यह नाम हुआ गोहितो गौवों की रक्षा करने वाला है अर्थात् गौवों की रक्षा के वास्ते गोवर्द्धन को उठा लिया और गो अर्थात्

کمد ہ کبلے شیہ - گوہتو گوپتر
گوپتا برکھبھا کشو برکھ پریہ -

ٹیکا

۸۱

ششبھانگہ اچھے ہین انگ جس کے شانت دہ شانت دینیوالاہی یعنی دوستی و دشمنی سے نجات دیتاہے سرشٹا سب کا پیدا کرنیوالاہی کمدہ پرتھوی پر اوتار لیکر آنند کرنیوالاہی یعنی جب تمام عالم پانی ہی پانی تھا تب بصورت گل نیلوفر کے پانی مین بشن روپ ہوکر کھلا اسواسطے کمد نام پایا کبلیشیہ پانی مین سونیوالاہی کبل اسکو کہتے ہین کہ جو زمین کو اپنے مین پوشیدہ کرلے اور شیہ بمعنی استراحت کےہین جوکہ یہ دونون صفت بشن روپ مین ہین اسواسطے یہ نام ہوا گوہتو گوؤن کی بہتری کرنیوالاہی یہ وہ ذات ہی کہ واسطے محافظت مادہ گاوان کے گوبردھن پہاڑ اپنی بائین چھنگنیا یعنی خنصر دست چپ پر اٹھالیا اور گوہتو اسکو بھی کہتےہین کہ جو گو یعنی

अनुसार कामों को साम्गः साम
वेद करके गाने में आवे अर्थात् गान
विद्या में भी वही है साम सामवेद
रूप है निर्वाणम् मोक्षरूप अर्था-
त् सब दुःखों का नाश करने वाला है
भेषजं औषधि अर्थात् क्लेशों को
नाश करने वाला है भिषक् वेदरूप
है अर्थात् जन्म मरण से छूटने के वास्ते
विद्या सिखाता है संन्यासकृत्
संन्यास कर्म करने वाला है अर्थात्
सर्व त्याग का सिखाने वाला है शा-
न्तः प्रलय काल में सब का हित कर-
ने वाला है अर्थात् चारों आश्रम
और त्यागी को परम पद देने वा-
ला है प्रीतो राग और द्वेष से र-
हित है अर्थात् शत्रुता मित्रता न-
हीं रखता है निष्ठा प्रलय काल में
सब जगत् जिसमें रहे शान्तिः
अज्ञान का हटाने वाला है परा-
यणः परमाश्रय है ॥ ८०॥
श॰ शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा

موافق کام کرتے ہیں سامگہ سام بید
کرکے گانے میں آتا ہے یعنی علم موسیقی
میں بھی وہی ذات ہے سام سام
بید روپ ہے نربانم موکش
روپ ہے یعنی سب دردوں کی دوا ہے
بھیشجم دوا ہے مرض غفلت
وہی ہے بھشک بید روپ ہے یعنی
واسطے دور کرنے مرض زادن و مُردن
کے علم سکھاتا ہے تاکہ موجب خلاصی کا ہو
سنیاس کرت سنیاس کرم کرنیوالا
ہے یعنی آموزندہ ترک کل ہے شانتہ پرل
ے سمے سب کا ہت کرنیوالا ہے یعنی چارو
آشرم والوں کو اعلیٰ درجہ پہ پہنچاتا ہے
پریتو راگ اور دویش سے رہت ہے
یعنی محبت و عداوت سے پاک ہے نشٹا
پرلے کال میں سارا جگت جس میں رہتا ہے
شانت اگیان کا ہٹانے والا ہے یعنی
جہالت کو دور کر دیتا ہے پرایَنم
پرم آسرا ہے

اشلوک

شبھانگ شانت دو سرشٹا

अर्थात् अधर्म बुद्धियों को मा-
रने वाला है दक्षिणाप्रदः वां-
छा का पूरण करने वाला है दि-
वस्पृक् स्वर्ग का स्पर्श मथन क-
रने वाला है और भक्त जनों को
पदार्थ देने वाला है सर्व्वदृग्
व्यासो सब को देखने वाला है
अर्थात् प्रकट करने वाला सब
विद्याओं और बुद्धियों का है
सर्व्व दृग का अर्थ यह है कि सब
का देखने वाला हो और व्यास
शब्द का अर्थ यह है कि एक वे-
द से चार वेद करै ऋग्वेद यजुर्वेद
सामवेद अथर्वणवेद वाचस्प-
तिः वाणी का पति है अर्थात् चित्त
की बात भी उसको सुन पड़ती है अ-
योनिजः योनि अर्थात् किसी के
पेट से नहीं पैदा हुआ है ॥ ७९ ॥

**मू॰ त्रिसामा सामगः साम
निर्वाणं भेषजं भिषक्। सं-
न्यासकृच्छमः शान्तो नि-
ष्ठा शान्तिः परायणः ॥ ८० ॥**

टी॰ **त्रिसामा** तीनों वेद करके स्तु-
त है अर्थात् देवता तीनों वेद को

یعنی جو لوگ دھرم سے دشمن ہیں انکو مارتا
ہی دکشنا پردہ آرزو کا پورا کرنیوالا
ہی دوس پرک سورگ کا متھن
کرنیوالا یعنی مالک بہشت ہیں کا سے
سرب درگ بیاسو سب کو دیکھنیوالا
ہی یعنی سب علوم و عقول کا ظاہر کرنیوالا ہے
سرب درگ کے یہ معنی ہیں کہ سب کا دیکھنے
والا ہو اور بیاس کے یہ معنی ہیں کہ ایک
بید سے چار بید کرے اول رگ بید دوم یجر
بید سوم سام بید چہارم اتھربن بید —
باچسپت بانی کا مالک یعنی صاحب
سخن ہے اشلوک دل کا سخن بھی معلوم ہو جاتا ہے
ایونیجہ یعنی شکم سے نہیں پیدا ہوا

اشلوک

**ترساما سامگہ سام نربانگ
بھیکھجنگ بھکھک سنیاس
کرچھما شانتو نشٹھا شانتیہ پراینہ**

ٹیکا

ترساما تینوں بید کرکے استت
ہے یعنی دیوتا لوگ تینوں بید کے

अर्थात् उसी ने पृथ्वी का जोतना बो-
ना सिखाया और हलधर श्री कृष्ण
जी के भाई का भी नाम है आदित्यो
सूर्य्यरूप है अर्थात् उसी के द्वारा सब
संसार प्रकाशित है और अदिति
के पेट से कश्यप के घर वामन अवता-
र भी हुआ है ज्योतिः प्रकाशरूप है
आदित्यः वामन रूप है सहि-
ष्णुः सरदी गरमी का सहने वाला है अ-
र्थात् सब काल में एकतरह है गति-
सत्तमः श्रेष्ठ परमात्मारूप है अर्था-
त् अच्छा स्वभाव रखता है ॥ ७८ ॥

**मू० सुधन्वा खण्डपरशु-
र्दारुणो द्रविणप्रदः । दि-
वस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाच-
स्पतिरयोनिजः ॥ ७९ ॥**

टी० सुधन्वा अच्छा है धनुष जि-
सका और धनुष अभिप्राय है नेत्र और
भृकुटी इत्यादिक से अर्थात् वह ऐ-
सा है कि नेत्र और भृकुटी के सैन से
सब काम करता है खण्डपरशुः
शत्रुओं का नाश करने वाला है कु-
ठार जिसका परशुरामावतार दारु-
णः री दानवों का मारनेवाला है

یعنی اسی نے کاشت کرنا زمین کا بتلایا اور
ہلدھر شری کرشن مہاراج کے بھائی کو بھی
کہتے ہیں آدتیو سورج روپ ہے یعنی اسی
کے سبب سے تمام عالم روشن ہے اور باون
جی کا اوتار بخانہ کشیپ از شکم آدت ہوا
جیوتہ پرکاش روپ ہے آدتیہ باون
روپ ہے سہشنو جاڑا اور گرمی کا سہنے والا
ہے یعنی ہر وقت میں یکساں رہتا ہے۔
گت ستمہ سریشٹھ پرماتما روپ ہے یعنی
طریقہ نیک رکھتا ہے۔

اشلوک ٧٩

سدھنوا کھنڈپرشو دارنو درون
پردہ۔ دوس پرک سرب
درک بیاسو باچسپت رَیونجہ۔

ٹیکا

سدھنوا اچھا ہے دھنکہ جسکا دھنکہ کمان
کو کہتے ہیں اور کمان مراد چشم و ابرو و دیگر
اعضا سے ہے یعنی وہ ایسا ہے کہ ساتھ اشارہ
چشم و ابرو کے دلوں کو قبضہ کرتا ہے کھنڈپرشو
دشمن کا ناش کرنیوالا ہے کلہاڑا جسکا یعنی
پرسرام اوتار دارنو دیونوں کا مارنیوالا

जो कुछ उसको कहैं उचित है वृ-
क्षः वृक्षरूप होकर स्थित है पु-
ष्कराक्षो शुद्ध हृदय में प्रकाश
करता है अर्थात् मनुष्यों के हृदय
में विद्यारूप होकर स्थित है म-
हामना: सृष्टि की स्थिति और
नाश करने में मन है जिसका ॥७७॥

मू. भगवान्भगहानंदी
वनमालीहलायुधः। आ-
दित्योज्योतिरादित्यः स-
हिष्णुर्गतिसत्तमः। ७८।

टी. भगवान् ऐश्वर्यवाला है
भग का अर्थ धन धान्य शुभ कर्म्म
प्रतिष्ठा यश विख्याता है और वा-
न का अर्थ रखने वाला है भग
हा पापियों का ऐश्वर्य हरनेवा-
ला है नंदी सुखवाला अर्थात स-
दा सुखी रहता है वनमाली तुल-
सी की माला धारण किये है अर्थात ल-
घु पदार्थ को भी उत्तम बनाता है ह-
लायुधः हल है अस्त्र जिसका

جو کچھ اسکو قرار دین بجا ہی برکش بصورت
درخت قائم و مستحکم ہی پشکر اکشو شدھ
ہردی مین پرکاش کرتا ہی یعنی آدمیون کے
سینہ مین بصورت علم قیام رکھتا ہی مہا
مناہ خلقت کو مبدا و فنا کرنے مین دل ہی جسکا -

اشلوک

بھگوان بھگہا نندی بن مالی
ہلایدھہ - آدتیو جیوت
رادتیہ سہشنرگت ستم

ٹیکا

بھگوان ایشورج والا ہی بھگ کے
معنی یہ ہین کہ حشمت و نکوکاری و نام
نیک و دولت و ترک تعلقات و آزادی و
رکھتا ہو اور وان کے معنی صاحب اور
مالک کے ہین بھگہا پاپیون کا جاہ و حشم
کہو دینے والا ہی نندی سکھ والا
ہی یعنی ہمیشہ خوش و خورم رہتا ہی
بنمالی تلسی کی مالا پہنے ہی یعنی یہ وہ ذات
ہی کہ عاجز و ناچیز کو بھی عزت دے کر
قائم و برقرار رکھتا ہے
ہلایدھہ ہل ہے ہتھیار جسکا

और देख नहीं पड़ता है चक्रगा-
दाधरः चक्र गदा धारी है और
यह कि ज्ञान का गोल चक्र एवक-
र सब ओर से संसार की रक्षा कि
ये हुवे है ॥७६॥७६॥७६॥

मू· वेधाःस्वाङ्गोजितः कृ-
ष्णोदृढः संकर्षणोच्युतः ।
वरुणोवारुणोवृक्षः पुष्करा
क्षोमहामनाः ॥ ७७ ॥

टी· वेधाःब्रह्मा रूप अर्थात सृष्टि
करता है स्वाङ्गो अपने स्वरूप
के सामर्थ्य से विश्व को रचा है —
अजितः नहीं जीतने में आता
है किसी के कृष्णो भक्तों की तापमि
टाता है दृढः निराकार अर्थात एक
रूप है संकर्षणो प्रलयकाल में
सब प्रजा को खींच ले अर्थात सबको
नाश करके आप रहै अच्युतः नाश
रहित है वरुणो अपनी किरणों
को खींच लेता है अर्थात सूर्य्य की त
रह अन्त को पश्चिम में चला जाता
है वारुणो अगस्त रूप अर्थात
अगस्त मुनि है दोनों वर्णों का पति है
जो कि सब देवताओं का रूप है इस से

اور نظر نہیں آتا چکر گدا دھرہ چکر دھاری
اور گدا دھاری ہی یعنی عقل بصورت چکر ہوکر
محافظت خلق کی کرتا ہے

اشلوک

بیدھاہ سوانگو جیتہ کرشنو
سنکرکھنو چیتہ پرتو یا رنو
برکشہ پشکر اکشو مہا مناہ

ٹیکا

بیدھاہ برہما روپ یعنی آفرینندہ خلائق
ہی سوانگو اپنے سوروپ کے سامرتھ سے
سنسار کو رچا اجیتہ کوئی اسکو جیت نہیں
سکتا کرشنو بھگتوں کی تاپ مٹاتا ہے
درڑھہ نربکار یعنی ایک قرار رہے
سنکرکھنو پرلے کال میں سب سنسار کو
کھینچ لیتا ہی یعنی تمام عالم کو فانی کرکے خود قایم
رہتا ہی اچیتہ ناش سے رہت ہی
یعنی لازوال ہی ورنو اپنی کرنوں کو کھینچ
لیتا ہی یعنی دن اخیر ہونے پر شل آفتاب غروب
میں چلا جاتا ہی بارنو اگست روپ ہی
یعنی اگست مت ہی دونوں برنوں کا پت ہی
چونکہ سب دیوتوں کی صورت وہی ہی اس سے

उससे आनन्द पाते हैं नन्दः वि-
षयानन्द से रहित है सत्यधर्मा:
सत्य है धर्म जिसका त्रिविक्र-
मः वामन रूप होकर त्रिलोकी को
तीन पैर से नापा और हरिवंश पुरा-
ण में लिखा है कि (त्रि) त्रिलोक
को कहते हैं ॥७४॥ ७४ ॥

मू. महर्षिः कपिलाचार्य:
कृतज्ञो मेदिनीपतिः । त्रिप-
दस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृ-
ङ्गः कृतान्तकृत् ॥७५॥

टी. महर्षिः ऋषियों और
ज्ञानियों में श्रेष्ठ है अर्थात् सब वेदों
का ज्ञाता है कपिलाचार्यः कपि-
लदेव है जिसने देवहूति को उपदे-
श किया और सांख्य
शास्त्र को बनाया कृतज्ञः सब ज-
गत् को जानता है मेदिनीपतिः
पृथ्वी के पति हैं त्रिपदः जाग्रत स्व-
प्न सुषुप्ति तीनों अवस्था रखता है
त्रिदशाध्यक्षो त्रिदशों का मा-
लिक है महाशृङ्गः मत्स्यरूप अ-
र्थात प्रलयकाल में मत्स्य रूप

اُس سے فیض سرور کا پاتے ہیں نندہ
بشئے سکھ سے رہت ہی یعنی لذت عیش دنیاوی
نہیں حاصل کرتا ہی ستیہ دھرم ست
ہی دھرم جسکا یعنی خلق ذریعہ حق ہی تربکرم
بامن کا روپ کر کے تینون لوک کو پاؤن سے
ناپ لیا ہی ہرنبش پران میں لکھا ہی کہ
تری یعنی ترلوک کے ہین

اشلوک

مہرکھی کپلاچارج کرتگیو میدنی پتی
ترپد تردشادھیکش مہاشرنگ کرتانت کرت

ٹیکا

مہرکھی تمام رکھیون اور گیانیون میں بڑا ہی وید کا
جاننے والا سب ویدون کا ہی کپلاچارج
کپل منی ہی کہ جسنے دیوہوتی کو اپدیش دیا
اور سانکھیہ شاستر کو بنایا توحید و ثبوت [illegible]
کیا کرتگیہ جگت کو جانتا ہی میدنی پتی
کا مالک ہی ترپد جاگرت سوپن سکھوپت
تینون حالت رکھتا ہی تردشادھیکش
تینون دشا کا مالک ہی یعنی جبروت و ناسوت
و ملکوت مہاشرنگ مچھلی کی صورت
یعنی وقت فنا عالم کے دریا میں مچھلی ہو کر [illegible]

ऽम्भोनिधिः देवताओं का आ-
सरा है और भी परिपूर्ण नद है अनं-
तात्मा पूर्ण है आत्मा रूप जि-
स का महोदधिशयो प्रलय
काल में समुद्र सागर में शयन कर-
ने वाला है अर्थात् प्रलय काल में स-
ब संसार को अपने पेट में रखकर
सो रहता है अन्तकः प्राणियों
का नाश करने वाला है ॥ ७३ ॥

मू. अजो महार्हः स्वाभा-
व्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्य
धर्म्मा त्रिविक्रमः ॥ ७४ ॥

टी. अजो कामदेव रूप है म-
हार्हः पूजा करने योग्य और सब से
बड़ा है स्वाभाव्यो सिद्ध रूप है अ-
र्थात् सदा एक रस रहता है कभी उ-
स में हानि किसी प्रकार की नहीं हो
ती है जितामित्रः जीते हैं शत्रु
जिस ने अर्थात् रावणादि प्रमो-
दनः आनन्द को प्राप्त है आ-
नन्दो आनन्द रूप है नन्दो सब
तरह बढ़ा हुआ है अर्थात् सब जीव

یہ وہ ذات ہے کہ قوت زائد از حد مقدار
رکھتا ہے امبھونِدھی دیوتاؤں کا آسرا
ہے اور نیز دریائے اعظم محیط عالم وہی ہے
اننت آتما پورن ہے آتما روپ جسکا
مہودو دھیشیو پرلے کال میں سمندر
ساگر میں شیین کرنیوالا ہے یہ وہ ذات ہے کہ تمام
عالم کو وقت قیامت کے اپنے شکم میں رکھکر
استراحت کرتا ہے انتکہ پرانیوں کا ناش کرنیوالا ہے
یعنی تمام عالم و جاندار انکو آخر کرتا ہے

اشلوک

۷۴
اجو مہارہ سوابھاویو جتامترہ پرمودنہ
آنندو نندنو نندہ ستیہ دھرم تری وکرمہ

ٹیکا

۷۴
اجو کامدیو روپ ہے مہارہ پوجا کرنے
جوگ یعنی لائق پرستش و بزرگ ہے سوابھاویو
سدھ روپ ہے یہ وہ صفت ہے کہ ساتھ ایک
صورت کے رہتا ہے اور نقصان اسمیں راہ نہیں
پاتا ہے جتامترہ جیتا ہے دشمن کو جسنے یعنی راون
وغیرہ پر غالب آیا ہے پرمودنہ آنند کو پراپت ہے
یعنی ہمیشہ مسرور ہے آنندو آنند روپ ہے
نندنو سب طرح بڑھا ہوا ہے یعنی سب جاندار

जिसका अर्थात् सत्य का चाहने
वाला है **दाशार्हः** भक्तों की पूजा
स्वीकार करने वाला है और दाशा
र्हः नाम है यादवों के पुरुषों का कि
जिस कुल में श्री कृष्ण जी ने अव-
तार लिया था **सात्वतां पतिः**
भगवत धर्म्मों का पति है और सा-
त्वत नाम भी है यादवों के पुरुषों का
जहां श्रीकृष्ण जी ने जन्म लिया ७०

मू॰ जीवो विनयिता साक्षी
मुकुंदो मित विक्रमः। अं-
भो निधिरनन्तात्मा महो-
दधिशयोन्तकः ॥ ७१ ॥

टी॰ **जीवो** देह में रहने वाला है
अर्थात् प्राण रूप होकर देह की र-
क्षा करने वाला है **विनयिता-**
साक्षी जो भांति है उसका साक्षी व-
ही है और गुप्त और प्रकट संसारी
व्यवहार को आंख की सहायता
के बिना देखता है **मुकुन्दो** मु
क्ति का देने वाला है अर्थात् संसारी
बन्धन से छुड़ा देता है **मित विक्र**
मः बे प्रमाण है पराक्रम जिसका

جسکا یعنی وہ ذات ہی کہ راستی کا چاہنے
والا ہی **واشارہہ** بھکتون کی پوجا
قبول کرنیوالا ہی اور واشارہہ نام جادون
کے بزرگ کا تھا جنکے کل مین سری کرشن
مہاراج نے اوتار لیا تھا **ساتوتانگ**
پتہ بھگوت دھرمونکا پت ہی اور ساتو نام
بزرگ خاندان جادو کا تھا کہ جس خاندان
مین سری کرشن مہاراج نے اوتار لیا تھا-

اشلوک

جیوو ونینتا ساکشی مکندو مت
بکرمہ- انبھو ندھر ننتاتما
مہودد ہشیو نتکہ-

ٹیکا

جیوو دیہہ مین رہنیوالا ہی یعنی وہ ذات
ہی کہ بصورت نفس ہوکر اسکو قائم رکھتا ہی
ونینتا ساکشی جو شانت ہی اسکا ساکشی
ہی یہ وہ ذات ہی کہ ظاہر و پوشیدہ بغیر
مدد نگاہ کے ملاحظہ احوال عالم کا کرتا ہی
مکندو مکت کا دینے والا ہی یہ وہ
ہی کہ بند جہان سے خلاصی عطا کرتا ہی
مت بکرمہ بے پایان ہی پراکرم جسکا

बहुत है जिसके अर्थात शुभ
कर्मों की रक्षा करता है ॥७१॥
मू· सोमपोमृतपः सोमः
पुरुजित्पुरुषोत्तमः । वि
नयोजयः सत्यसंधो दा-
शार्हः सात्वतांपतिः ७२
टी· सोमपो अमृत को पिये
है और भी यह कि यज्ञ करके
धर्म्म का अचार करता है और
भी सोम नाम घास का है कि जो
अमृत से उत्पन्न है और वह य-
ज्ञादिक में काम आती है अमृ-
तपः यजमान होकर यज्ञ के
सोम को खाता है और भी ऐसा
है कि जिसने अमृत को उत्पन्न
किया है सोमः औषधि में रस
डालने वाला है अर्थात चन्द्रमा
रूप है और प्रकाश रूप अर्थात
महादेव रूप है पुरुजित बहु
तों को जीतने वाला है पुरुषोत्त
मः बहुत श्रेष्ठ है अर्थात अति उ
त्तम स्थानी है विनयो नम्र अर्थात
गरीब है जयः सब प्राणियों को जी-
तता है सत्यसंधो सच्चा है वचन

بہت ہی جسکے یعنی وہ ذات ہی کہ طریقۂ
نیکوکاری کو قائم رکھتا ہی

اشلوک

سومپو مرتپہ سومہ پرجت
پرکھوتمہ ـ بنیوجیہ ستیہ سندھو
داشارہہ ساتوتانک پتہ

ٹیکا

سومپو امرت پینے والا اور جگ کرکے
طریقۂ نیکوکاری کو ظاہر کرنیوالا ہی اور سوم
نام گھاس کا ہی کہ جو امرت سے پیدا ہی اور وہ
اکثر جگ میں کام آتی ہی مرتپہ ججمان ہوکر
جگ کا سچا ہوا کھاتا ہی اور وہ ایسا ہی کہ
جسنے آب حیات کو پیدا کیا ہی سومہ
دواؤں میں رس ڈالنے والا ہی یعنی چندرماں
روپ اور وہ ذات ہی کہ محض نور و لطافت
ہی یعنی مہادیو پرجت دشمنوں کا جیتنے
والا یعنی فتح کرنیوالا ہی پرکھوتمہ بہت اُتّم
ہی یعنی سب جانداروں سے افضل ہی
بنیو ملائم و غریب مزاج ہی جیہ سب
پرانیوں کو جیتتا ہی ستیہ سندھو سچا ہی بچن

भूरि दक्षिणः ॥ ७९ ॥
टी॰ उत्तारो जन्म संसार बन्धन
से तरा हुआ है अर्थात् जन्म
मरण से रहित है गोपतिः
गउवों का स्वामी है जैसे कृष्णा-
वतार में गउवों की पालना की
और गोपाल नाम पाया और
पृथ्वी के मालिक को भी कह
ने है गोप्ता रक्षाकरनेवाला है
और सब प्रजा की पालना क-
रता है ज्ञानगम्य ज्ञानक-
रके लाभ हो जो अर्थात् वह
ईश्वर ज्ञान के द्वारा प्राप्त भी
हो सक्ता है पुरातनः काल
करके नाशवान् नहीं है अ-
र्थात् सदा सर्वदा स्थित है श-
रीरभूत शरीर को प्राणी रू-
प होकर रक्षा करने वाला है
अर्थात् सब सृष्टि की पालना
करता है भूतभोक्ता सब
का पालने वाला है कपी-
न्द्रो हनूमानजी के मालि
क श्री रामचन्द्र रूप अथवा
वाराह रूप भूरि दक्षिणः
यज्ञ करने वालों को दक्षिणा

بھوری دکشنہ
ٹیکا
اُتّرو سنسار کے جنم کے بندھن سے
تراہوا ہے یعنی قید زادن و مردن سے
پاک و خلاصی یافتہ ہے گوپتیہ گؤوں کا
مالک ہے جیسے شری کرشن اوتار میں
حفاظت و پرورش مادہ گاوان کی
کی اور گوپال نام پایا اور گوپتیہ زمین
کے مالک کو بھی کہتے ہیں گوپتا رچھا
کرتا ہے وہ ذات ہے کہ پرورش خلق
خلائق کی کرتا ہے گیان گمیہ گیان
کرکے لابھ ہوتا ہے یعنی وہ ذات ہے کہ عقل
کے ساتھ پہچانا جاتا ہے اور حاصل ہوتا ہے
پُراتنہ پرانا ہے یعنی وہ ذات ہے کہ ہمیشہ
قائم ہے شریربھوت شریر کو پرانی روپ
ہوکر رچھا کرتا ہے یعنی سب جانداروں کی پرورش
کرتا ہے بھوت بھوکتا سب کا پالنے
والا اور بھوگ کرنے والا ہے
کپیندرو ہنومان جی کا مالک ہے
شری رام چندر روپ یا باراہ روپ کر
بھوری دکشنہ جگیہ کرنیوالوں کو دچھنا

टी· गभस्तिनेमिः किरण रूपी चक्र हैं जिसके अर्थात् सूर्य्य चन्द्रमा उसी से प्रकाशित हैं सत्वस्थः सतोगुण है स्थित जिसके अर्थात् वह ऐसा है कि सब शरीरों में व्याप्त हो कर स्थित है सिंहो नरसिंह रूप अर्थात् सिंह के तुल्य बलवान् है भूतमहेश्वरः प्राणियों का महा ईश्वर है अर्थात् सब जीवों में बड़ा वही है आदि देवो सब प्राणी जिसमें रहैं प्रलय काल में अर्थात् वह ऐसा है कि पहिले प्रकाश रूप प्रकट हुआ है महादेवो सब में पूजनीय है और उसकी बड़ाई कुछ विद्या बुद्धि बल धन धान्य ही पर नहीं है किन्तु बिना किसी ऐश्वर्य्य के वह स्वतः प्रतिष्ठावान् है देवेशो देवताओं का मालिक है देवभृद्गुरुः इन्द्र का गुरु है अर्थात् सकल विद्याधिकारी है ॥७०॥

मू· उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः। शरीर भूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो

سکا

گبھستی نیمہ کرن روپی چکر ہی جسکے یعنی سورج یعنی وہ ذات ہی کہ جس سے سورج چاند وغیرہ روشن ہیں ستوستھہ ستوگن ہی استھت جسکے یہ وہ ذات ہی کہ تمام جسموں میں بصورت جان قائم ہی سنگھو نرسنگھ روپ یعنی مانند سنگھ کے قوت رکھتا ہی۔ بھوت مہیشورہ پرانیونکا مہا ایشور ہی یہ وہ ذات ہی کہ سب جاندارونمیں بزرگ ہی آدو دیوو سب پرانی پرلی کال میں جسمیں رہیں یعنی وہ ذات ہی کہ پہلے بصورت روشنی ظاہر ہوا ہی مہا دیوو سب اسکو پوجتے ہیں یہ وہ ذات ہی کہ بزرگی اسکی منحصر کچھ علم و قوت و دولت ہی پر نہیں ہی دیویشو دیوتاؤنکا مالک ہی دیو بھرد گرورہ اندر کا گرو یعنی داناے جملہ علوم بھونے وصفوں کا ہی

اشلوک

۷۱

اترو گوپتر گوپتا گیان گمیہ پراتنہ شریر بھوت بھرد بھوکتا کپیندرو

मू॰ स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्म्मकृत् । वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ६८ ॥ ६८ ॥

टी॰ स्वापनः अपनी माया करके अज्ञानियों को सुलाता है और आप जागता है स्ववशो अपनेही वश्य है किसीके आधीन नहीं व्यापी नैकात्मा सब में व्याप रहा है और सृष्टि रचने के वास्ते अनेक आत्मा प्रकट करता है नैककर्म्मकृत अनेक कर्म्म करने वाला है उत्पत्ति पालन नाश इत्यादिक वत्सरो सम्पूर्ण जगत में बसता है और सम्पूर्ण जगत उसमें बसता है वत्सलो दयावान है अर्थात भक्तुवों पर भी दया करता है वत्सी गऊवों के बछड़े उसको प्रिय हैं जैसा कि श्री कृष्णावतार में गौवों की पालना की और यह कि सब सृष्टि का पिता है सब जीव उसके वत्स

اشلوک

۶۸

سواپنہ سوبشو بیاپی نیکاتما
نیک کرم کرت - بتسرو بتسلو
بتسی رتن گربھو دھنیشور ہ -

ٹیکا

۶۸

سواپنہ اپنی مایا کرکے اگیانیون کو
سلاتا ہی اور آپ جاگتا رہتا ہی سوبشو
اپنے آپ ہی کسیکے تحت نہین بیاپی
نیکاتما سب مین بیاپ رہا ہی یعنی
وہ ذات ہی کہ واسطے اجراے کارخانہ
عالم کے ہزارون طرح کی تجلی کرتا ہی -
نیک کرم کرت انیک کرم کرنیوالا
یعنی پیدایش و پرورش و فنا وغیرہ
بتسرو سب جگت مین بستا ہی اور
سب جگت اسمین ہی بتسلو دیاوان
ہی یہ وہ ذات ہی کہ دشمنون کے ساتھ
بھی دوستی کرتا ہی بتسی گئوون کے
بچے اسکو پیارے ہین چنانچہ شری کرشن
اوتار مین گئوون کی پرورش کی اور تمام عالم
کا پتا ہی اور یہ مردمان عالم اسکے بال بچے

कान्ति सुन्दर है और उसने ब्र-
ह्मा और वेद को उत्पन्न कि-
या है और उनको विद्या सि-
खाया है सूक्ष्मः महीन है
आकार जिस का और सम्पू-
र्ण स्थानों में व्यापक है सुघो-
षः सुन्दर है शब्द जिस का
अर्थात् मधुर वाणी है सुख
दः सुख का देने वाला है और
भी ऐसा है कि सज्जनों को सु-
ख और दुर्जनों को दुःख दे-
ता है सुहृत् उपकारी है औ-
र भी ऐसा है कि सम्पूर्ण सृ-
ष्टि का कार्य्य बिना किसी प्र-
योजन और बदले के सिद्ध
करता है मनोहरो योगियों के
मन में आने वाला है और सदा आ-
नन्ददायक है जितक्रोधो जी-
ता है क्रोध जिसने अर्थात् उस
को कभी क्रोध नहीं आता है
वीरबाहुः वीर है भुजा जि-
स की अर्थात् वेद के वचनों के
बने रहने के वास्ते शत्रुओं को
मारता है विदारणः पापी औ-
र दुर्जनों को मारता है ॥६६॥

زیبا رُو ہی اور وہ ذات ہی کہ جسنے برہما
اور بید کو پیدا کیا اور اُنکو علم سکھلایا
سُوکشمہ باریک ہی آکار جسکا یہ وہ ذات
ہی کہ سب جگہ موجود ہی سُگھوکھہ
سُندر ہی شبد جسکا یعنی خوش الحان ہی
سُکھہ دہ سُکھہ کا دینے والا ہی یہ وہ
ذات ہی کہ نیکوکاران کو راحت دیتا ہی
اور بدکارونکو عذاب مین گرفتار کرتا ہی
سُہرت اُپکاری ہی یہ وہ ذات ہی
کہ کام تمام عالم کا بغیر کسی غرض وعوض
کے کرتا ہی منوہر و جوگیون کے ہردی
مین آنے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ راحت
جاوید ہی جت کرودھو جیتا ہی
کرودھ جسنے یعنی وہ ذات ہی کہ جسکو
کبھی غصہ نہین آتا ہی بیر باہو شُوبیر
ہین بھجا جسکی یعنی واسطے قائم رکھنے
بید کے دشمنون کو مارتا ہی بدارنہ
پاپیونکو مارنے والا ہی یعنے جو کوئی کہ
اُسکے سادھ سنتون بھگتون کو دکھ
دینے لگتا ہی تو اپنے بھگتون کے سُکھہ
ملنے کیواسطے دُرجنون کو مار ڈالتا ہی

सतांगतिः सत पुरुषों को गति देनेवाला है अर्थात् वह ऐसा दयालु है कि सब मुक्ति के चाहने वाले उससे मुक्ति की इच्छा रखते हैं सर्वदर्शी सब को देखने वाला है अर्थात् सब के कर्मों को देखता और जानता है विमुक्तात्मा विमुक्त है आत्मा जिसकी सर्वज्ञो सब का जान्ने वाला है अर्थात् सब में है ज्ञानमुत्तमम् ज्ञान रूप है और बड़ी बुद्धि ठीक ठीक वे पदार्थ व द्वाव स्थिर रखता है ॥ ६६ ॥

मू॰ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत । मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ६७ ॥

टी॰ सुव्रतः सुन्दर है संकल्प जिसका और वह ऐसा है कि जो उसकी शरणागया वह दुःख से छूट गया सुमुखः अच्छा है मुख जिसका अर्थात्

ستانگ گتہ اچھے لوگون کو اچھی گت دینے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ سب خواہندگان نجات اُس سے رستگاری چاہتے ہیں سرب درشی سبکو دیکھنے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ تمام اعمال مردمان کو دیکھتا اور جانتا ہی بمکتاتما آزاد ہی آتما جسکی سربگیو سب کا جاننے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ سب میں ہی گیان متمم گیان روپ ہی یہ وہ ذات ہی کہ دانش بزرگ و بے کم و کاست رکھتا ہی اور راست اور ثابت ہے ۔

اشلوک ٦٧

سبرت سمکھ سوکشم سگھوکھ سکھدہ سہرت ۔ منوہرو جت کرودھو ویر باہر ودارنہ ۔

ٹیکا ٦٧

سبرت سندر ہی سنکلپ جسکا یہ وہ ذات ہی کہ جو پناہ اسکی لے گیا سب دکھ سے چھوٹ گیا سمکھ اچھا ہی مکھ جسکا یعنے

अपने में लीन करलेता है और
आप ही आप स्थिर है **समी
हनः** सृष्टि के वास्ते भले प्र-
कार मे व्यवहार करता है और
सृष्टि की उत्पत्ति और पालन
और नाश उसकी इच्छासे
होती है ॥ ६५ ॥

**मू॰ यज्ञ इज्यो महेज्यश्च
क्रतुः सत्रं सतां गतिः । स-
र्व्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्व्व
ज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ६६ ॥**

टी॰ **यज्ञ** यज्ञरूप है और सब
देवताओं का उत्पन्न करनेवाला
इज्यो पूजने योग्य है और ऐ-
सा है कि कोई किसी देवता को
पूजै वह प्रसन्न होता है हरिवंश
पुराण में लिखा है कि देवता औ-
र पितरों की जो यज्ञ करता है वह
प्रसन्न होता है **महेज्यश्च**
पूजनेवालों में यज्ञ अर्थात् पूज
ने योग्य है **क्रतुः** विस्नु रूप
है **सत्रम्** ब्रह्म रूप और स-
त पुरुषों की रक्षा करने वाला है

اپنے مین لین یعنی محو کر لیتا ہی یہ وہ ذات
ہی کہ خود بخود قائم ہی **سمی ہنہ**
سرشٹ کے واسطے اچھے پرکار سے بیوہار
کرتا ہی یہ وہ ذات ہی کہ ایجاد اور بقا اور
فنائے عالم کی ساتھ خواہش اسکے ہی

اشلوک ٦٦

**جگیہ اِجیو مہیجیشچ کرتہ سترم
ستانگ گتہ۔ سرب درشی
بمکتاتما سربگیہ گیان متمم۔**

ٹیکا ٦٦

جگیہ جگ روپ ہی یہ وہ ذات ہی کہ
آفرینندۂ تمام فرشتگان ہی **اِجیو** پوجنے
کے قابل ہی یہ صفت ذات پرمیشور کی
ہی کہ کوئی چاہی جس دیوتا کی پوجا کرے
وہ اسی مین خوش ہو جاتا ہی چنانچہ ہربنس
پران مین لکھا ہی کہ دیوتا اور پتروں کے
واسطے بھی جو کوئی جگ کرتا ہی اُس سے
بھی مین خوش ہوتا ہون **مہیجیشچ**
پوجنے والون مین جگیہ ہی یعنی پوجنے کے
لائق ہی **کرتہ** بشن روپ ہی **ستریم** برہم روپ
ہی اور اچھے لوگونکی رچھیا کرنے والا ہی

जिसको अर्थात् वह ऐसा है कि
सब तरह की सामर्थ्य होने पर
भी घमंड नहीं रखना है स्थवि
ष्ठो अतिशय करके स्थूल है
अर्थात् सब सृष्टि उसमें ठहरी
हुई है वेद में कहा है कि अग्नि
कोश उसका शिर है और सू
र्य्य चन्द्रमा उसके नेत्र हैं भू
सत्य रूप है धर्म्मयूपो भ
गवत् धर्म्म के वश्य है अर्थात्
यज्ञ करके सब कर्म्म स्थित हैं
महामखः बड़ी है यज्ञ जि
सकी अर्थात् जो कोई नीति क
रके यज्ञ को करता है उसको
वह परमगति देकर संसार बंध
न से छुड़ा देता है नक्षत्रने
मिर्नक्षत्री नक्षत्र में चन्द्रमा
जैसे अर्थात् चन्द्रमा रूप भग
वान् ने कहा है कि नक्षत्रों में
चन्द्रमा मैं हूं क्षमः सम्पूर्ण
जगत् बरताने की समर्थ है
अर्थात् सब बातों की साम
र्थ्य रखना है और सब बा
तों के सहने में पृथ्वी के स
दृश है क्षामः सबजगतको

جسکو یہ وہ ذات ہے کہ باوجود حاصل
ہونے سب قدرت کے غرور نہیں
رکھتا ہے استھوشٹھو بہت استھول
ہے یعنی وہ ذات ہے کہ کل عالم اُس
سے قائم ہے چنانچہ بید مین کہا ہے کہ
کرۂ آتش اُسکا سر ہے اور آفتاب
ماہتاب اُسکی آنکھیں ہیں بھُو
ست روپ ہے دھرم یوپو بھگ
دھرم کے بس ہے یعنی وہ ذات ہے کہ جگ
کرکے سب اعمال قائم ہیں مہا مکھہ
بڑا ہی ہے جگ جسکی یہ وہ ذات ہے کہ جو کوئی
جگ نیت کرکے اُسکے بہت کرے اُسکو قید
عالم سے خلاصی بخشے نکشترنیمر نکشتری
نکشتروں مین چندرماں جیسے یعنی چندرماں
روپ سری بھگوان نے کہا ہے کہ ستاروں
مین چاند مین ہوں کشمہ سب جگت کو
برتاونے کو سمرتھ ہے یہ وہ صفت ہے
کہ سب افعال پر قدرت رکھتا ہے
اور تحمل وبردباری مین مثل زمین کے
ہے یعنی سبکی تقصیرات کو معاف کرتا
ہے کشامہ سب جگت کو

मनुष्य उसको नित्यानन्द समझ कर उसकी चाहना करते हैं अपनर्थो नहीं है प्रयोजन जिस को धर्म्म अर्थ काम मोक्ष से **महाकोषो** बहुत खजाना रखता है अर्थात् प्राणमय ज्ञानेन्द्री विज्ञान आनन्द स्थूल शरीर कारण इत्यादि इस वास्ते कि खजाना बहुत रखता है इससे उसका नाम महाकोष है **महाभागो** बड़ा है भाग जिसका अर्थात् बड़े आनंद रूप है **महाधनः** बड़ा धन वाला है अर्थात् सम्पूर्ण धन धान्य को जो सुख और आनन्द का कारण है उसने उत्पन्न किया है ॥ ६४ ॥

मू॰ अनिर्विर्णः स्थविष्ठो भूर्धर्म्मयूपो महामखः । नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ६५ ॥

टी॰ **अनिर्विर्णः** नहीं है घमण्ड

مردم اُسکو راحت سرمدی جان کر اُسکے طالب ہیں انرتھو نہیں ہے پریوجن جسکو دھرم اور ارتھ اور کام اور موکش سے **مہاکوشو** بہت خزانہ رکھتا ہے یعنی پران ستہت گیان اندری بگیان آنند استھول شریر کارن وغیرہ اسواسطے کہ خزانہ بہت رکھتا ہے اس وجہ سے اُسکا نام مہاکوش ہے۔ **مہابھاگو** بڑا ہے بھوگ جسکا یعنی صاحب عیش و عشرت عظیم کا ہے **مہادھنہ** بڑا ہے دھن جسکا یعنی یہ وہ ذات ہے کہ تمام دولت کو جو باعث حصول لذت و عیش کی ہے پیدا کرتا ہے

اشلوک ۶۵

انربنہ۔ استھوشٹو بھوردھرم یوپو مہامکھہ۔ نکشتر نیمر نکشتری کشمہ کشامہ سمی ہنہ

ٹیکا ۶۵

انربنہ نہیں ہے گھمنڈ

दक्षो सम्पूर्ण कार्य्यों को शीघ्र क
रता है **विश्रामो** मोक्ष को देता
है अर्थात सम्पूर्ण सृष्टि को जो
उसका ध्यान करता है मुक्ति दे
ता है **विश्वदक्षिण:** सब
जगत् में चतुर है सब कर्म्मों
का जानने वाला है ॥ ६३ ॥

मू० विस्तार: स्थावर: स्था
णु: प्रमाणं बीजमव्ययं ।
अर्थोनर्थो महाकोशो महा
भागो महाधन: ॥ ६४ ॥

टी० **विस्तार:** सम्पूर्ण जग
त् जिसमें विस्तार को प्राप्त
हो **स्थावर:** शील स्वभाव है
अर्थात धीर है और सब को
धीरता देता है **स्थाणु** जिस
में पृथ्वी पानी आदि कि स्थित हों
प्रमाणं प्रमाण करने वाला है
और प्रकट है **बीजमव्ययं**
अविनाशी है और उसके बीज
से नाना प्रकार की प्रजा उत्पन्न
हुई हैं **अर्थो** सब जिसकी
प्रार्थना करैं और वह ऐसा है कि

وکشو یعنی سب کاموں کو جلد کرتا ہے وشرامو
موکش کو دیتا ہے یعنی وہ ذات ہے کہ تمام
عالم کو جو اسکا دھیان کرتا ہے نجات
دیتا ہے بشو دکشن یعنی سب جگت
سے چتر ہے یہ وہ ذات ہے کہ دانا ہے
تمام افعال و اعمال ہے

اشلوک ۶۴

بستارہ استھاورہ استھانُ
پرمانگ بیج مبیہ یک - ارتھو
نرتھو مہاکوشو مہابھگو مہادھنہ

ٹیکا ۶۴

بستارہ تمام عالم جس سے وسعت پاوے
استھاورہ شیل سبھاو والا ہے یعنی وہ
ذات ہے کہ خود قائم ہے اور سب چیزوں کو
قیام بخشتا ہے **استھانُ** جس میں پرتھی
آپت وغیرہ قیام کریں **پرمانگ** پرمان
کرنیوالا ہے یعنی وہ ذات ہے کہ ظاہر ہے **بیج مبیہ**
ینگ ابناشی ہے یعنی وہ ذات ہے کہ جسکے
تخم سے طرح طرح کی خلقت ظاہر ہوئی ہے
ارتھو سب جسکی استت کرتے ہیں یہ وہ ذات ہے کہ

कहा है कि अधोक्षजः उसको कहते हैं कि जो सब जगह उत्पन्न होये ॥ ४२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥

मू० ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः । उग्रः सम्वत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ६३ ॥

टी० ऋतुः समय रूप है अर्थात् सब ऋतु उसी का रूप है सुदर्शनः सुख पूर्वक भगवान् को देखै अर्थात् वह ईश्वर ऐसा है कि जिसके दर्शन से मनुष्य विरक्त होकर मुक्ति को प्राप्त होता है कालः सबको गिन लेता है अर्थात् समयरूप है परमेष्ठी हृदय में रहने वाला है अर्थात् जो उसकी शरण जावै उसको बन्धन से छुटा देवै परिग्रहः शरण आने वालों को हाथ आवै जैसे प्रह्लाद को उग्र सम्वत्सरो सूर्य्यादिक को भय देने वाला है अर्थात् गहन से भय नाश होना ने का है सम्पूर्ण प्राणी जिसमें हैं

کہا ہی کہ ادھوکشی اُسکو کہتے ہیں جو سب جگہ پیدا ہو —

اشلوک ۶۳

رِتُھ سُدرشنہ کالہ پرمیشٹھی پرگرہہ۔ اُگرہ سمبت سرو دکشو بشرامو بشودکشنہ —

ٹیکا

رِتُھ کال یعنی سمی روپ ہی وہ صفت ہی تمام موسم کی صورت ہی سُدرشنہ سکھہ پورَبک بھگون کو دکھائی دیتا ہی یہ وہ ذات ہی کہ جسکے دیدار زیبا سے دولت آزادی حاصل ہوتی ہی کالہ سبکو گن لیتا ہی یعنی شمار کر لیتا ہی یعنی ہمہ صفت زمانہ کے ہی پرمیشٹھی ہردی میں رہنے والا ہی یہ وہ صفت ہی کہ جو پناہ اُسکی لیوی اُسکو بلا سے چھڑا دے پرگرہہ شرن آنے والونکو ہاتھ آتا ہی جیسے پرہلاد کو اُگرہ سمبت سرو سورج آدک کو بھی ڈر دینے والا ہی یعنی گرہن سے خوف فنا کا ہی سب پران جسمین ہیں

और वायुरूप होकर सबको चै-
तन्य करता है प्राणदः प्राणोंका
संहार करता है और प्रलयकालमें
सबको अपने में खींच लेता है
प्रणवः सब वेद नमस्कार करैं जि-
सको तथा सनत्कुमारने कहा है
कि प्रणव वह है जिसको सब नम-
स्कार करैं पृथुः जगत स्वरूप है अ-
र्थात् संसारमें प्रकट होकर सब
को सावधान करता है हिर-
ण्यगर्भः सम्पूर्ण जगत जि-
स में हो यह गुण उस परमेश्वरमें
है कि अण्डेके सदृश होकर सृष्टि
को अपने पेट से उत्पन्न करता है
शत्रुघ्नः देवताओं के शत्रुओंको
मारनेवाला है व्याप्तः सब का-
र्यों में कारण रूप होकर व्याप्त है
वायुः गन्धरूप है अर्थात् श्रीभ-
गवान ने अर्जुन से कहा है कि हे
अर्जुन सुगन्ध में मैं हूं अधोक्ष-
जः जन्म मरण करके रहित है
और वह ऐसा है कि किसी काल
में बलसे रहित नहीं है महाभारत में

یہ وہ ذات ہی کہ بصورت باد یعنی ہوا ہوکر
سبکو ہوشیار کرتا ہی پران وہ پران
کو سنگھار کرتا ہی یہ صفت اُس ذات کی
ہی کہ وقت قیامت کے سب انفاس کو
اپنے مین یکجا کرلیتا ہی پرنو وہ سب
بید نمسکار کرتے ہین جسکو چنانچہ
سنت کمار نے کہا ہی کہ پرنو وہ ہی
جسکو سب سجدہ کرین پرتھو
جگت روپ ہی یہ وہ صفت ہی کہ تمام
عالم مین ظاہر ہوکر سب کو آگاہ کرتا ہی
ہرنگیہ گربھ سب جگت جسمین ہو
یہ صفت ذات اُس پرمیشور کی ہی کہ مانند
بیضہ کے محل تخم پیدائش تمام عالم کا
اُسکے شکم مین ہی سترگھنو دیوتاون
کے دشمنونکو مارنے والا ہی بیاپتو
سب کارج مین کارن روپ ہوکر بیاپت
ہی بایو گندھ روپ ہی چنانچہ سری
بھگوان نے ارجن سے کہا ہی کہ
ہے ارجن خوشبو مین مین ہون ادھوکشجو
جنم مرن سے رہت ہی اور یہ وہ ذات
ہی کہ کسیوقت بے قوت نہو مہابھارت مین

देने वाला नहीं है नेयो जीव
को ब्रह्म रूप कर देता है न्याया-
त मनुष्यों को दयालुता और
कृपालुता सिखाता है नयो
नयः मोक्ष को प्राप्त कर देता
है और नहीं है परमाण प्रेरने वा-
ला जिस का वीरः कर्म जा-
ना है शक्तिमतां श्रेष्ठो
शक्ति वालों में श्रेष्ठ है धर्मो
सब प्राणियों का धारण करने
वाला है धर्मविदुत्तमः
धर्म जानने वालों में उत्तम है ६१।

मू॰ वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः
प्राणदः प्रणवः पृथुः।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्या
प्तो वायुरधोक्षजः। ६२।

टी॰ वैकुण्ठः नहीं है संकोच
जिस को और वह ऐसा है कि जि-
स ने पृथ्वी को पानी पर और वायु को
आकाश में ठहरा रक्खा है पुरु-
षः मनुष्यों के सब पापों को भ-
स्म करता है और सब के पहिले है
प्राणः क्रिया शक्ति वाला है

دینے والا نہیں ہے نیتو جیو کو برہم روپ
کر دیتا ہے یعنی آدمیونکو رحم و عنایت
سکھلاتا ہے نیتو نیہ موکش کو پراپت
کر دیتا ہے اور نہیں ہے پران پریرنے والا
جسکا ویرہ کرم والا ہے شکت
متانگ شریشٹھو شکتی والوں
مین شریشٹھ ہے دھرمو سب پرانیوں
کا دھارن کرنے والا ہے دھرم وِدُتّم
دھرم جاننے والون مین اُتّم ہے

اشلوک ۶۲

ویکنٹھہ پرشہ پرانہ پرانَدو
پرنوہ پرتھہ ۔ ہرنیہ گربھہ
شترگھنو ویاپتو وایوردھوکشجہ

ٹیکا ۶۲

ویکنٹھ نہیں ہے سنکوچ جسکو وہ ذات
ہے کہ جسنے زمین کو پانی پر اور ہوا کو آسمان پر
قائم کیا ہے پرشہ سب پاپوں کو بھسم کرتا ہے
یہ وہ ذات ہے کہ سب سے اول
ہے اور تمام گناہ آدمیون کے معدوم
کرتا ہے پرانہ کریا شکت والا ہے

स्थित है सन्तुष्टः सम्पूर्ण गुणों
वार के मुक्त है और सब स्थानों
में वर्तमान है मुमुक्षाणाः
म रहे हैं नेत्र जिस के और ऐ
सा है कि मुमुक्षु को मुक्ति दे
ना है और अज्ञान को दूर क
रता है ॥६०॥

मू० रामो विरामो विरजो
मार्गो नेयो नयो नयः। वी
रः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो
धर्मविदुत्तमः ॥६१॥

टी० रामो सब योगी जिस में
रमण करें उस को राम और प
रब्रह्म कहते हैं विरामो सब
प्राणी जिस में लीन होजावें अ
र्थात् वह ऐसा है कि जिस में स
ब सृष्टि अन्त को मिल जाती
है विरजो नहीं है विषय की
इच्छा जिस को अर्थात् वह ई
श्वर सकल दुःखों से परे है औ
र वेदों में भी कहा है कि वह प
वन से भी अधिक पवित्र है मा
र्गो मोक्ष का उपाय है अर्थात् सिवा
य उस के और कोई दूसरा मोक्ष का

قائم ہے سنتشٹ سنتوکھ کو ہدایت ہے
تشٹ ہے سب گن کے مکت ہوا ہے
وہ ذات ہے کہ سب جگہ پر موجود ہے
ستھیکش آنکھیں ہیں جسکے یہ وہ ذات
ہے کہ خواہندگان نجات کو نجات دے اور
غفلت کو معدوم کرے

اشلوک ۶۱

رامو برامو برجو مارگو نیو نیو نیہ
بیرہ شکت متا شریشٹو
دھرمو دھرم بدتمہ

ٹیکا ۶۱

رامو سب جوگی جسمیں رمن کریں اسکو
رام اور پربرہم کہتے ہیں برامو سب
پرانی جسمیں لین ہوجاویں یعنی وہ ذات
ہے کہ جسمیں تمام جہان آخر کو مل جاوے
برجو نہیں ہے بشے کی اچھا جسکو یعنی یہ
صفت اس ذات میں ہے کہ کلفت اور
کدورت سے پاک ہے بید میں بھی کہا ہے
کہ وہ پون سے بھی پوتر ہے مارگو موکش
کا اپائے ہے یعنی یہ وہ ذات ہے کہ
سوائے اسکے اور کوئی دوسرا نجات کا

टी· व्यवसायो निश्चय रूप व
ह ईश्वर है कि संसार रूप प्र
कर है व्यवस्थानः सम्पू
र्ण जगत् को अलग अलग
स्थित करने वाला है अर्थात
सकल सृष्टि उसके ज्ञान और
अज्ञान से वर्त्तमान है संस्था
नः पहिले प्रकार जो स्थित हो
क्षीर सागर में योगियों के हृ
दय में सूर्य्य मण्डल में उस ई
श्वर का स्वभाव है कि अंतको
उसके होने के वास्ते यह स्थान
अच्छे हों स्थानदो स्थान दे
ने वाला है अर्थात् वह ऐसा है
कि ध्रुव इत्यादि को उनके कर्मा
नुसार स्थान देता है ध्रुवः स्थिर
है अर्थात् वह ईश्वर ऐसा है कि
अविनाशी है और किसी तरह
से कभी नाश को प्राप्त नहीं हो-
ता परर्द्धिः परम है ऐश्वर्य्य अ
र्थात् ऋद्धि वाला है यह उसमें
गुण है कि विभव अत्यन्त रख
ता है परमस्पष्टः आत्मा में प्र
काशवान है और प्रकाश रूप
होकर केवल आप ही आप

ٹیکا

بیوسایو نشچے روپ ہے وہ ذات
ہے کہ بصورت عالم ہے بیوستھانہ
تمام عالم کو علیحدہ علیحدہ قائم کرنیوالا
ہے یعنے وہ صفت ہے کہ تمام عالم حیوانات
ونبہیات ومکروہات وغیرہ بعلم اسکے
حاضر وموجود ہے سنستھانہ پہلے
پرکار جو استحقت ہو چھیر ساگر مین یا
جوگیون کے ہردے مین یا سورج منڈل
مین اس ذات کی یہ صفت ہے کہ آخر کو
واسطے ہونے اسکے کے یہ مقامات
اچھے ہون استھان دو
استھان دینے والا ہے یہ وہ ذات ہے کہ
قطب وغیرہ کو موافق عمل کے جگہ بخشتا ہے
دھروہ قائم ہے یعنے وہ ذات ہے کہ لازوال
ہے اور کسیوجہ سے فنا اسپر گذر نکرے پرردھ
پرم الشور ج والا ہے یہ صفت اس ذات
کی ہے کہ دولت وحشمت اعظم رکھتا ہے
پرمسپشٹ آتما مین پرکاش وان ہے
وہ ذات ہے کہ بصورت عقل محض خود بخود

करणं कारणं कर्ता वि-
कर्ता गहनो गुहः ॥ ५९ ॥
टी॰ उद्भवः सारा जगत जिससे
पैदा हुआ क्षोभणो मायाओ
र पुरुष को उत्पत्ति में लगावै-
देवः प्रकाश रूप है श्रीगर्भः
लक्ष्मी है गर्भ में जिसके परमे-
श्वरः सब से अधिक ईश्वर है
करणं सिद्ध करनेवाला है का-
रणं करनेवाला है कर्ता बनाने
वाला है विकर्ता रूप जगत को
अनेक प्रकार को बनाता है गह-
नो दुःख करके जानने योग्य है गु-
हः अपनी माया करके अपने रू-
प में लुके अर्थात अपने आपको
संसार रूप में छिपावे ॥ ५९ ॥
मू॰ व्यवसायो व्यवस्थानः
संस्थानः स्थानदो ध्रुवः पर
र्द्धिः परमः स्पष्टस्तुष्टः पु-
ष्टः शुभेक्षणः ॥ ६० ॥

کرن کارن کرتا بکرتا گہنو گہہ
۵۹
اُدبھو تمام عالم جس سے پیدا ہوا
کشوبھنو مایا اور پرش کو اتپت
میں لگاتا ہے دیو پرکاش روپ
ہے شری گربھ لکشمی جسکے گربھ
میں ہے پرمیشور سب سے ادھک
ایشور ہے کرن سدھ کرنے والا ہے
کارن کرنے والا ہے کرتا کرتی ہے
بکرتا تمام جگت کو انیک پرکار کا بناوے
گہنو دکھ کرکے جاننے جوگ ہے گوہ
اپنی مایا کرکے اپنے روپ میں لکے یعنی
وہ صفت ہے کہ اپنے آپکو بیچ صورت
عالم کے پوشیدہ کرے

اشلوک

۶۰
بیوسایو ویوستھانہ سنستھانہ
استھان دو دھرو وہ
پرردھی پرمہ سپشٹ
تشٹہ پشٹہ شبھیکشنہ

दूसरा अर्थ यह है कि उसके पेट
में सब सृष्टि है और तीसरा अर्थ
यह है कि श्री कृष्णजी को यशो
दाजी ने रस्सी से बाँधा था सहः
सहने वाला है अर्थात् किसी के
बुराई करने से बुरा नहीं मानता
यह गुण केवल ईश्वर ही में है
महीधरो पृथ्वी का धारण क
रने वाला है अर्थात् पहाड़ होकर
पृथ्वी को स्थित किये है विष्णु
पुराण में लिखा है कि जंगल
और पहाड़ और दिशा सब उ
सी का रूप है महाभागो
बड़ा है भाग जिन का और व
ह ईश्वर ऐसा है कि अपनी इ
च्छा से संसार में प्रकट हुआ
जैसे श्री कृष्णावतार और रामा
वतार वेगवान् मन से भी
अधिक है वेग जिनका अमिता
शनः बे प्रमाण है भोजन जिन
का अर्थात् प्रलय के समय स
ब सृष्टि को खा जाता है॥ ५८॥

मू. उद्भवः क्षोभणो दे
वः श्रीगर्भः परमेश्वरः॥

اور یہ ذات ہی کہ ساتھ ضبط حواس ظاہر و
باطن کے اُسکو نہ پا سکے اور دوسرے معنی
یہ ہین کہ اُسکے پیٹ مین تمام عالم ہی اور
تیسرے معنی یہ ہین کہ شری کرشن مہاراج
کو جسودا جی نے رسی سے باندھا تھا۔
سہ سہنے والا ہی یعنی کسیکے برائی کرنے
سے برا نہین مانتا یہ صفت صرف ذات
پرمیشور مین ہی مہی دھرو پرتھوی کا
دھارن کرنیوالا ہی یعنی بشکل پہاڑ ہو کر
زمین کو قائم رکھا چنانچہ بشن پران مین
لکھا ہی کہ صحرا و کوہ و جملہ اطراف صورت
اُس پرمیشور کی ہی مہا بھاگو بڑا ہی
بھاگ جسکا اور یہ وہ ذات ہی کہ بخواہش
اپنے عالم مین ظہور کیا جیسے شری کرشن
اور رام اوتار بیگوان من سے بھی زیادہ
ہی بیگ جسکا یعنی اندیشہ دل سے بھی
زیادہ تیز رفتار امیتاشنہ بے پایان ہی خورش
جسکا یعنی قیامت مین سب جہان کو کھا جاتا ہی

اشلوک

اُدبھوہ کشوبھنو دیوہ
شری گربھہ پرمیشورہ

भीम और सूर्य्यादि जिस से डरते
है समयज्ञो उसकि पालन
संहार का जान्ने बाला है हवि
र्हरिः यज्ञ के भागों का लेनेवा
ला है हवि के अर्थ यह है कि जो
कुछ होम में जल जाय और हरि
के अर्थ यह है कि सब पापों को
हर के मनुष्य को शुद्ध करदेवे
सर्व्वलक्षण सारे लक्षणोंक
को देखता है लक्षण्यो दे
खता हुआ है लक्ष्मीवान्
लक्ष्मी वाला है समितिंजयः
संग्राम का जीतने बाला है ॥५७॥

मू॰ विक्षरो रोहितो मार्गो
हेतुर्दामोदरः सहः । म-
हीधरो महाभागो वेगवा
नमिताशनः ॥ ५८ ॥

टी॰ विक्षरो अविनाशी है रो-
हितो लाल है वर्ण जिनका
मार्गो मुक्ति की इच्छावालोंको
विचारने योग्य है हेतुःमुक्ति
का देने बाला है दामोदरः र-
स्सी जिसके उदर में बंधी हुई है

بھیم اور سورج وغیرہ جس سے ڈرتے
ہین سمیگیو اتپت پالن سنگھار کا جاننے
والا ہے ہبر ہرہ جگ کے بھاگون کا لینے
والا ہے ہبر کے یہ معنی ہین کہ جو کچھ ہوم مے
جل جاے اور ہرہ کے یہ معنی ہین کہ سب
گناہون کو بخش کر آدمی کو پاک کر دے
سرب لکشن لکشنیو سب لکشنون
کو دیکھتا ہے لکشمی وان
دولت مند ہے ستمتم جیہ
سنگرام کا جیتنے والا ہے

اشلوک ۵۸

بکشرو روہتو مارگو ہیتر دامودرہ
سہہ - مہی دھرو مہا بھاگو
بیگ وان متاشنہ

ٹیکا ۵۸

بکشرو ابناشی یعنی لازوال ہے روہتو
لال ہے رنگ جسکا مارگو مکت کی اچھا
والون کو بچارنے جوگ ہے ہیتو مکت
کا دینے والا ہے دامودرہ رسّی
جس کے پیٹ مین بندھی ہوئی ہے

मू॰ युगादिकृद्युगावर्त्तो
नैकमायो महाशनः। अदृ-
श्यो व्यक्तरूपश्च सहस्र
जिदनन्तजित् ॥ ५१ ॥

टी॰ युगादिकृत् जगत् का आ-
दि करनेवाला है युगावर्त्तो यु-
गों का वर्त्तावने वाला है नैकमा
यो नहीं है एक माया जिसके म-
हाशनः बड़ा है भोजन जिस
का अर्थात् सब संसार को एक
ग्रास करके समाप्त करता है अ-
दृश्यो देखने में नहीं आता है य-
ह भी ईश्वर का एक गुण है कि इ-
न्द्रियों से परे है व्यक्तरूपः
स्वयंप्रकाश है रूप जिसका अ-
र्थात् सृष्टि रूप होकर आप ही
प्रकट और प्रकाशित है सहस्र
जित् हजारों को जीतने वाला
है अनन्तजित् बहुतों को
जीतने वाला है ॥ ५१ ॥

मू॰ इष्टो विशिष्टः शिष्टे
ष्टः शिखण्डी नहुषो वृ-
षः। क्रोधहा क्रोधकृत्कर्त्ता

اشلوک ۵۱

جگادکرد جگاورتو نیک مایو
مہاشنہ ۔ ادرشیو ویکت روپش
سہسر جدننت جت ۔

ٹیکا ۵۱

جگادکرد جگ کا آدِ کرنے والا ہے جگاورتو
جگوں کا برتانے والا ہے نیک مایو
نہیں ہے ایک مایا جسکے مہاشنہ بڑا ہے
بھوجن جسکا یعنی یہ وہ ذات ہے کہ تمام عالم
کو آخر کار ساتھ ایک لقمہ کے تمام کریگا
ادرشیو دیکھنے میں نہیں آتا ہے یہ بھی
ایک صفت ذات پرمیشور کی ہے کہ حواس
خمسہ میں گنجایش پذیر نہیں ہے ویکت
روپہ سویم پرکاش ہے روپ جسکا
یعنی آپ ہی بصورت عالم باختیار خود ظاہر
و روشن ہوا ہے سہسر جد ہزاروں کو جیتنے
والا ہے یعنی اوپر شیاطین کے بھی مظفر و منصور
اننت جت بے انتہا جیتنے والا ہے ۔

اشلوک ۵۲

اشٹو وششٹہ ششٹشٹہ شکھنڈی
نہکھو ورکھہ ۔ کرودھہا کرودھکرت

शशबिन्दुः खरगोश की ऐसी बिन्दी है जिसके सुरेश्वरः देवताओं का मालिक है औषधं भक्तों की दवा है जगत्सेतुः जगत का पुल है सत्यधर्म्मपराक्रमः सत्य और धर्म्म का पराक्रम है जिसको ॥ ४९ ॥

मू॰ भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनो नलः। कामहा कामकृत् कान्तः कामी कामप्रदः प्रभुः ॥ ५० ॥

टी॰ भूतभव्यभवन्नाथः हो गया होगा है इन तीनों का मालिक है पवनः सारे जगत् को पवित्र करने वाला है पावनो पवित्र मानी पाक ज़ात है अनलः प्राणों का धारण करने वाला है कामहा भक्तों का कामदेव दूर करने वाला है कामकृत् साधुओं के काम पूरे करै कान्तः सुन्दर है कामी मोक्ष चाहनेवाले जिस की कामना करैं हैं कामप्रदः कामना का देने वाला है प्रभुः समर्थ है ॥ ५० ॥

ششبندہ خرگوش کی ایسی بندی ہے جسکے سریشورہ دیوتاون کا مالک ہے اوکھدھنگ بھگتون کی دوا ہے جگت سیتہ جگت کا پل ہے ستیہ دھرم پراکرمہ اچھے گیان کا پراکرم ہے جسکو۔

اشلوک

۵۰

بھوت بھبیہ بھونناتھہ پونہ پاونو نلہ۔ کامہا کامکرت کانتہ کامی کام پردہ پربھہ

ٹیکا

بھوت بھبیہ بھونناتھہ ہوگیا ہوگا ہے ان تینون زمانونکا مالک ہے پونہ سب جگت کو پوتر کرنیوالا ہے پاونو سب جگہ پاک ہے انلہ پرانون کا دھارن کرنیوالا ہے کامہا بھگتون کا کام دور کرنیوالا ہے کامکرت سادھو لوگون کی منورتھ پورن کرنے والا ہے کانتہ سندر ہے کامی موکش چاہنے والے جسکی اچھا کرتے ہیں کامپردہ کامنا کا دینے والا ہے پربھہ سمرتھ ہے۔

मू॰ ओजस्तेजोद्युतिधरः
प्रकाशात्माप्रतापनः। ऋ-
द्धः स्पष्टाक्षरोमन्त्रश्चन्द्रां-
शुर्भास्करद्युतिः॥ ४८॥

टी॰ ओजस्तेजोद्युतिधरः
प्राण का बल तेज प्रकाश का धा-
रण करने वाला प्रकाशात्मा
ज्ञान रूप है आत्मा जिसकी प्र-
तापनः जगत् का प्रकाश क-
रने वाला जैसे सूर्य्य और चन्द्र-
मा ऋद्धः धर्म्म ज्ञान वैराग का
आसरा स्पष्टाक्षरो ओंकार
है अक्षर जिसका मन्त्रः शुभ का जानने
वाला है चन्द्रांशुः चन्द्रमा है कि-
रण जिसकी भास्करद्युतिः
सूर्य्य है प्रकाश जिसका॥ ४८॥

मू॰ अमृतांशूद्भवो भा-
नुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः
औषधं जगतः सेतुः स-
त्यधर्म्मपराक्रमः। ४९।

टी॰ अमृतांशूद्भवो अमृत
रूपी किरणों से पैदा हुआ अर्थात्
औषधि भानुः प्रकाशवाला है

اشلوک
۴۸
اوجس تیجو دیوت دھرہ پرکاشا
تما پرتاپنہ ۔ رِدّھا اسپشٹاکشرو
منترش چندراً نشربھاسکر دیوتہ

ٹیکا
۴۸
اوجس تیجو دیوت دھرہ پران کا
بل تیج پرکاش دھارن کرنے والا ہے
پرکاشاتما گیان روپ ہے آتما جسکا
پرتاپنہ جگت کا پرکاش کرنیوالا ہے جیسے
سورج اور چندرماں رِدّھہ دھرم گیان
بیراگ کا آسرا ہے اسپشٹاکشرو اونکار ہے
اچھر جسکا منترہ شُبھ گت کا جاننے والا ہے چندراَنشُہ
چندرماں ہے کرن جسکی بھاسکر دیوتہ
سورج ہے پرکاش جسکا ۔

اشلوک
۴۹
امرتانگ شودبھوو بھانہ ششش
بندو سریشورہ ۔ اوکھدھنگ
جگتہ سیتہ ستیہ دھرم پراکرمہ ۔

ٹیکا
۴۹
امرتانگ شودبھوو امرت روپی کرنوں سے
پیدا ہوا یعنی اوکھدھ بھانہ پرکاش والا ہے

दानादिक दिया उसको बढ़ा-
ता है वर्द्धमानश्च ब्रह्मादि-
क सम्पूर्ण प्रजा को बढ़ाता है
विविक्तः उत्पत्ति रहित है
श्रुति सागरः सकल वेदों
का समुद्र है ॥ ४६ ॥

मू. सुभुजो दुर्द्धरो वाग्मी
महेन्द्रो वसुदो वसुः । नैक
रूपो बृहद्रूपः शिपिवि-
ष्टः प्रकाशनः ॥ ४७ ॥

टी. सुभुजो अच्छे हैं भुजा जि-
सके अर्थात् वह संसार की र-
क्षा के वास्ते अच्छे भुजा रख-
ता है दुर्द्धरो दुःख करके धा-
रणा होती है जिसकी वाग्मी
वेद वाणी का पैदा करने वाला है
महेन्द्रो ब्रह्मादिक का पति
है वसुदो धन दायक है वसुः
वायु रूप है नैकरूपो अनेक
रूप है बृहद्रूपः बड़ा है रूप जि-
सका शिपिविष्टः जग के जीवों में
वास करने वाला है प्रकाशनः
प्रकाश करने वाला है ॥ ४७ ॥

دان وغیرہ دیا اُسکو بڑھاتا ہے۔
بردھمانشچ برہما وغیرہ سب
پرجا کو بڑھاتا ہے بِوِکتہ اُتپت
سے رہت ہے سُرت ساگرہ تمام
بیدون کا سمندر ہے

اشلوک

سُبُھجو دُردھرو باگمی مہیندرو
بسدو بسُہ۔ نیک روپو برہد
روپہ شپ وشٹہ پرکاشنہ۔

ٹیکا

سُبُھجو اچھے ہین بھجا جسکے یعنی وہ ذات
ہے کہ جسکے بازو واسطے محافظت خلائق کے
بہت اچھے ہین دُردھرو مشکل سے دھارن
ہوتا ہے باگمی بید بانی کا پیدا کرنیوالا ہے
مہیندرو برہما وغیرہ کا پت ہے بسدو
دھن دینیوالا ہے بسُہ باؤ روپ ہے
نیک روپو انیک روپ ہین برہد روپ
بڑا ہے روپ جسکا شپ وشٹہ جگت
کے جیوون سے نواس کرنے والا ہے
پرکاشنہ پرکاش کرنیوالا ہے۔

स्वरूप जिसका **विशिष्टः** सब से अधिक है **शिष्टकृत्** अच्छे आचारों की पालना करने वाला है **शुचिः** सिद्ध है **सिद्धार्थः** सिद्ध है अर्थ जिसके **सिद्धसंकल्पः** सिद्ध हैं संकल्प जिस के अर्थात् चित्त उस का परमानन्द है **सिद्धिदः** कर्म्म का फल देने वाला है **सिद्धिसाधनः** सिद्धियों का सिद्ध करने वाला है ॥ ४५॥

मू॰ वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः। वर्द्धनो वर्द्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ ४६ ॥

टी॰ **वृषाही** बारह दिन की यज्ञ करके सिद्ध हो अर्थात् शुभकर्म्म का उत्पन्न करने वाला है **वृषभो** भक्तों को कामनादे **विष्णुः** विशेषता करके सब में व्यापै अर्थात् अति शीघ्र गामी है **वृषपर्वा** नाना प्रकार की प्रजा उत्पन्न करै **वृषोदरः** बैल का उदर है अर्थात् सब संसार उसके पेट में है **वर्द्धनो** जो भक्तों ने

سروپ جسکا **بششٹہ** سب سے ادھک ہی **ششٹ کرت** اچھے آچارون کی پالنا کرنیوالا ہی **شچیہ** سدّھ ہی **سدّھارتھ** سدّھ ہین ارتھ جسکے **سدّھ سنکلپ** سدّھ ہی سنکلپ جسکا یعنی دل اُس کا بکمال آرام ہی **سدّھ دہ** کرم کا پھل دینے والا ہی **سدّھ سادھنہ** سدّھیون کا سادھنے والا ہی

اشلوک ۴۶

برکھاہی برکھبھو بشنُر برکھ پربا برکھودرہ - بردھنو بردھمانشچ بِبکتہ شرت ساگرہ

ٹیکا ۴۶

برکھاہی بارہ دن کی جگ کرکے سدّھ ہو یعنی پیدا کنندہ نیکو کاری ہی **برکھبھو** بھگتون کی کامنا پوری کرتا ہی **بشنُہ** خاص کر کے سب مین چلی یعنی نہایت تیز رو ہی **برکھ پربا** طرح طرح کی خلقت پیدا کرتا ہی **برکھودرہ** بیل کا پیٹ ہی جسکا یعنی تمام جہان اُسکے شکم مین ہی **بردھنو** جو بھگتون نے

टी॰ सुप्रसादः अच्छा प्रसन्न
है प्रसन्नात्मा सदा रहै प्र
सन्न आत्मा जिसकी विश्व
धृक् जगत् की रक्षा करै और
अपने ज्ञान ऐश्वर्य्य करके जग
त की संहार करै विश्वभुग्
विभुः प्रलय काल में जगत्
को संहार करै विराट रूप है सत्-
्कर्त्ता ब्रह्मा का सत्कार कर
ने वाला है सत्कृतिः ब्रह्मादि
कों का पूज्य है साधुः सब का का-
र्य्य सिद्ध करता है जह्नुः मनु-
ष्य और सब जीवों को संहार
करता है नारायणो जल है
स्थान जिसका और नर रूप है
नरः भक्तों को कर्म्म में लगा-
ना है ॥४४॥

मू॰ असंख्येयोऽप्रमेयात्मा
विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सि-
द्धिदः सिद्धिसाधनः ॥४५॥

टी॰ असंख्येयः असंख्य योनि
अप्रमेयात्मा नै इच्छा है

ٹیکا ۴۴

ستپرسادہ اچھا پرسن ہی پرسناتما
سدا رہی پرسن آتما جسکی بشودھر
جگت کی رچھا کرنے والا اور اپنے گیان
ایشورج کرکے جگت کو سنگھار کرنیوالا
بشوبھگ ببھہ پرلی کال مین
جگت کو سنگھار کرتا ہی براٹ روپ
ہو ستکرتا برمہا کا ستکار
کرنے والا ہی ستکرتہ برمہادکون
کا پوجیہ ہی سادھہ سب کا کارج
سدھ کرتا ہی جہنہ آدمی اور سب جیونکو
سنگھار کرتا ہی نارائنو جل ہی استھان
جسکا اور نر روپ ہی نرہ بھگتون کو
کرم مین لگاتا ہی

اشلوک ۴۵

اسنکھیو پرمے یاتما بششٹہ
ششٹکرت چھچہ سدھارتھہ
سدھ سنکلپہ سدھدہ سدھ ساودھنہ

ٹیکا ۴۵

اسنکھیو اسنکھ جون یعنی بے انتہا مظہر
کائنات ہی پرمے یاتما سب اچھا ہی

आवर्तनो उत्पत्ति और पालन और नाश करनेवाला और यह कि संसारी चक्र का फिराने वाला है निवृत्तात्मा ज्ञान करके हटा हुआ है संसार से आत्मा जिसका अर्थात् संसारी बन्धन से अलग है सम्वृतः पूर्ण शक्ति हो कर बढ़ा हुआ है अर्थात् संसार में गुप्त हो कर व्यापक है सम्प्रमर्दनः प्रलय काल में संसार को संहार करने वाला है अहः सम्वर्त्तको मन का बरताने वाला और रवो देने वाला है वह्निः जीव का बरताव करनेवाला है और महा प्रलय काल रूप है और यह उसके प्रताप की प्रसंशा है अनिलो नहीं है प्रमाण जिसका और यह कि अनादि है धरणीधरः पृथ्वी का धारण करने वाला है ॥ ५३॥

मू· सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः।
सत्कर्त्ता सत्कृतिः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः॥ ५४॥

ٹیکا

۵۳

آبرتو اتپت اور پالن اور سنگھار کرنے والا ہے اور یہ کہ دائرہ عالم کو گردان کرنیوالا ہے نبرتاتما گیان کرکے ہٹا ہوا ہے سنسار سے آتما جسکا یعنی قیود عالم سے پاک ہے سمبرت پورن شکت کرکے ڈھکا ہوا ہے یعنی پوشیدہ محیط عالم ہے سمپرمردنہ پرلی کال میں جگت کو مردن کرنے والا یعنی فنا کنندہ عالم ہے اہہ سمبرتکو دل کو برتانے والا اور سکھ دینے والا ہے بہنہ جیو کا برتاو کرنے والا اور بصورت قیامت کبری ہے اور یہ اسکے جلال کی صفت ہے انلو نہیں ہے پرمان جسکا اور یہ کہ ابتدا نہیں رکھتا ہے دھرنی دھرہ پرتھوی کا دھارن کرنے والا ہے۔

اشلوک

۵۴

سپرسادہ پرسناتما بشودھرگ بشوبھگ ببھہ۔ ستکرتا ستکرتہ سادھر جہنر نارائنو نرہ۔

टी॰ अग्रणीः आनन्द रूप को प्राप्त करदे और भी ढूंढने वाले को परम पद को पहुंचावे ग्रामणीः प्राणियों का प्रेरने वाला और संसार को सूधी राह पर रखने वाला और हर एक को कर्म का फल देने वाला है श्रीमान् शोभावाला न्यायो न्याय करके जाननेवाला अर्थात् न्याय करने वाला नेता सारे जगत को हरने वाला समीरणः सब को वायु रूप होकर हिलाने वाला अर्थात श्वास रूप होकर चैतन्य करता है सहस्रमूर्धा हजारों माथे हैं जिसके अर्थात हजार शिर रखता है विश्वात्मा सारे जगत की आत्मा है सहस्राक्षः हजारों आंखें रखता है सहस्रपात् हजारों पांव रखता है ॥ ४२॥

मू॰ आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः संप्रमर्दनः।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥ ४३॥

ٹیکا

۴۲

اگرنیہ آنند روپ کو پراپت کر دے اور ڈھونڈنے والے کو پرم پد پہنچاوے گرامنیہ پرانیوں کو پریرنے والا اور خلائق کو راہ راست پر رکھنے اور ہر ایک کو جزائے اعمال پہنچاوے شری مان شوبھا والا ہے نیایو عدالت کا جاننے والا یعنی صاحب عدل ہے نیتا سب جگت کو ہرنے والا ہے سمیرنہ سب کو بایو روپ ہو کر ہلانے والا یعنی ہوشیار کرنے والا ہے بصورت نفس سہسر مورد ہا ہزاروں ہیں سر جسکے اور ہزار ہا مراد کثرت سے ہے بشواتما سب جگت کا آتما یعنی جان عالم ہے سہسر اکشہ ہزاروں ہیں چشم جسکے یعنی بے انتہا نگاہیں رکھتا ہے سہسر پات ہزاروں پانوں ہیں جسکے یعنی ہر جگہ جا سکتا ہے ایک ہی وقت میں۔

اشلوک

۴۳

آبرتنو نبرتاتما سمبرتہ سمپرمردنہ۔ اہہ سمبرتکو بہنرنلو دھرنی دھرہ۔

जिस की सर्व्वदृक् सब का देखने
वाला है सिंहः सिंह है अर्थात् दै-
त्य रूपी मृग का मारने वाला है सं-
धाता कर्म्म फल करके पुरुषों को
गति करने वाला और यह कि सृ-
ष्टि को प्रकट किया है संधिमा
न् कर्म्म फल का देने वाला है और
कर्म्म का फल भोगने वाला है-
स्थिरः एक तरह पर स्थिर है
अजो भक्त जनों के हृदय में
आने वाला अर्थात् गुप्त प्रकार में
आने वाला दुर्मर्षणः दुःख कर
के संभालने योग्य है और यह कि
कोई उसका सामना नहीं कर सक्ता है
शास्ता पुरुषों को कर्म्म का बना-
ने वाला विश्रुतात्मा विशेषता
करके विख्यात है स्वरूप जिसका
सुरारिहा देवताओं के शत्रु
लोगों का मारने वाला है ॥ ५० ॥

मू. गुरुर्गुरुतमो धाम
सत्यस्सत्यपराक्रमः । नि-
मिषो निमिषः स्रग्वी वाच-
स्पतिरुदारधीः ॥ ५१ ॥

टी. गुरुः तप का उपदेश करने वाला

جسکے سَرب دِرِک سب کا دیکھنے والا
یعنی سب باتوں کو دیکھتا ہی سنگھہ دیت روپی
مِرگ کا مارنیوالا ہی سَندھاتا کرم پھل
کرکے پرشون کو گت دینے والا ہی اور یہ کہ
پردۂ عدم سے عالم کو بمنصۂ شہود لایا ہی
سَندھمان کرم پھل کا بھوگنے والا اور دینیوالا
نتیجہ اعمال کا ہی استھرہ ایک طور پر قائم ہی
اَجو بھگتون کے ہردے مین یعنی ظاہر و باطن مین
آنیوالا ہی دُرمرکھنہ دُکھ کرکے سمھالنے جوگ ہی
اور یہ کہ شیطان مقابلہ اُسکا نہین کرسکتا ہی
شاستا پُرشون کا کرم بنانیوالا ہی
وِشرتاتما خصوصیت کے ساتھ ظاہر ہی
سروپ جسکا۔ سُراریہا دیوتاون
کے دشمنون کا مارنیوالا ہی

اشلوک

٥٠

گرُرگرتمو دھام ستیہ ستیہ
پراکرمہ۔ نمکھو نمکھہ سرگوی
باچسپت رُدار دھی

ٹیکا

٥١

گُرُہ تپ کا اپدیش کرنے والا

टी॰ मरीचिः किरणोंवाला सूर्य्य रूप है अर्थात् सब प्रकाश उससे प्रकाशित है दमनो दुष्टों को अपने धर्म्म पर लाने वाला अर्थात् कुकर्म्मी मनुष्यों को कुकर्म्म का दण्ड देता है हंसः संसार के बन्धन को दूर करने वाला और यह कि काल रूप हो कर सृष्टि को संहार करता है सुपर्णो सुन्दर हैं पंख जिसके अर्थात् गरुड़ रूप भुजगोत्तमः सर्प्पों में श्रेष्ठ जैसे शेष नाग सब सर्प्पों में श्रेष्ठ हैं हिरण्यनाभः सुन्दर है नाभि जिसकी सुतपाः सुन्दर है तप जिस का अर्थात् बद्री नाथ पद्मनाभः कमल है नाभि में जिसके प्रजापतिः सब सृष्टि ब्रह्मा आदि का मालिक है ॥ ३९ ॥

मू॰ अमृत्युः सर्व्वदृक्सिंहः संधाता संधिमान्स्थिरः। अजोदुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा॥४०॥

टी॰ अमृत्युः नहीं है मृत्यु

ٹیکا۔ مریچہ کرنوں والا یعنی سورج روپ ہی یعنی سب روشنی اُس سے روشن ہیں دمنو دشٹونکو اپنے دھرم پر لانیوالا یعنی بدون کو ساتھ سزاے اعمال بد کے پہنچاتا ہی ہنسہ سنسار کے بندھن کو دور کرنیوالا ہی اور یہ کہ بصورت قضا ہوکر موجودات عالم کو نسیت و نابود کرتا ہی سپرنو سندر ہیں پنکھ یعنی بازو جسکے گرڑ روپ کہ وقت پرواز کے ساتھ خوبی اور زیبائی کے نظر آتا ہی بھجگوتمہ سانپون مین سرشیٹھ یعنی افضل جیسے شیش ناگ یعنی بیچ خلقت اژدہا و ماران اُس سی بڑھکر اور کوئی نہین ہی ہرنیہ نابھہ سندر ہی نابہہ جسکی ستپاہ سندر ہی تپ جسکا یعنی بدری ناتھ روپ پدمنابھہ کمل کی ایسی ہی نابہہ جسکی۔ پرجاپتہ برمھادکونکا پت یعنی مالک موجودات ہی

اشلوک ۴۰

امرتیہ سرب درک سنگھہ سندھاتا سندھمان استھرہ۔ اجودرمرکھہ شاستا بشرتاتما سرارہا۔

ٹیکا۔ امرتیہ نہین ہی مرت

मू॰ महेष्वासो महीभर्त्ता श्रीनिवासः सताङ्गतिः अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः। ३८।

टी॰ महेष्वासो बड़ा है धनुष जिसका अर्थात् संसार की पालना और उत्पत्ति और नाश करता है महीभर्त्ता पृथ्वी का पति है श्रीनिवासः लक्ष्मी बसै है जिसके सताङ्गतिः सत् पुरुषों की गति है अनिरुद्धः नहीं है किसी शत्रु से रुकने वाला सुरानन्दो देवताओं का आनन्द देने वाला है गोविन्दो रसातल लोक से पृथ्वी का लाने वाला है गोविदांपतिः वेद के जानने वालों का पति है ॥ ३८॥

مू॰ मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः॥ ३९ ॥

اشلوک

۳۸

مہیشواسو مہی بھرتا شری نواس ستانگ گتہ - انردھہ سرانندو گوبندو گوبدانانگ پتہ

ٹیکا

۳۸

مہیشواسو بڑا ہی دھنکھ جسکا یعنی افزینش و پرورش و فنا سے عالم کرتا ہے مہی بھرتا پرتھوی کا پت یعنی مالک ہی شری نواس لچھمی بستی ہی جسکے ستانگ گتہ اچھے پرشون کی گت ہی انردھہ نہیں ہی کسی دشمن سے رکنے والا - سرانند و دیوتاون کا انند دینے والا ہی گوبندو رساتل نیچے پاتال لوک سے پرتھوی کا لانے والا ہی گوبدانانگ پتہ بید کے جاننے والونکا پت ہی یعنی دانندۂ کلام الہی -

اشلوک

۳۹

مریچردمنو ہنسہ سپرنو بھجگوتمہ ہرنیہ نابھہ ستپاہ پدمنابھہ پرجاپتہ -

आनन्द जिसको और यह कि बल और सामर्थ्य उसके बराबर किसी को नहीं है महाबलः बड़ा है बल जिसका अर्थात् उससे अधिक कोई बली नहीं है ॥ ३६ ॥

मू॰ महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः । अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ ३७ ॥

टी॰ महाबुद्धिः बड़ी है बुद्धि जिसकी महावीर्यः बहुत है पराक्रम जिसका महाशक्तिः बड़ी है शक्ति जिसकी महाद्युतिः बड़ी है शोभा जिसकी अनिर्देश्यवपुः लोकों से अद्भुत है रूप जिसका अर्थात् कोई उसका पता नहीं बतला सकता है और न कोई उसको देख सकता है श्रीमान् लक्ष्मी वाला है अमेयात्मा अप्रमाण है बुद्धि जिसकी अर्थात् कोई उसकी बुद्धि से नहीं पा सकता है महाद्रिधृक् मन्दराचल पर्वत का धारण करने वाला है ॥ ३७ ॥

آنند جسکو اور یہ کہ قوت اور زور اُسکے برابر کسیکو نہیں ہے مہابل بڑا ہے بل جسکا یعنی اُس سے زیادہ کوئی قوت نہیں رکھتا ہے

۳۷ اشلوک

مہا بدھر مہا بیریو مہا شکتر مہا دیوتہ انردیشیہ بپو شری مان سے یاتما مہادر دھرک ۔

ٹیکا ۳۷

مہا بدھ بڑی ہے بدھ جسکی یعنی سب ارباب دانش سے فائق تر ہے مہا بیریہ بہت ہے پراکرم جسکا مہا شکت بڑی ہے شکت جسکی یعنی قدرت بے انتہا رکھتا ہے مہادیوت بڑی ہے شوبھا جسکے انردیشیہ بپو لوگوں سے آدبھت ہے روپ جسکا یعنی اُسکو کوئی بتلا نہیں سکتا اور نہ دیکھ سکتا ہے شریمان لچھمی والا یعنی صاحب دولت عظمیٰ ہے اسے یاتما بے انتہا ہے بدھ جسکی یعنی کوئی اُسکو عقل سے نہیں پا سکتا ہے مہادر دھرک مندراچل وغیرہ بڑے بڑے پہاڑوں کا دھارن کرنے والا ہے

कीउलंघन करने वाला संग्रहः
संहार करने वाला सर्गो संसार
रूप अर्थात् सब का पैदा करने
वाला धृतात्मा जन्मरहित
नियमो प्रजा को अपने धर्म
में लगाने वाला यमः समाप्त
करने वाला है ॥ २५॥

मू॰ वेद्यो वैद्यः सदायोगी
वीरहा माधवो मधुः । अ-
तीन्द्रियो महामायो महो-
त्साहो महाबलः ॥ २६॥

टी॰ वेद्यः जिन को संसार में मु-
क्ति की इच्छा है उन का जानने
वाला और मुक्ति का देने वाला
वैद्यः सब अङ्गों और चारों वे-
दों का जानने वाला सदायोगी
सदा है योग जिसके वीरहा
दैत्यों को मारने वाला माधवो
ब्रह्म वेद का पति मधुः आन-
न्द दायक मधु की तरह अ-
तीन्द्रियो इन्द्रियों से रहित है
महामायो बड़ी है माया जि-
सकी महोत्साहो बड़ा है

کو اُلنگھن کرنے والا ہی سنگرہ پرلی کال
مین سنگھار کرنیوالا ہی سرگو سنسار روپ یعنی
آفرینندہ خلائق ہی دھرتاتما جنم رہت
دا اُپناسی ہی نیمو پرجا کو اپنے دھرم مین
لگانے والا ہی یمہ آخر کرنیوالا ہی

اشلوک ۲۶

بیدیو بیدیہ سداجوگی بیرہا
مادھو و مدھو۔ اتیندریو مہا
مایو مہوتسا ہو مہابلہ

اشلوک ۲۶

بیدیو جنکو سنسار سے مکت ہوجانیکی اچھا
ہی اُنکا جاننے والا اور مکت کا دینے والا ہی
بیدیہ سب انگون سمیت چارو بید کا جاننے
والا ہی سداجوگی سدا ہی جوگ جسکے
بیرہا دیتیون کا مارنے والا یعنی کشندہ
عفریتان ہی مادھو و برہم بید کا پت
ہی مدھو آنند روپ ہی یعنی مانند شہد
کے حلاوت بخش ہی اتیندریو اندریون سے
الگ یعنی حواس خمسہ نہین رکھتا ہی مہا مایو
بڑی ہی مایا جسکی یعنی اسکی مایا بہت
[illegible] مہوتسا ہو بڑا ہے

विश्वयोनिः जगत् की योनि
है अर्थात् उत्पत्ति का स्थान है पु-
नर्वसुः बारम्बार जीवों में बसै
अर्थात् देह में रहै ॥ ३४ ॥

मू. उपेन्द्रो वामनः प्रांशु-
रमोघः शुचिरूर्जितः । अ-
तीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृता-
त्मा नियमो यमः ॥ ३५ ॥

टी. उपेन्द्रः गोलोक में रहनेवा-
ला है और इन्द्र के छोटे भाई
राजा बलि को भी कहते हैं कि
जिनके वास्ते वामन अवतार
धारण किया वामनः वाम-
न रूप होकर राजा बलि के म-
द को दूर किया प्रांशुः सब से
ऊंचा है और जो कोई तीनों
लोक को तीन पैर से नापै उस
को भी प्रांशु कहते हैं अमोघः
नहीं है व्यर्थ चेष्टा जिसकी अ-
र्थात् जिस तरह पर जो कोई उस
को ध्यान करता है उस तरह पर व-
ह उसको पाता है शुचिः पापियों
को पवित्र करनेवाला है ऊर्जितः
अर्थात् जो बलवान है अतीन्द्रः इन्द्र

بشو یونیہ تمام دنیا کا محل آفرینش ہے
پنربسہ بار بار جیووں میں بسی یعنی شریر
میں آتا ہے وہ ذات ہے کہ محل آفرینش
تمام عالم کا ہے

اشلوک

۳۵

اپیندرو بامنہ پرانشر موگھہ شچ
رورجتہ ۔ اتیندرہ سنگرہ سر
گو دھرتاتما نیمو یمہ ۔

ٹیکا

۳۵

اپیندر وگولوک میں رہنے والا اور اندر کے
چھوٹے بھائی یعنی راجا بل کو بھی کہتے ہیں
جنکے واسطے باون اوتار دھارن کیا بامنہ
باون اوتار رکھکر راجا بل کا ابھمان دور کیا
پرانشہ سب سے اونچا ہے اور یہ کہ جو کوئی
تین لوک کو تین قدم کرسکے ناپ لے اسکو
بھی پرانش کہتے ہیں اموگھہ نہیں ہے
بے ارتھ چیشٹا جسکی یعنی جو کوئی جسطرح
اسکا دھیان کرتا ہے وہ اسکو اسیطرح
پاتا ہے شچہ پاپیوں کو پوتر کرنے والا
ہے اورجتہ بل میں [illegible]
صاحب قوت ہے اتیندرہ اندر

दाँत धारण किये हैं चतुर्भुजः
चार हैं भुजा जिन के ॥ ३३ ॥

मू॰ भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता
सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता वि-
श्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ ३४ ॥

टी॰ भ्राजिष्णुः प्रकाश चैतन्य
रूप है भोजनं माया रूपी भग
वान अर्थात् सुख सम्पत्ति रूप
है भोक्ता माया को जीव रूपक
र के भोगी अर्थात् जीव रूप होक
र सब सुख भोक्ता है इस से उस
का नाम भोजन और भोक्ता र
क्खा गया सहिष्णुः हिरण्य क-
श्यप ऐसे दैत्यों का मारने वाला
जगदादिजः जगत के आ
दि में पैदा हो [illegible]
सी होकर सृष्टि रचता है अन-
घो पाप रहित है अर्थात् कोई
बुराई नहीं रखता है विजयो
अपने ज्ञान से ऐश्वर्य्य करके
सारे जगत का संहार करने वा-
ला सब को जीते अर्थात्
सब संसार उससे सुख पाता है

دانت کلاں بصورت شیر رکھتا ہے
چتربھج چار ہیں ہاتھ جسکے

اشلوک

۳۴
بھراجشنر بھوجنگ بھوکتا
سہشنر جگدادجہ - انگھو بجیو
جیتا بسوجو نہ پنربسہ -

ٹیکا

۳۴
بھراجشنہ پرکاش چیتن روپ ہے -
بھوجنگ مایا روپی بھگوان یعنی اسباب
عیش و لذت کا ہے بھوکتا مایا کو جیو روپ
ہوکر بھوگ کرے چونکہ بصورت جان ہوکر
لذت و عیش حاصل کرتا ہے اسواسطے نام
اسکا بھوجن بھوکتا رکھا گیا سہشنر
ہرنیکشپ ایسے دیتوں کو مارنیوالا ہے
جگدادجہ جگت کے آدمیں پیدا ہوا یعنی
بصورت برہما ہوکر انتظام عالم کا کرتا ہے
انگھو پاپ سے رہت ہے یعنی کوئی بدی نہیں
کرتا ہے بجیو اپنے گیان ایشور ج کرکے
جگت کو سنگہار کرتا ہے جیتا سبکو
جیتے یعنی تمام عالم اسکی ذات سے
مسرات اور آسائش و آرام پاتا ہے

विचार करने वाला अर्थात् भूत
भविष्य वर्त्तमान तीनों काल उ-
सी में हैं कविः तीनों काल
का जानने वाला है ॥ ३२ ॥

मू॰ लोकाध्यक्षः सुराध्य-
क्षो धर्म्माध्यक्षः कृताकृ-
तिः । चतुरात्मा चतुर्व्यू-
हश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः । ३३ ।

टी॰ लोकाध्यक्षः लोकों का
मालिक है सुराध्यक्षः देवतों
का स्वामी है धर्म्माध्यक्षः ध-
र्म्मों का मालिक है कृताकृतिः
कारण कार्य्य रूप है चतुरात्मा
चार आत्मा हैं जिनके अर्थात्
चार गुण हैं पैदा करना १ पाल-
ना २ बनाये रखना ३ संहार क-
रना ४ चतुर्व्यूहः चार हैं भु-
जा जिनके वासुदेव १ संकर्षण
२ प्रद्युम्न ३ अनिरुद्ध ४ और
भी यह कि ब्रह्मा विष्णु महेश
हिरण्यगर्भ उसकी सृष्टि हैं च-
तुर्दंष्ट्रः चार हैं दाढ़ जिसके अ-
र्थात् नरसिंह अवतार में चार

بچارنے والا یعنی اُسکی ذات ماضی وحال
واستقبال ہے کبیہ تینوں کال کا جاننے
والا یعنی سب کا ناظر ہے

اشلوک ۳۳

لوکادھیکشہ سرادھیکشو دھرما
دھیکشہ کرتا کرتہ ۔ چترآتما چتر
بیوہش چتر دنشٹرش چتر بھجہ

ٹیکا ۳۳

لوکادھیکشہ لوکونکا مالک یعنی سب عالم
باختیار اُسکے ہے سرادھیکشو دیوتاؤنکا
مالک ہے دھرمادھیکشہ دھرموں کا
مالک ہے یعنی سب کی نیکی اور بدی وغیرہ
کا دیکھنے والا ہے کرتاکرتہ کارج
اور کارن کا روپ ہے چترآتما چار ہیں
آتما جسکے یعنی چار صفت ہیں جسکے یعنی
پیدا کرنا ۔ پالنا ۔ قائم رکھنا ۔ نابود
کرنا چتربیوہہ چار ہیں بھاگ
جسکے باسدیو ۔ سنکرکھن ۔ پردمن اور
انردھ اور یہ کہ برھما بشن مہیش ہرنیہ
گربھ بھی اُسکی خلقت ہیں چتردنشٹرہ
چار ہیں داڑھ جسکے یعنی نرسنگھ اوتار میں چار

स्थिर है अर्थात् सदा एक रस है
वरारोहो श्रेष्ठ है सवारी जिस
की शेष और यह कि जो कोई
उसमें लय होजाय फिर संसार
में न आवै महातपाः बड़ा है त
प जिसका ॥ ३१ ॥

मू. सर्व्वगः सर्व्वविद्भानुर्वि
ष्वक्सेनो जनार्द्दनः । वे
दो वेद विदव्यंगो वेदाङ्गो
वेदवित्कविः ॥ ३२ ॥

टी. सर्व्वगः सब में प्राप्त है स-
ब जगह पहुंचता है कोई जग-
ह उस से खाली नहीं है सर्व्व-
विद्भानुः सब को जाने और प्र-
काश रूप है विष्वक्सेनो स-
ब तरफ है सेना जिसकी जना-
र्द्दनः दुष्ट जीवों को पीड़ा देने
वाला और भक्तों की मनोकाम-
ना पूरण करने वाला है वेदो आ-
त्मा को जो दिखावै और वेद को
जानने वाला वेदविद् वेद का
जानने वाला अव्यंगो ज्ञान से पू-
रण है वेदाङ्गो वेद है अ-
ङ्ग जिसका वेदवित वेद का

استھر ہی یعنی ہمیشہ یکسان ہی برآروہو
اچھی ہی سواری جسکی شیش اور یہ کہ جو کوئی
اُسمین واصل ہوا پھر عالم مین نہ آیا مہا
تپاہ نہایت ہی تپ جسکا یہ وہ ذات ہی کہ
تمام عالم مین مستغرق ہو کر لذت سبکی لیتا ہی

اشلوک ۳۲

سرب گہ سرب بدبھانر بشوک
سینو جنار دنہ ۔ بیدو بید بد
بینگو بیدانگو بید بت کبہ ۔

ٹیکا ۳۲

سرب گہ سب مین جاتا ہی یہ وہ ذات
ہی کہ سب جگہ پہنچتی ہی کوئی جگہ اُس سے خالی
نہین ہی سرب بدبھانر سبکو جانتا ہی
اور پرکاش روپ یعنی صاحب نور و ظہور
ہی بشوک سینو سب طرف ہی سینا
یعنی فوج جسکی اور یہ کہ شیطان اُس سے
بھاگتے ہین جنار دنہ دشٹ جیون کو
دکھ دینے والا اور بھگتون کو سب آرزو کا
پورا کرنیوالا ہی بیدو آتما کا دکھانیوالا اور بید
کا جاننے والا ہی بید بد بید کا جاننیوالا بینگو
گیان سی پورن ہی بیدانگو بید ہی انگ جسکا بید بت بید کا

अविनाशी है अमोघः जि
सने जो इच्छा की उसकी वह
इच्छा पूरण की अर्थात् किसी
को निराश और बिमुख नहीं
रखता है पुण्डरीकाक्षो
कमलऐसेनेत्रहैं जिसके वृषकर्मा
वृषाकृतिः धर्म्म है कर्म्म
जिसका और धर्म्म के अर्थ है
आकार जिसका ॥३०॥

मू॰ रुद्रो बहुशिरोबभ्रुर्वि
श्वयोनिश्शुचिश्रवाः। अ
मृतःशाश्वतःस्थाणुर्वरा
रोहोमहातपाः ॥ ३१ ॥

टी॰ रुद्रो संहार काल में सब को
रुलाते हैं बहुशिरो बहुत हैं
शिर जिसके बभ्रुःलोगों को तो-
षण करनेवाला और प्रीति करने
वाला है विश्वयोनिःजगत् की
योनि अर्थात् जगत् उसी से पैदा
है शुचिश्रवाःपवित्र करनेवा-
ला है अर्थात् उसका नाम लेने
से सब पाप दूर होजाते हैं अमृ-
तः बुढ़ापा और नाश से रहित
है शाश्वतःस्थाणुःनित्य है

بے زوال ہی اُنکو کہتے ہیں جو اچھا کی اُسکی
وہ اچھا پورن کی یعنی کسیکو محروم نہیں رکھتا
پُنڈریکاکشو کمل کے ایسے ہیں نین جسکے
برکھوکرما برکھاکرتہ دھرم ہی کرم
جسکا اور دھرم کے واسطے ہی ظہور جسکا —

اشلوک

۳۱
رُدرو بہُ شِرو ببھرُ بشوجونہ
شُچ شروا — امرتہ شاشوتہ استھانُو بَرا
روہو مہا تپاہ —

ٹیکا

رُدرو سنگھار کال میں سب کو رُلاتے
ہیں یعنی وقت قیامت کے سبکو فنا کرتے
بہُ شِرو بہت ہیں سر جسکے ببھرو لوگوں
کا پالنے والا اور عزیز رکھنے والا اور قائم
و سلامت رکھنے والا ہی بشوجونہ
جگت کی جون ہی یعنی مخرج پیدائش
و محل آفرینش تمام عالموں و موجودات
کا وہی ہی شچ شروا ہو یعنی پاک
کرنے والا ہی یعنے اسکا نام لینا سب گناہوں
سے پاک کردیتا ہی امرتہ بڑھاپا اور زوال
نہیں رکھتا ہی شاشوتہ استھانُو نِت ہی

वृषाकपि कामना का देने वा-
ला है और दुःख का हरनेवाला
अमेयात्मा और वे प्रमाण है
आत्मास्वरूप जिसका सर्व्व
योगविनिःसृतः सब योग उस से
पैदा हुवे हैं और वह तत्त्व है स-
ब विद्याओं का और सब विद्या
उस से उत्पन्न हुई हैं ॥ २९ ॥

मू॰ वसुर्वसुमनाः सत्यः स-
मात्मासंमितः समः। अ-
मोघः पुण्डरीकाक्षो वृष
कर्म्मा वृषाकृतिः॥ ३० ॥

टी॰ वसु वस्तुओं में वास करता है
वसुमनाः वसु में मन है जिस
का और यह कि मन उसका उस
के वश्य है सत्यः पञ्चतत्त्व अ-
र्थात् अग्नि वायु जल आकाश
पृथ्वी में होने वाला और यह कि
वह सत्य है समात्मा राग और
द्वेष से रहित है अर्थात् भले बुरे
का भय नहीं रखता है संमितः
जिसके समान दूसरा नहीं है स-
मः तीनों काल में एक रूप है अ-
र्थात सब काल में निर्विघ्न और

برکھا کپ کامنا کا دینے والا اور دکھ
کا دور کرنیوالا ہے آمیے یاتما بے پرمان
ہے آتما سروپ جسکا یعنی صورت معنی سے
اسکو کوئی قرار نہیں دے سکتا سرب
جوگ بنش ست تمام جوگ اس سے پیدا
ہوئے ہیں اور خلاصہ جمیع علوم کا ہے اور
سب علم اس سے پیدا ہوئے ہیں ۔

اشلوک

۳۰ بسر بسمنا ستیہ ستما سمتہ
سمہ ۔ اموگھ پنڈریکا کشو
برکھ کرمہ برکھا کرتہ ۔

ٹیکا

۳۰ بسہ جو بہت باس کرتا ہے بسمناہ
پرتھوی میں ہے من جسکا اور یہ کہ من تابعدار اسکی
میں ہے ستیہ پنچ تتو میں ہونے والا
یعنی اکاش باید جل اگن پرتھوی میں ہر
وقت ہر جگہ موجود ہے اور دائم حق ہے ستماتما
راگ اور دویش سے رہت یعنی بغض و حسد سے
علیحدہ ہے سمتہ جسکے برابر دوسرا نہیں یعنی
پاک ہے سمہ تینوں کال میں ایک
رنگ پر ہے یعنی سب وقت میں بے علت اور

प्रजाभवः प्रजा को उत्पन्न कर
ने वाला है अहः प्रकाश रूप है
सम्वत्सरो सम्वत स्वरूप है
अर्थात समय रूप होकर वर्त्तमा
न है व्यालः दुष्टों के वश में न
हीं आने वाला है और यह कि
वह ऐसा अगम्य है कि किसी
के वश्य नहीं हो सक्ता प्रत्य
यः ज्ञान रूप है सर्व्वदर्शी
नः सब को देखने वाला है २८

मू० अजः सर्व्वेश्वरः सि
द्धः सिद्धिः सर्व्वादिरच्यु
तः। वृषाकपिरमेयात्मा
सर्व्वयोगविनिःसृतः।२९।

टी० अजः जन्म रहित है अर्था
त कभी पैदा नहीं हुआ और नहो
ता है और न होगा सर्व्वेश्वरः
सब का ईश्वर अर्थात मालिक है
सिद्धः सदा सत भाव अर्थात एक
तरह पर रहता है सिद्धिः आन
न्द रूप फल मोक्ष का देनेवाला
है सर्व्वादिरच्युतः सबका
आदि कारण और नाश रहित है

پرجا بھوہ خلقت کا پیدا کرنیوالا ہے
آتمہ پرکاش روپ ہے سمبت سرو
سمبت سروپ ہے یعنی بصورت زمانہ ہوکر
قائم ہے بیالہ دشمنون کے قابو مین نہین
آنیوالا ہے اور یہ کہ وہ ذات نہایت لطیف
ہے گرفت نہین ہوسکتی ہے پرتیہ گیان
روپ ہے یعنی بذات خود عقل خالص ہے
سرب درشنہ سب کا دیکھنے والا ہے
یعنی دانا سے نہان و آشکارا ہے

اشلوک

۲۹

اجہ سربیشورہ سدّھہ سدّھہ
سربادرچیوتہ - برکھا کپ رمے
یاتما سرب جوگ بنسرتہ -

ٹیکا

۲۹

اجہ یعنی کبھی پیدا نہین ہوا اور نہوتا ہے
اور نہوگا سربیشورہ سب کا ایشور
ہے یعنی تمام حاکمون کا حاکم و بادشاہونکا
بادشاہ ہے وہ ذات واحد ہے سدّھہ ہمیشہ
ایک صورت نیک پر رہتا ہے سدّھہ آنند
روپ پھل موکش کا دینے والا ہے سربادرچیوتہ
سب کا آد کارن اور ناش سے رہت ہے

कृतज्ञः जो कृत भक्त जन क-
रते हैं उसका जान्ने वाला है कृ
तिःकरै है अर्थात् तीनों लोक
का काम करने वाला है आत्म-
वान् अपने स्वरूप का आधा-
र है अर्थात् उसका कोई घर न
हीं है अपनी प्रतिष्ठा में आप
रहता है ॥ २७ ॥

मू. सुरेशः शरणंशर्म वि-
श्वरेताः प्रजाभवः । अ-
हः संवत्सरो व्यालः प्र-
त्ययः सर्वदर्शनः ॥ २८ ॥

टी. सुरेशः देवताओं के ईश
अर्थात् मालिक है शरणं डरहु-
वे और अपनी शरण मे आवे हुवे
जीवों की रक्षा करता है जैसे कि
गज की रक्षा करके ग्राह से छूटा-
या और द्रौपदी की बीच सभा के
लाज रक्खी और बिभीषण को
लंका का राज्य दिया अर्थात् जो
शरण आता है उसका दुःख दूर क-
र देता है शर्म सुखरूप है विश्व
रेताः जगत् है बीज उसका अ-
र्थात् संसार उसी से उत्पन्न है

کرتگیہ جو کچھ بھگت لوگ کرتے ہیں اسکو
جانتا ہے یعنی دانا ہے اعمال و افعال مردا
پاک و بدکاران کا ہے کرتہ کرتا ہے یعنی
کرنے والا ہر کام کا وہی ہے آتم وان
اپنے سوروپ کا آپ ہی آدھار ہے یعنی اسکا
دوسرا مکان نہیں ہے اپنی بزرگی میں رہتا ہے

اشلوک ۲۸

سریشہ شرنگ شرم بشو ریتاہ
پرجابھوہ - اہہ سمبت سرو
بیالہ پرتیہ سربدرششہ -

ٹیکا ۲۸

سریشہ دیوتاؤں کا ایش یعنی مالک ہے
شرنگ ڈرے ہوئے اور اپنی سرن
یعنی پناہ میں آئے ہوؤں کی رچھیا کرتا
ہے جیسے گج یعنی ہاتھی کی رچھیا کرکے گراہ
سے چھڑایا اور دروپدی کی بیچ سبھا
کے لاج رکھ لی اور ببھیکھن کو لنکا کا راج
دیا یعنی دور کرنیوالا درد دردمندوں کا ہے
شرم سکھ روپ ہے یعنی محض سرور ہے
بشو ریتاہ جگت کا بیج یعنی تخم جسکا
یعنی جو کچھ دنیا میں ہے اسی سے پیدا ہے

ब्रह्माने वहां सृष्टि रची इसी से
कुरुक्षेत्र का स्थान पवित्र और
श्रेष्ठ समझा जाता है ॥ २६ ॥

**मू. ईश्वरो विक्रमी ध-
न्वी मेधावी विक्रमः क्रमः
अनुत्तमो दुराधर्षः कृत-
ज्ञः कृतिरात्मवान् ।२७।**

टी. **ईश्वरो** सब कार्य्य करने
वाला है **विक्रमी** शूरवीर है
धन्वी धनुषधारी है जैसे रामच-
न्द्रावतार **मेधावी** बुद्धिवाला
जो सुने वह भूलता नहीं सब का
जानने वाला और याद रखने वा-
ला है **विक्रमः** सारे जगत को उ-
लंघन करै जैसे वामन रूप और
यह कि सब जीवों को चलने फिर-
ने की शक्ति देता है **क्रमः** चरमू-
र्त्ति चलनेवाला और चलने की श-
क्ति उत्पन्न करने वाला है **अनु-
त्तमो** नहीं है उत्तम उससे को-
ई **दुराधर्षः** और कोई उस
को डरा नहीं सक्ता और उसप
र सबल नहीं हो सक्ता है -

برمھا جی نے وہاں پر سرشٹ کو رچا اور اسی سے
کرچھیتر کی جگہ بہت متبرک و پاک شمار کی جاتی ہے

اشلوک

۲۷

**ایشورو بکرمی دھنوی میدھاوی
بکرمہ کرمہ - انتمو درادھرکھہ
کرتگیہ کرت راتم وان -**

ٹیکا

۲۷

ایشورو سب کام کرنیوالا یعنی حاکم
حقیقی و قادر مطلق ہے **بکرمی** شوبیر ہے
یعنی شجاع اعظم و مرتبہ بلند ہے **دھنوی**
دھنکھ دھاری ہے جیسے شری رام چندر جی
میدھاوی بدھ والا ہے جو کچھ سنتا
ہے اسکو کبھی بھولتا نہیں ہے وہ ذات ہے
کہ حافظہ و دریافت بدرجہ کامل رکھتا ہے
بکرمہ تمام جہان کو طے کر جاسے جیسے باون
اوتار اور یہ کہ قوت رفتار جاندارونکو عطا
کرتا ہے **کرمہ** چلنے والا اور یہ کہ قوت رفتار کا
پیدا کرنیوالا ہے **انتمو** نہیں ہے اتم اس سے
کوئی یعنی اسکے سوا اور کوئی بزرگ نہیں ہے
درادھرکھہ ڈر جانے کے قابل نہیں یعنی
کوئی اسکو ڈرا نہیں سکتا اور نہ اسپر غالب ہوسکتا ہے

कहते हैं कि जब सब पृथ्वी पर पा
नी ही पानी था और कुछ न था तब
उन्हों ने विष्णु भगवान रूप धारण
करके पानी में आराम किया और
मधुकैटभ दैत्य विष्णु भगवान के का
न के मैल से पैदा हुवे और ब्रह्मा वि-
ष्णु भगवान के कमल नाभि से पै
दा हुवे तब मधुकैटभ ने ब्रह्मा के मा
रने का इरादा किया उस समय वि-
ष्णु भगवान पल्थी मारे हुवे पानी
से बाहर प्रकट हुवे और पानी पर
पल्थी मारे हुवे मधुकैटभ को मा-
रा और वह जगह कुरुक्षेत्र की है
कि जो ४८ कोस में पल्थी की सूर-
त है और कहते हैं कि उन्हीं दैत्यों
की चरबी जिसको संस्कृत में मेद
कहते हैं पानी पर बिछाई गई
इसी वास्ते इस पृथ्वी का नाम मेदि-
नी है जब से राजा पृथु ने इस पृथ्वी
को लेकर साफ़ और दुरुस्त किया
तब से इस मेदिनी का नाम पृथ्वी
हुआ राजा पृथु चौबीस अवतारों
में गिने जाते हैं मार्कण्डेय पुराण
में इस पृथ्वी का हाल विस्तार
पूर्वक लिखा है और इसी वास्ते

کہتے ہیں کہ جب سب زمین پر پانی ہی پانی
تھا سواے پانی کے اور کچھ نہ تھا تب
اُنھون نے بصورت بشن بھگوان ظاہر ہو
درمیان پانی کے آرام کیا اور مدھو کیٹبھ
نام دو راچھس بشن بھگوان کے کان کے
میل سے پیدا ہوئے اور برہما جی جو بھگوان
کی کنول نابھ سے پیدا ہوئے تھے اُنکے مارنیکا
قصد اُن دونون راچھسون نے کیا اُسوقت
بشن بھگوان پلتھی مارے ہوئے پانی سے
باہر ظاہر ہوئے اور اپنی جانگھ پر مدھو
کیٹبھ دیتیونکو مار ڈالا وہ جگہ کرکھیتر کی
ہے کہ جو ۴۸ کوس میں بصورت پلتھی قرار دی
گئی ہے اور کہتے ہیں کہ اُنھیں دونون دیتیون
کی چربی جسکو سنسکرت میں میدنی کہتے
ہیں پانی پر بچھائی گئی اسوجہ سے پرتھوی
کا نام میدنی ہوا اور راجا پرتھو کے سبب
سے کہ اُنکو چوبیس اوتارون میں شمار
کرتے ہیں اس میدنی کا نام پرتھوی ہوا
کیونکہ اُنھون نے اسکو صاف و درست کیا
تھا مفصل حال اسکا مارکنڈے پران سے
بخوبی ظاہر ہوسکتا ہے اور اسی واسطے

का धाम है अर्थात् उत्तम मध्यम
लघु सब उसमे हैं पवित्रं मन्त्र
रूप पवित्र करने वाला है मङ्ग-
लं परं बड़े आनन्द का देनेवाला है ॥२५॥

मू. ईशानः प्राणदः प्राणो
ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माध
वो मधुसूदनः ॥ २६ ॥

टी. ईशानः सबको अपने काम
मे प्रेरनेवाला अर्थात् सूर्य्य अग्नि
वायु सब को अपने काम में लगाने
वाला प्राणदः प्राण का देने वाला
प्राणो प्राण रूप है ज्येष्ठः सबसे ब-
ड़ा अर्थात् सबसे पहिले है श्रेष्ठः अ-
च्छा है प्रजापतिः प्रजा का मा-
लिक है अर्थात् ब्रह्मा रूप है हिर-
ण्यगर्भो ब्रह्मानन्द का बीज है
भूगर्भो पृथ्वी का अन्तर्यामी
अर्थात् सब सृष्टि उससे उत्पन्न हुई
है माधवो लक्ष्मी पति है और रमा-
धव उसको भी कहते हैं कि ज्ञान ध्या-
न से उसको जाने पहिचाने मधुसू-
दनः मधुकैटभ दैत्य का मारने वा-
ला है कूर्म अवतार रूप करके इ-
सवास्ते मधुसूदन नाम रक्खा गया

سکا دھام ہی یعنی اعلی و ادنی و اوسط سب
اُسمین ہین پوتّرنگ منتر روپ ہو کر سب کو
پوتر کر دیتا ہی منگلنگ پرنگ بڑے
آنند کا دینے والا اور حشمت کا عطا کرنیوالا ہی ۲۵

اشلوک - ایشانہ پران دہ پرانو
جیشٹھہ سریشٹھہ پرجا پتہ - ہرنیہ
گربھو بھوگربھو مادھوو مدھ سودنہ ۲۶

ٹیکا - ایشانہ سبکو اپنے کام مین لگانے
والا یعنی سورج آگ ہوا وغیرہ سبکو اپنے کام
مین مصروف کرنیوالا ہی پران دہ جان بخشنے
والا ہی پرانو پران یعنی روح وہی ہی جیشٹھہ
بڑا ہی اول ہی سریشٹھہ اچھا اور افضل ہی پرجا
پتہ پرجا کا مالک یعنی برہما روپ ہی ہرنیہ
گربھو برہمانند کا بیج یعنی دریا ہی بھوگربھو
پرتھوی کا انترجامی ہی یعنی سب مخلوقات
اُس سے پیدا ہوئی ہی مادھو لکشمی جی
کا پت ہی اور مادھو اُسکو بھی کہتے ہین
کہ جو سادھو تصور اور مشغولی سے اُسکو جانی
اور پہچانی مدھ سودنہ مدھو اور کیٹبھ
نام دیتیون کو بشن اوتار دھارن کرکے مارا
اسوجہ سے مدھ سودن نام رکھا گیا -

मनुः सब कामों का जान्नेवाला
है त्वष्टा प्रलयकाल में सबका
नाश करनेवाला है स्थविष्ठः
विराट रूप है स्थविरो ध्रुवः रू-
प अर्थात् प्राचीन और स्थित
है ध्रुवः नित्य अर्थात् सदा
सर्व्वदा बना रहता है ॥ २४ ॥

मू. अग्राह्यः शाश्वतः कृ-
ष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धामपवि-
त्रं मङ्गलम्परं ॥ २५ ॥

टी. अग्राह्यः पकड़ने के यो-
ग्य नहीं अर्थात् हाथ से नहीं आ
सक्ता है और न बुद्धि में समा सक्ता
है शाश्वतः सदा सर्वदा हर समय
वर्तमान है कृष्णो अपने भक्तों
को नरक से खींच लेता है और कृ-
ष्ण नाम अलसी के फूल के रंग का
है जो अति मनोहर होता है वैसा ही
रंग श्री कृष्णजी का लोहिताक्षः
लाल हैं नेत्र जिनके प्रतर्दनः
संहारकाल में प्राणियों का हरने
वाला प्रभूत बल तेज करके युक्त
है त्रिककुब्धाम तीनों दशा

یعنی پیدا کرنے والا برہما وغیرہ تمام مخلوقات
کا ہے تشٹا یعنی والا سب کام کا ہے توشٹا
پرلے کال میں سبکو ناش کرتا ہے استھوشٹھ
براٹ روپ یعنی بزرگ تر بزرگ سے ہے
استھورو دھرو روپ یعنی قدیم و قائم ہے
دھروہ نت یعنی ہمیشہ قائم ہے

اشلوک - اگراہیہ شاشوتہ کرشنو
لوہتاکشہ پرتردنہ - پربھوتستر
ککبدھام پوترم منگلم پرم

اگراہیہ یعنی پکڑنے کے لائق نہیں یعنی ہاتھ
میں نہیں آسکتا اور عقل و کلام بھی اسکی
قدرت کو نہیں بیان کرسکتا شاشوتہ
ہمیشہ و ہر وقت موجود ہے کرشنو اپنے
بھکتوں کو نرک سے بچا لیتا ہے اور چونکہ کرشن
نام السی کے پھول کے رنگ کا ہے جو کہ نہایت
خوش نما ہوتا ہے ایسا ہی رنگ سری کرشن
مہاراج کا تھا لوہتاکشہ لال ہیں آنکھیں
جسکی پرتردنہ قیامت کے وقت سبکو
نیست و نابود کردیتا ہے پربھوت بل اور
تیج کے ساتھ ہی سلطنت عظیم
رکھتا ہے ترککبدھام تینوں

जो अपने अपने कामों को कर रहे हैं उनको साधनेवाला धातुः सब कामों को धारण करने वाला उत्तमः अच्छा श्रेष्ठ और सब से बड़ा है ॥२३॥

मू॰ अप्रमेयोहृषीकेशः पद्मनाभोमरप्रभुः। विश्वकर्म्मा मनुस्त्वष्टास्थविष्ठःस्थविरो ध्रुवः ॥२४॥

टी॰ अप्रमेयो नहीं है परमाण जिसका और कोई उसका भेद नहीं जान सक्ता और वह किसी के सदृश और समान नहीं कि उस उपमा के द्वारा उसको पहिचान सके इस वास्ते उस को अप्रमेय कहा हृषीकेशः इन्द्रियोंका मालिक है अर्थात् सब इन्द्रियां उसी की पैदा की हुई हैं और वह उनको वश्य कर सक्ता है पद्मनाभो कमल है नाभ में जिसके अमरप्रभुः देवताओं के मालिक हैं विश्वकर्मा जगत् को रचने वाले हैं॰

جو اپنے اپنے کاموں کو کر رہے ہیں انکو سادھنے والا یعنی بنانے والا ہی دھاتُ سب کاموں کو دھارن کرتا ہی اُتّمہ اُتَم یعنی اچھا اور سب سے بڑا ہے

اشلوک ۲۴

اپرمے یو ہرکھی کیشہ پدم نابھو امر پربھُہ بشوکرما منس توشٹا استھ بشٹھہ استھ برو دھرو وہ

ٹیکا ۲۴

اپرمے یو نہیں ہی پرمان جسکا یعنی بے انتہا ہی اور کوئی اسکی ماہیت کو دلیل وادراک کے سبب سے جان نہیں سکتا اور وہ کسیکے مانند اور مثل نہیں ہی کہ اسکے ساتھ پہچانا جاوے اسلیے اسکا نام اپرمے یو قرار دیا گیا ہرکھی کیشہ اندریوں کا مالک یعنی سب حواس خمسہ اُسی کے پیدا کیے ہوئے ہیں اور وہی اُنکو قابو میں رکھ سکتا ہی پدم نابھو کنول ہی نابھ میں جسکے یعنے اسکی ناف سے کنول کا پھول نکلا ہے امر پربھُہ دیوتاؤں کا مالک بشوکرما جگت کا رچنے والا ہی

विधाताधातुरुत्तमः २३

टी॰स्वयम्भूः आप से जो हो अ-
र्थात् जो बिना लगाव किसी दू-
सरे के आप से आप हो शं-
म्भुः भक्तों को सुख दे आदित्य
आदित्य का पुत्र और सूर्य्य को
भी आदित्य कहते हैं कि सूर्य्य
में जो प्रकाश है वह ही ईश्वर का
अंश है और यह भी कहते हैं
कि सूर्य्य बारह हैं और हर एक
का नाम अलग अलग है और
यह बारह नाम सूर्य्य के इस वास्ते
रक्खे गये हैं कि बारह रासों में आ-
ना जाता है उन बारह नामों में से ए-
क नाम विष्णु भी सूर्य्य का है इस
वास्ते और भी सूर्य्य की संज्ञा की
गई और आदित्य के पुत्र का व-
र्णन आगे होगा पुष्कराक्षो
कमल के ऐसे नेत्र हैं महास्वनः
बड़ा है शब्द जिसका अनादि
निधनो जन्म मरण से रहित है
धाता शेष रूप करके पृथ्वी को
धारण करे है विधाता यज्ञ क-
रने वालों को स्वर्ग लोक देने वा-
ला और यह कि शेष नाम आदि

بدھاتا دھات رتّمہ ۔

ٹیکا

۲۳

سوَیمبھو آپ سے جو ظاہر ہو یعنی از خود
ظاہر ہوا اور دوسرا کوئی سبب اسکے ظہور کا
نہو وسے شمبھو بھکتونکو سکھ دینی والا ہی
آدتیہ آدتیہ کا پُتر اور بھی سورج کو آدتیہ
کہتے ہیں یعنی سورج میں جو روشنی ہی اسیکی
ہی اور یہ بھی ہی کہ بارہ سورج ہیں اور ایک
سورج کے الگ الگ نام ہیں اور یہ بارہ نام
سورج کے اسواسطے مقرر ہوئے ہیں کہ بارہ
برجوں میں سیر کرتا ہی منجملہ بارہ ناموں کے
ایک نام بشن بھی سورج کا ہی اسواسطے
سورج پر اطلاق کیا گیا اور آدتیہ کے پُتر کا بیان
آگے ہوگا پشکراکشو کمل کی ایسی آنکھیں
ہیں جسکے مہا سونہ بڑا ہی شبد جسکا اناد
نِدھنو جنم مرن سے رہت یعنی آغاز اور
انجام نہیں رکھتا ہی دھاتا شیش
روپ ہو کر پرتھوی کو اپنے اوپر اٹھائے
ہوئے ہی بدھاتا جگ کرنے
والوں کو سورگ لوک دینے والا ہی
اور دوسرے یہ کہ شیش ناگ وغیرہ

اشلوک

۲۲

سَرْوَہ شَرْوَہ شِوَہ اَستھانُر بھوتادِر نِدھِ
رَوْیَیَہ سَمبھوو بھاوَنو بھرتا پربھوہ پربھُر ایشوَرہ

۲۲ — سَرْوَہ سرب رُوپ یعنی پیدا کرنیوالا وجود
اور عدم کا اور جاننیوالا حقیقت کا ہی شَرْوَہ
انت کال مین پرجا کو سنگھار کرنیوالا ہی شِوَہ
شِو شنکر رُوپ یعنی کلیان رُوپ ہی اَستھانُر
ایک رُوپ کرکے استھت یعنی قائم ہی۔
بھوتادِ پرانیونکا آدِ کارن یعنی مبدا خلائق
ہی نِدھِ خزانہ وقت قیامت کا ہی اَویَیَہ
آبناسی یعنی لازوال ہی سَمبھوو اچھا ہی
جنم جسکا یعنی واسطے محافظت دھرم کے پیدا
ہوتا ہی بھاوَنو جیونکو کرم کا پھل بھوگ
کرواتا ہی یعنی جانداروں کو اعمال کا نتیجہ دیتا ہی
بھرتا سبکی پالنا کرنیوالا ہی پربھوہ اچھا
ہی جنم جسکا اور پیدا کرنیوالا جمیع عناصر کا ہی پربھُو
پیدا اور پالن اور سنگھار مین سمرتھ ہی ایشوَرہ
جسمین کچھ دوش نہین اور بزرگ اور مالک ہی۔

اشلوک ۲۳

سویمبھو شمبھُر آدِتیہ پُشکراکشو مہا
سوَنہ — اَنادِ نِدھنو دھاتا

मू॰ सर्व्वः शर्व्वः शिवः स्था
णुर्भूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवोभावनोभर्त्ताप्रभ
वःप्रभुरीश्वरः ॥ २२ ॥

टी॰ सर्व्वः सर्व्वरूप शर्व्वः प्र
जा को संहार करने वाला है
शिवः शिवशंकररूप स्थाणु ए
क रूप करके स्थिर है भूतादि प्रा
णियों का आदिकारण है निधिः ख
जाना प्रलय काल का है अव्ययः अ
बिनाशी है सम्भवो अच्छा है ज
न्म जिसका अर्थात धर्म्म की रक्षा के
वास्ते प्रकट होता है भावनो जी
वों को कर्म्म का फल भोगवाता है
भर्त्ता सब की पालना करता है प्र
भवः अच्छा जन्म है अर्थात श्री
कृष्णावतार आदि और पंचतत्त
का उत्पन्न करने वाला है प्र
भुः उत्पत्ति पालन संहार तीनों में
समर्थ है ईश्वरः जिस में कुछ
दोष नहीं अर्थात प्रतिष्ठा तो उसी को
है और हुक्म हाकिम वही है २२

मू॰ स्वयम्भूः शम्भुरादि
त्यः पुष्कराक्षो महास्वनः
अनादि निधनो धाता

मू. योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः। नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः॥२१॥ * ॥ * ॥

टी. योगी जीव और ईश्वर को एक जाने यह वह स्वभाव है कि इन्द्री और मन को रोक करके उसकी एक्यता में निश्चय को लावै और उसमें लीन होजाय जोकि यह गुण सिवाय ईश्वर के और किसी में नहीं है इस वास्ते इस सम्बन्ध का होना उसी पर किया गया योगविदां नेता योग जानने वालों को प्रेरना करनेवाला अर्थात् अपने में मिलानेवाला प्रधानपुरुषेश्वरः माया और जीव का ईश्वर है नारसिंहवपुः मनुष्य और सिंह रूप जैसे कि प्रह्लाद की रक्षा के लिये शरीर धारण किया श्रीमान् लक्ष्मीवाला केशवः ब्रह्मा और विष्णु और महेश इन तीनों का ईश्वर और अच्छे हैं केश जिसके और भी केशी नाम दैत्य के मारने वाले इस वास्ते भी केशव कहते हैं पुरुषोत्तमः पुरुषों में उत्तम हैं॥२१॥

اشلوک ۲۱

یوگو یوگ بداں نیتا پردھان پرکھیشورہ
نارسنگھ بپہ شریمان کیشوہ پرکھوتمہ

ٹیکا ۲۱

یوگی جیو اور ایشور کو ایک جانے یہ وہ صفت
ہے کہ دل اور حواس ظاہر و باطن کو ضبط کر
اسکی ذات واحد میں اعتقاد کو درست کرے
اور اسی میں محو ہو جاوے چونکہ یہ صفت سوا
ذات خالق کے اور کسی میں نہیں ہے اسواسطے
اطلاق اس نام کا اسپر کیا گیا یوگ بداں
نیتا جوگ جاننے والونکو پریرنا کرنیوالا یعنی اپنے
میں ملانیوالا ہے پردھان پرکھیشورہ
مایا اور جیو کا ایشور ہے یعنی جسم و جان کا مالک ہے
نارسنگھ بپہ نرسنگھ روپ یعنی بصورت
انسان و شیر جیسا کہ وقت حفاظت پرہلاد کے شریر
دھارن کیا شریمان لچھمی والا یعنی صاحب دولت
کیشوہ یعنی کیشو برہما اور بشن اور
مہیش ان تینوں کا ایشور یعنی مالک اور اچھے
ہیں کیش یعنی موئے سر جسکے اور بھی مارنیوالے
کیشی نام دیت کے ہیں اسواسطے بھی کیشو کہتے ہیں
پرکھوتمہ پرکھوں میں اتم یعنی سب سے بزرگ ہے

का बिस्तार हुआ और पृथ्वी से आ
काश तक सब इसी ॐ की मूर्ति हैं
विश्वं कार्य्य कारण रूप अर्था-
त् जो अपने कारण में लीन और
जगत् में प्रवेश होजाय और यह
वह पदार्थ है जो पाताल से स्वर्ग
तक व्यापक है विष्णु सम्पूर्ण ज
गत् में व्याप्त है अर्थात् सब संसा-
र में वह है और सब संसार उसमें है
वषट्कारो यज्ञ रूप और मन्त्र
का नाम है भूतभव्यभवत्प्रभुः
हो गया और होगा और है इन ती-
नों कालों का मालिक है भूतकृद्
प्राणियों का जन्म मरण करनेवाला है
भूतभृद् प्राणियों का पालनेवाला
भावो पैदा हो अर्थात् सब की जगह
वह है भूतात्मा प्राणियों की आ
त्मा अर्थात् मनुष्यों में मन है जिस
का और सब के मन का भेद जान्ने
वाला है भूतभावनः प्राणियों
को जो पैदा करै पालै बढ़ावै ॥१९॥

کا بستار ہوا اور عقل کل سے تا برگ کاہ اسی
اونگ کی صورت ہے بشونگ کاریہ کارن
روپ ہے یعنی جو اپنے کارن میں لین اور جگت
میں پرویش ہو جاوے اور یہ کہ وہ ذات ہے کہ
جو زیر زمین سے تا بالائے آسمان محیط ہے
بشنو سب جگت میں بیاپت ہے یعنی تمام عالم
میں وہ ہے اور تمام عالم اُسمین ہے
بکھٹ کار و جگ کا روپ ہے جگ کے
معنی قربان کرنے کے ہے اور منتر کا نام ہے
بھوت بھبیہ بھوت پربھُ ہو گیا او
ہوگا اور ہے ان تینون زمانون کا مالک ہے
یعنی صاحب حال و آیندہ و گذشتہ
بھوت کرد - پرانیون کا جنم و مرن کرنیوالا
یعنی پیدا اور فانی کرنیوالا ہے - بھوت بھرد
پرانیونکا پالنے والا ہے یعنی پرورش کنندہ خلایق
کا ہے بھاو و پیدا ہو یعنی مکان و مکین وغیرہ
سبکی جگہ وہ ہے بھوتاتما پرانیون کی آتما ہے یعنی
آدمیون میں من ہے جسکا اور دل سب جانداروں کا
اور جاننے والا بھید کا ہے سب کے دلون کا بھوت بھاونہ
پرانیونکو جو پیدا کرے پالے بڑھاوے یعنی پیدا کرنیوالا
اور روز افزون کرنیوالا خلایق کا ہے

पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं
गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं
योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे
विष्णुं भवभयहरं सर्व्वलोकै
कनाथं ॥ १८ ॥

टी॰ शांत है आकार जिसका शेष
है शय्या जिसकी कमल है नाभि जि-
सकी देवताओं के ईश्वर हैं जगत्
के आधार हैं आकाश के तुल्य हैं
बादल के वर्ण अर्थात रंग हैं अ-
च्छे हैं अंग जिनके लक्ष्मी के पति
हैं कमल के ऐसे नेत्र हैं योगियों
के ध्यान में आने वाले हैं नमस्का-
र करता हूं ऐसे विष्णु को जो सं-
सार के भय दूर करने वाले हैं सब
लोकों के एक नाथ हैं ॥ १८ ॥

मू॰ ओं विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भू-
तभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृद्भूत
भृद्भावो भूतात्मा भूतभा-
वनः ॥ १९ ॥

टी॰ ओं यह वह शब्द अर्थात आकाशवा
णी है कि जिसके होते ही संसार

پدم نابھنگ سریشنگ بشوادھارنگ
گگن سدرشنگ میگھ برننگ شبھانگنگ
لچھمی کانتنگ کمل نینگ جوگ بھر
دھیان گمینگ بندے بشننگ
بھو بھئے ہرنگ سرب لوکیک
ناتھنگ ۔

ٹیکا

١٨
شانت ہی آکار جسکا شیش ہی سجیا جسکی
کمل ہی نابھ جسکی دیوتاؤن کا ایشور ہے
جگت کا پاترا ادھار ہی آکاش کی طرح ہے
بادل کا ایسا رنگ ہی اچھے ہین انگ جسکے
لچھمی کا پت ہی کمل کے ایسے نیتر ہین جسکے
جوگیون کے دھیان مین آنیوالا ہی نمسکار کرتا
ہون ایسے بشن کو جو سنسار بھی کے دور
کرنیوالے ہین سب لوگون کے ایک ناتھ ہین ۔

اشلوک

١٩ اونگ بشونگ بشنر بکھٹ کارو بھوت
بھبیہ بھوت پربھ۔ بھوت کرد بھوت
بھرد بھاوو بھوتاتما بھوت بھاونہ ۔

ٹیکا ۔ اونگ یہ وہ شبد یعنی نداے
آسمانی ہی کہ اس شبد کے ہوتے ہی سنسار

धन्वा गदाधर। इति करतल
करपृष्ठाभ्यां नमः। इति कर
न्यासः। अथ षडंग न्यासः।
ओं विश्वं विष्णुर्वषट्कार इति
हृदयाय नमः। अमृतांशूद्भ
वो भानुरिति शिरसे स्वाहा।
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेति शि
खायै वषट्। सुवर्णबिन्दुरक्षो
भ्य इति कवचाय हुं। आदि
त्यो ज्योतिरादित्य इति ने
त्रत्रयाय वौषट्। शार्ङ्ग ध
न्वा गदाधर इत्यस्त्राय फट्
श्री कृष्ण प्रीत्यर्थे जपे विनि
योगः। श्री विष्णोर्दिव्य
सहस्रनाम जप महं करि
ष्ये। इति संकल्पः॥ श्री
पुरुषोत्तमाराधने सर्व
पापक्षयार्थे जपे विनियो
गः॥

अथ ध्यानं

ओं शान्ताकारं भुजग शयनं

دھنوا گدا دھر اِت کرتل کر پرشٹا
بھیانگ نمہ - اِت کرن نیاسہ -
اتھ کھڑن نیاسہ - اونگ بشؤنگ
بشنر بکھٹ کار اِت ہردیا یے
نمہ - امرتانگ شؤد بھو وبھان
رت شرسے سواہا -
برھمنیو برھم کرد برھمیت شکھایے
بکھٹ - سُبرن بندرکشو بھیہ
اِت کوچا یے ہُم -
آدتیو جیوت رادتیہ اِت نیتر
ترایے ووکھٹ -
سارنگ دھنوا گدا دھر اِت استرایے
پھٹ - شری کرشن پریت ارتھے
جپے بنجوگہ -
شری بشنور دیویہ سہسر نام جپ
منگ کرشیے - اِت سنکلپہ -
شری پرکھوتما رادھنے سرب
پاپ چھیارتھے جپے بن
جوگہ -

اتھ دھیانم

اونگ شانتا کارنگ بھجگ شینگ

षट्कारवृत्तिध्यानं। श्रीविष्णोः
प्रीत्यर्थे दिव्यसहस्रनामजपे वि
नियोगः। ॐ शिरसि वेदव्यास
ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप
छन्दसे नमः। हृदि श्रीकृष्णप
रमात्मा देवतायै नमः। गुह्ये
अमृतांशूद्भवो भानुरिति
बीजाय नमः। पादयोर्देवकी
नन्दनः स्रष्टेति शक्तये नमः
सर्वाङ्गे शङ्खभृन्नन्दकी चक्री
ति कीलकाय नमः। करसंपुटे म
म श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियो
गः। इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ
विश्वं विष्णुर्वषट्कार इत्यङ्गुष्ठा
भ्यां नमः। अमृतांशूद्भवो भा
नुरिति तर्जनीभ्यां नमः। ब्रह्म
ण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेति मध्यमा
भ्यां नमः। सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्य
इत्यनामिकाभ्यां नमः। आ
दित्यो ज्योतिरादित्य इति क
निष्ठिकाभ्यां नमः। शार्ङ्ग

وشٹکار اِت دھیانم - شری وِشنوٗ
پریت اَرتھے دِویہ سہسر نام جپے بِن یوگہ
اوم تُنگ شِرس ویدویاس رِکھیے نمہ -
مکھے انُشٹُپ چھندسے نمہ -
ہِردی شری کرشن پرماتما دیوتائی نمہ -
گُہیے امرتانگ شوٗدبھوو بھانُ رِت
بیجاسے نمہ -
پادیور دیوکی نندنہ سرِشٹیت شکت
یے نمہ -
سرانگے سنکھ بھرنندکی چکریت
کیلکاسے نمہ -
کرسمپٹے مم شری کرشن پریت اَرتھے
جپے بن یوگہ - اِت رِکھیادِ نیاسہ -
اوم وِشوٗنگ وِشنر وشٹکار
اِت انگُشٹا بھیانگ نمہ -
امرتانگ شوٗدبھوو بھانُ رِت ترجنی
بھیانگ نمہ -
برہمنیو برہمکرد برہمیت مدھیما بھیانگ
نمہ - سُورن بِندُر کشوبھیہ اِت انا
مِکا بھیانگ نمہ - آدِتیو جیوتِر آدِتیہ
اِت کنشٹکا بھیانگ نمہ - سارنگ

मुनि है और छंद उसका अनुष्टुप
है और देव भगवान कृष्ण है।१६।

मू॰ ओं विष्णुं जिष्णुं महा
विष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरं।
अनेकरूपदैत्यान्तं नमा-
मि पुरुषोत्तमं ॥ १७ ॥

टी॰ मैं नमस्कार करता हूं उनको जो जै
करने वाले महाविष्णु समर्थ विष्णु
महा ईश्वर हैं अनेक रूप हैं दैत्यों के
नाश करने वाले हैं और नमस्कार क
रता हूं उस उत्तम पुरुष को ॥१७॥

श्रीवेदव्यास उवाच

ओं अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसह
स्रनामस्तोत्रमालामंत्रस्य श्री
भगवान्वेदव्यास ऋषिरनुष्टु
प् छंदः श्रीकृष्णः परमात्मा देव
ता देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः
आत्मयोनिः स्वयंजातइति बी
जं। उद्भवः क्षोभणो देवइति प
रमो मंत्रः। शंखभृन्नन्दकी चक्री
ति कीलकं। त्रिसामा सामगः सा
मेति कवचं। शार्ङ्गधन्वा गदा-
धरइत्यस्त्रं। ओं विश्वं विष्णुर्व-

مُن ہیں اور چھند اُنکا انشٹپ ہے اور دیوتا
کرشن بھگوان ہیں ۔

اشلوک

اونگ بشننگ جشننگ مہا بشننگ
پربھ بشننگ مہیشورنگ ۔ انیک
روپ دیتیانتنگ نام پرکھوتمنگ

ٹیکا

مین نمسکار کرتا ہون جو جے کرنیوالے مہا بشن
سمرتھ بشن مہا ایشور ہین ۔ انیک روپ
ہین دیتیون کے ناش کرنے والے ہین
نمسکار کرتا ہون اُس اُتم پُرش کو ۔

شری بید بیاس اُباچ

اونگ اسیہ شری بشنور دبیہ سہسر نام
استوتر مالا منتر سیہ شری بھگوان
بید بیاس رکھیر انشٹپ چھندہ شری
کرشن پرماتما دیوتا دیوکی نندنہ سرشٹیت
شکتہ آتم جونہ سوینگ جات بیجم
ادبھوہ چھوبھنو دیوات پرمو منترہ
شنکھ بھرنندکی چکریت کیلکنگ ترساما
سامگہ سامیت کوچنگ سارنگ دھنوا
گدادھرات استرنگ ۔ اونگ بشونگ بشنر

मू॰ तस्य लोक प्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपतेः। विष्णोर्नाम सहस्रं मे श्रृणु पापभयापहं ॥ २४॥

टी॰ जिस भगवान् के वह कैसा है कि मुख्य है और जगत् का मालिक है ऐसे जो विष्णु हैं उनके हजार नाम सुनो जो पाप और भय के दूर करने वाले हैं ॥२४॥

मू॰ यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः। ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूपते॥ २५ ॥ २५ ॥

टी॰ जौनसे नाम आगे हुये हैं और जौन से विख्यात हैं महात्मा और ऋषियों करके गाये हुये हैं वे नाम मैं कहूंगा हे राजा सुनो ॥२५॥

मू॰ ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः। छंदोनुष्टुप तथा देवो भगवान देवकी सुतः ॥ २६ ॥

टी॰ ऋषि इन हजार [illegible] नामों के वेदव्यास

اشلوک

۲۴
تسیہ لوک پردھانسیہ جگنا تھسیہ بھوپتے۔ بشنور نام سہسرنگ مے شرن پاپ بھیاپہم

ٹیکا

۲۴
ایسے بشن بھگوان جو جگت کے مالک اور مکھیہ ہیں انکے ہزار نام سنو جو پاپ اور بھی کے دور کرنے والے ہیں۔

اشلوک

۲۵
یان نامان گونان بکھیاتان مہاتمنہ رکھبہ پرگیتان تان بکشیام بھوپتے۔

ٹیکا

۲۵
جو نام آگے ہوئے ہیں اور جو مشہور ہیں اور مہاتما۔ اور رشیون کے گائے ہوئے ہیں ہے راجہ ان ناموں کو میں کہوں گا۔

اشلوک

۲۶
رکھر نامنانگ سہسرسیہ بید بیاسو مہامنہ۔ چھندو نشٹپ تتھا دیوو بھگوان دیوکی ستہ

ٹیکا

۲۶
رکھ ان ہزار ناموں کے بید بیاس

अच्छा है जो भक्ति करके कम-
ल नेत्र जो भगवान् हैं तिनकी
स्तुति करके मनुष्य सदा पूजा
करले ॥१०॥

मू॰ परमंयो महत्तेजः परमंयो
महत्तपः। परमंयो महद्ब्र-
ह्मपरमंयः परायणं ॥११॥

टी॰ उत्तम महा तेज है उत्तम महा
तप है उत्तम महा ब्रह्म है और
परमाश्रय है ॥११॥

मू॰ पवित्राणांपवित्रंयोमंग-
लानांचमंगलं। दैवतंदेव-
तानांचभूतानांयोव्ययः पि-
ता ॥१२॥१२॥१२॥१२॥

टी॰ सब पवित्रों में पवित्र है सब शुभों में
शुभरूप है देवताओं के दैवत हैं प्रा-
णियों के अविनाशी पिता हैं॥१२॥

मू॰ यतः सर्व्वाणिभूतानि
भवन्त्यादियुगागमे। य-
स्मिंश्चप्रलयंयांतिपुनरेव
युगक्षये ॥१३॥

टी॰ जिस भगवान् से प्राणी पैदा
होते हैं युग के आदि में और जि-
स भगवान् में फिर लय होजाते
हैं युग के नाश में ॥१३॥

اچھا ہی۔ جو بھکت کرکے کمل نیتر بھگوان
کی استت کرکے آدمی ہمیشہ پوجا کرے۔

اشلوک

۱۱
پرمنگ یو مہت تیجہ پرمنگ یو
مہت تپہ۔ پرمنگ یو مہد برہم
پرمنگ یہ پرآینگ۔

۱۱
ٹیکا۔ اتم مہا تیج ہی اتم مہا تپ ہی۔ اتم
مہا برہم ہی اور پرم آشرے ہی۔

۱۲
اشلوک۔ پوترانانگ پوترنگ یو منگلا
نانچ منگلنگ۔ دیوتنگ دیوتا
نانچ بھوتانانگ یو بیہ یہ پتا۔

۱۲
ٹیکا۔ سب پوتروں میں پوتر ہی سب شبھوں
شبھ روپ ہی دیوتاؤں کا دیوتا ہی جیووں کا
ابناشی پتا ہی۔

اشلوک

۱۳
یتہ سربان بھوتان بھونگ تیادو
جگاگمے۔ یسمنشچ پرلینگ یانت
پن ریو جگ کشیے۔

۱۳
ٹیکا۔ جس بھگوان سے پرانی پیدا ہوتے ہیں
جگ کے آد میں۔ اور جس بھگوان میں پھر لی
ہو جاتے ہیں جگ کے انت میں۔

टी॰ आदि और अन्त नहीं है जिसका और सब जगह व्याप्त है और सारे लोकों का महा ईश्वर है और लोकों का मालिक है उसकी स्तुति नित्य करता हुआ सब दुःखों को प्राणी उलंघन कर जाता है ॥ ८ ॥

मू॰ ब्रह्मण्यं सर्व्व धर्म्मज्ञं लोकानां कीर्त्ति वर्द्धनं । लोक नाथं महद्भूतं सर्व्व भूत भवोद्भवं ॥ ९ ॥

टी॰ ब्रह्म के जानने वालों के पालन करने वाले हैं सारे धर्म्मों के जानने वाले हैं लोकों की कीर्त्ति बढ़ाने वाले हैं लोकों के मालिक हैं बड़े हैं सब प्राणियों में सब प्राणियों का जन्म करने वाले हैं ॥ ९ ॥

मू॰ एष मे सर्व्व धर्म्माणां धर्म्मोधिकतमो मतः । यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्च्चेन्नरः सदा ॥ १० ॥

टी॰ ऐसा धर्म्म जो मुझको सब धर्म्मों में अधिक धर्म्म और

ٹیکا

۸
نہیں ہی آد اور انت جسکا اور سب جگہ بیاپت ہی اور سب لوگوں کا مہا ایشور ہی - لوگونکا مالک ہی اُسکی استت نت کرنے سے سب دُکھوں سے پرانی چھوٹ جاتا ہی -

اشلوک

۹
برہمنینگ سرب دھرمگیگ لوکانانگ کیرت بردھنگ - لوک ناتھنگ مہدبھوتنگ سرب بھوت بھووبھونگ -

ٹیکا

۹
برہم جاننے والے لوگوں کے پالن کرنیوالے ہیں سب دھرموں کے جاننے والے ہیں اور لوگوں کی کیرت بڑھانیوالے ہیں - لوگوں کے مالک ہیں بڑے ہیں سب پرانیوں میں سب پرانیوں کا جنم کرنے والے ہیں -

اشلوک

۱۰
ایکھ مے سرب دھرمانانگ دھرما دھک تموتتہ - یدبھکتیا پنڈریکاکشم استوے ررچے نرہ سدا -

ٹیکا

۱۰
ایسا دھرم جو مجھکو سب دھرموں میں ادھک دھرم اور

मू॰ जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमं । स्तुवन्नाम सहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥६॥

टी॰ भीष्म पितामह कहते हैं ॥ जगत् के प्रभु हैं देवों के देव हैं अनन्त हैं पुरुष हैं उत्तम हैं उनकी स्तुति हजार नाम करके पुरुष सुख को प्राप्त होजाय ॥६॥

मू॰ तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययं । ध्यायं स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥७॥

टी॰ उसी ईश्वर का पूजन भक्ति करता हुआ नित्य कि वह पुरुषरूप है और अविनाशी है उसी का ध्यान करता हुआ उसकी स्तुति करता हुआ नित्य उसी के नाम लेता हुआ ॥७॥

मू॰ अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरं । लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥८॥

اشلوک

۶ جگت پربھونگ دیو دیو منتنگ
پرکھوتمنگ - استون نام
سہسرین پرکھہ سنتوت تھتہ -

ٹیکا

۶ بھیکھم پتامہ کہتے ہیں - جگت کے پربھو ہیں
دیوتاؤں کے دیوتا ہیں انت ہیں اُتم
پرش ہیں - انکی استت ہزار نام کی کرنے
سے پرش سکھ پاتا ہے -

اشلوک

۷ تمیو چارچین نتنگ بھکتیا پرش
مبینگ - دھیاینگ ستون نمس
یننگ شچ ججمانست میوچ -

ٹیکا

۷ اسی ایشور کا پوجن اور بھگت کرتے کہ وہ پرش
روپ ہے اور اناشی ہے - اور اسی کا دھیان
اور اسکی استت نت کریں اور اسکے ارادہ کرے -

اشلوک

۸ انادی ندھننگ بشننگ سرب لوک
مہیشورنگ - لوکادھیکشنگ استون
نتنگ سرب دکھاتگو بھویت -

टी॰ वैशंपायन कहते हैं ॥ अच्छे
और पवित्र करने वाले सब धर्म्मों
को सुन कर राजा युधिष्ठिर ने शान
नु के बेटे भीष्म जी से फिर पूछा ३

मू॰ युधिष्ठिर उवाच ॥ कि
मेकं दैवतं लोके किं वाप्ये
कंपरायणं । स्तुवंतः कं
मर्चंतः प्राप्नुयुर्म्मानवाः
शुभं ॥ ४ ॥

टी॰ युधिष्ठिर कहते हैं ॥ एक
देव लोकों में है जिसके आश्र
य होजाय जिसकी स्तुति करने से
मनुष्य शुभ को प्राप्त होजाय ॥ ४ ॥

मू॰ को धर्म्मः सर्व्व ध
र्म्माणां भवतः परमो म
तः । किं जपन्मुच्यते
जन्तुर्ज्जन्म संसार बन्ध
नात् ॥ ५ ॥

टी॰ कौनसा धर्म्म सब धर्म्मों में
हमको अच्छा मत है जिसको
जपता हुआ जीव संसार के ब
न्धन से छूट जाय ॥ ५ ॥

भीष्म उवाच ॥

ٹیکا - بیشمپاین کہتے ہیں - اچھے اور
پوتر کرنے والے سب دہرموں کو سنکر
راجا جدہشٹہر نے شانتن کے بیٹے بھیکم جی
سے پھر پوچھا -

جدہشٹہر اباچ - کمیکنگ دیو
تنگ لوکے کنگ باپیکنگ
پراینگ - استونتہ کنگ
مرچنتہ پراپنیہ مانواہ شبھم

ٹیکا
جدہشٹہر کہتے ہیں کہ ایک دیوتا سب لوک
میں ہے کہ جسکے آسرے سب ہیں - اور
جسکی استت کرنے سے منکھ کا شبھ ہوتا ہے

اشلوک
کو دہرمہ سرب دہرمانانگ
بہوتہ پرومتہ - کنگ جپنگ
موچیتے جنتر جنم سنسار بندہنات

ٹیکا
کون سا دہرم سب دہرموں میں ہمکو اچھا
مت ہے - جسکو جپنے سے جیو سنسار کے
بندھن سے چھوٹ جاتا ہے

بھیکھم اباچ

श्रीगणेशायनमः

विस्नु सहस्त्रनामटीकासहित

मूल ॥ ॐ यस्य स्मरणमा-
त्रेण जन्म संसार बन्धना-
त । विमुच्यते नमस्तस्मै वि
स्नवे प्रभ विस्नवे ॥ १ ॥

टीका ॥ जिसके स्मरण मात्र करने
जन्म संसार के बन्धन से छूट जा-
य तिसके अर्थ नमस्कार है वे वि-
स्नु हैं समर्थ विस्नु हैं ॥ १ ॥

मू॰ नमः समस्त भूताना
मादि भूताय भूभृते । अ-
नेक रूप रूपाय विस्नवे
प्रभ विस्नवे ॥ २ ॥ २ ॥

टी॰ नमस्कार है उनको जो सा-
रे प्राणियों के, अधिकारी हैं और
पृथ्वी के धारण करने वाले हैं अ-
नेक रूप हैं जिनके - विस्नु हैं स-
मर्थ विस्नु हैं ॥ २ ॥

मू॰ वैशंपायन उवाच ॥ श्रु-
त्वा धर्मानशेषेण पावना
नि च सर्व्वशः । युधिष्ठिरः शां
तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ३ ॥

شری گنیشایہ نمہ

بشن سہسر نام ٹیکا سہت

اشلوک

مول

اوم یسیہ اسمرن ماترین جنم
سنسار بندھنات - بمچیتے
نمہ تسمئی بشنوے پربھ بشنوے

ٹیکا

جسکے اسمرن ماتر کرنے سے جنم سنسار کے بندھن
سے چھوٹ جاوے - تسکے ارتھ نمسکار ہی وہ
بشنو ہین سمرتھ بشن ہین -

اشلوک

مول

نمہ سمست بھوتانا مادی بھوتائے
بھو بھرتے انیک روپ روپائے
بشنوے پربھ بشنوے -

ٹی - نمسکار ہی انکو جو سب پرانیونکی ادھکاری ہین
اور دھرتی کو دھارن کرنیوالے انیک روپ ہین جنکے بشن ہین سمرتھ بشن ہین

مو - ویشمپاین اواچ - شرتوا دھرمان
اشیشین پاونانچ سروشہ - جدھشٹھر
شانتنوں پنر ایوابھیہ بھاشت

ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

ہ ہا ہِ ہی ہُ ہو ہے ہَے ہو ہَو ہن ہہ

क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः

کش کشا کشِ کشی کشُ کشو کشے کشَے کشو کشَو کشن کشہ

त्र त्रा त्रि त्री त्रु त्रू त्रे त्रै त्रो त्रौ त्रं त्रः

تر ترا ترِ تری ترُ ترو ترے ترَے ترو ترَو ترن ترہ

ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः

گیہ گیا گیِ گیی گیُ گیو گیے گیَے گیو گیَو گین گیہ

شناخت کے واسطے اُلٹے پلٹے حروف

पहिचान के वास्ते उलटे पुलटे अक्षर

अं उ लृ आ ई अ इ ऊ ॡ ऐ ऋ ए ओ

ॠ अः क च ट त प य स ह क्ष त्र ज्ञ

ख छ ठ थ फ र स ग ज ड द ब

ल व य रु ढ ध म ङ ञ ण

(संयुक्त अक्षर) (چند حروف مرکب)

क्ख च्छ ज्ज थ्य द्य प्फ ब्द म्म प्य ह्न ल्द ल्ल

श्र शृ च्य ङ्ग ग्य ट्ट ड्ड द्द श्ल ग्न क्त त्य

म्न ड्ढ द्ध त्त ह्ल ह्य द्य व्य स्त त्व ग्र दृ स्म द्व

स्स ष्ण क्क ख्व ग्ग च्च त्त य्य न्न प्प व्व

भ्भ श्श ष्प स्स क्र प्र च्य ज्व ज्य त्क स्व

ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः

ب با بِ بی بُ بو بے بَی بو بَو بن بہ

भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः

بھ بھا بھِ بھی بھُ بھو بھے بھَی بھو بھَو بھن بھہ

म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः

م ما مِ می مُ مو مے مَی مو مَو من مہ

य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः

ی یا یِ یی یُ یو یے یَی یو یَو ین یہ

र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः ।

ر را رِ ری رُ رو رے رَی رو رَو رن رہ

ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः

ل لا لِ لی لُ لو لے لَی لو لَو لن لہ

व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः

و وا وِ وی وُ وو وے وَی وو وَو ون وہ

श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः

ش شا شِ شی شُ شو شے شَی شو شَو شن شہ

ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ षं षः

ش شا شِ شی شُ شو شے شَی شو شَو شن شہ

स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः

س سا سِ سی سُ سو سے سَی سو سَو سن سہ

ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ڈ	ڈا	ڈِ	ڈی	ڈُ	ڈُو	ڈے	ڈَے	ڈو	ڈَو	ڈَن	ڈَہ
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ڈھ	ڈھا	ڈھِ	ڈھی	ڈھُ	ڈھُو	ڈھے	ڈھَے	ڈھو	ڈھَو	ڈھَن	ڈھَہ
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
ڑ	ڑا	ڑِ	ڑی	ڑُ	ڑُو	ڑے	ڑَے	ڑو	ڑَو	ڑَن	ڑَہ
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः।
ت	تا	تِ	تی	تُ	تُو	تے	تَے	تو	تَو	تَن	تَہ
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
تھ	تھا	تھِ	تھی	تھُ	تھُو	تھے	تھَے	تھو	تھَو	تھَن	تھَہ
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
د	دا	دِ	دی	دُ	دُو	دے	دَے	دو	دَو	دَن	دَہ
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
دھ	دھا	دھِ	دھی	دھُ	دھُو	دھے	دھَے	دھو	دھَو	دھَن	دھَہ
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
ن	نا	نِ	نی	نُ	نُو	نے	نَے	نو	نَو	نَن	نَہ
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः।
پ	پا	پِ	پی	پُ	پُو	پے	پَے	پو	پَو	پَن	پَہ
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
پھ	پھا	پھِ	پھی	پھُ	پھُو	پھے	پھَے	پھو	پھَو	پھَن	پھَہ

حروف مع اعراب

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

کَ کا کِ کی کُ کُو کے کَی کو کَو کَن کہ

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः

کھ کھا کھِ کھی کھُ کھُو کھے کھَی کھو کھَو کھَن کھہ

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः ।

گَ گا گِ گی گُ گُو گے گَی گو گَو گَن گہ

घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः ।

گھ گھا گھِ گھی گھُ گھُو گھے گھَی گھو گھَو گھَن گھہ

च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः

چَ چا چِ چی چُ چُو چے چَی چو چَو چَن چہ

छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः

چھ چھا چھِ چھی چھُ چھُو چھے چھَی چھو چھَو چھَن چھہ

ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः

جَ جا جِ جی جُ جُو جے جَی جو جَو جَن جہ

झ झा झि झी झु झू झे झै झो झौ झं झः

جھ جھا جھِ جھی جھُ جھُو جھے جھَی جھو جھَو جھَن جھہ

ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ टं टः ।

ٹ ٹا ٹِ ٹی ٹُ ٹُو ٹے ٹَی ٹو ٹَو ٹَن ٹہ

ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः

ٹھ ٹھا ٹھِ ٹھی ٹھُ ٹھُو ٹھے ٹھَی ٹھو ٹھَو ٹھَن ٹھہ

स्वर कहलाते हैं और बाकी ३३ अक्षरों को व्यंजन
कहते हैं स्वरों के दो स्वरूप हैं एक तो पूरा अक्षर
दूसरा अक्षरों का निशान जिसको मात्रा कहते हैं
और पीछे जो तीन अक्षर लिखे हैं (क्ष) (त्र) (ज्ञ)
सो (क) और (ष) मिलने से (क्ष) और (त र)
मिलने से (त्र) और (ज ञ) मिलने से (ज्ञ) बनता है ॥

واضح ہو کہ دیوناگری حروف ۲ دو قسم پر منقسم ہین سور اور بنجن
چنانچہ اوپر والے ۱۶ سولہ حروف سور کہلاتے ہین اور نیچے والے
۳۳ تینتیس حروف بنجن کہلاتے ہین سب حروف ۴۹ انچاس ہین اور
آخر کے تین حروف یعنی (کش) (تر) (گیا) مرکبات مین داخل ہین
ज्ञ त्र क्ष
یعنی (ک) و (ش) ملکر (کش) ہوتا ہی اور (ت) و (ر) ملکر (تر) اور
(گ) و (یا) ملکر (گیا) ہوتا ہی - سور کی دو شکلین ہین ایک تو پورا
حرف جیسے (آ) اور دوسرے صرف نشان کا حرف جیسے (ا)
جو بنجن کے ہر ایک حرف پر لگایا جاتا ہی جسکو ماترا یعنے اعراب
کہتے ہین -

अथ वर्णमाला का वर्णन

سنسکرت کی الف بے فارسی خوانان کے واسطے

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ

ا آ اِ اِی اُ اُو رِ رِی لِر لِری اِی اَی

ओ औ अं अः ॥

او اَو اَن اَہ

इनको सोलह १६ स्वर कहते हैं -

انکو سولہ سُور کہتے ہیں -

حروف ویجن

क ख ग घ ङ   च छ ज झ ञ

ک کھ گ گھ نان   چ چھ ج جھ یان

ट ठ ड ढ ण   त थ द ध न

ٹ ٹھ ڈ ڈھ ڑان   ت تھ د دھ ن

प फ ब भ म   य र ल व श ष

پ پھ ب بھ م   ی ر ل و ش شں

स ह क्ष त्र ज्ञ ॥

س ہ کش تر گیا

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

۱ ۲ ۳ ۴ ۵ ۶ ۷ ۸ ۹ ۱۰

प्रकट हो कि देवनागरी वर्णमाला में ४९ अक्षर हैं उन में दो प्रकार हैं स्वर और व्यंजन - पहिले के १६ अक्षर

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा इतिहास	महाभारत पर्व्व अलग	१- आदि पर्व्व	सातों काण्ड
महाभारत	इस भी हैं	२- सभा पर्व्व	१- बाल काण्ड
१- पहिले हिस्सा में	१- आदि पर्व्व	३- विराट पर्व्व	२- अयोध्या काण्ड
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२- सभा पर्व्व	४- उद्योग पर्व्व	३- आरण्य काण्ड
२- दूसरे हिस्सा में	३- वन पर्व्व	५- भीष्म पर्व्व	४- किष्किन्धा काण्ड
विराट पर्व्व उद्योग	४- विराट पर्व्व	६- द्रोण पर्व्व	५- सुन्दर काण्ड
पर्व्व भीष्म पर्व्व द्रो	५- उद्योग पर्व्व	७- कर्ण पर्व्व	६- लंका काण्ड
ण पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	८- शल्य पर्व्व	७- उत्तर काण्ड
३- तीसरे हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	९- शान्ति पर्व्व	रामायण शब्दार्थकोष
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	८- कर्ण पर्व्व	१०- स्त्री पर्व्व	रामायण का इतिहास
गदा पर्व्व सौप्तिक	९- शल्य पर्व्व व गदा	११- स्वर्गारोहण प-	रामायण मानसदीपिका
पर्व्व ऐषिक पर्व्व	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	रामायण राम विलास	रामायण कवितावली
विशोक पर्व्व स्त्री	व ऐषिक व वि-	रामायण तुलसीकृत	रामायण गीतावली
पर्व्व शान्ति पर्व्व में	शोक व स्त्री पर्व्व	रामायण सटीक मय	सटीक
राज धर्म आपद्ध-	१०- शान्ति पर्व्व राज	मानसदीपिकाकोष	विनयपत्रिका बाबू
र्म मोक्ष धर्म	धर्म मोक्ष धर्म व	आदि	मोहनलाल
४- चौथे हिस्सा में	दान धर्म	रामायण तुलसीकृत	विनयपत्रिका बाबू
शान्ति पर्व्व दान	११- अश्वमेध आश्र-	टीका सुखदेव कृत	शिवप्रसाद
धर्म अश्वमेध आश्र	मवासिक मुशल प-	रामायण तुलसीकृत	शंकर चरित सुधा
म वासिक पर्व्व	र्व्व महाप्रस्थान स्व-	टीका गुरुलानन्द	भुवनेश भूषण
व मौशल पर्व्व व	र्गारोहन	रामायण सोरठ्ठ-	विष्णु पुराण भाषा
महा प्रस्थान स्वर्गा	१२ हरिवंश पर्व्व	अरेलकी मय नस्वीरें	लिंग पुराण
रोहन पर्व्व हरिवंश	महाभारत इन्तख़ाब	रामायण तुलसीकृत	मनोहर खण्ड

بشن سہسر نام سٹیک

بیاس جی کا بنایا ہوا

جسکے نت پاٹھ کرنے سے اور سننے سے برہم ہتیا آدی سب پاپ سو کروڑ جنم کے چھوٹ جاتے ہیں
اور کروڑ گئودان کا پھل اور مکت اور بدیا بل پراکرم تیج بجے دھن دھرم درب ارتھ سکھ
کامنا جس اچل لچھمی سنتان کلیان آروگتا سوبھا روپ سب بید پڑھنے کا پھل سب تیرتھوں
کے اشنان کا پھل سب دیوتاؤں کی پوجن کا پھل پراپت ہوتا ہے
یہ سب پھل اشلوک ۱۲۷ لغایت ۱۶۳ میں بیاس جی اور بشن بھگوان نے کہے ہیں

ایسا امول پدارتھ

سنساری جیووں کے اپکار اور ادھار کے نمت سکل جن پراپکاری

विष्णुसहस्रनामसटीक

व्यास जी का बनाया हुआ

जिस के नित्य पाठ करने और सुन्ने से ब्रह्म हत्यादि सब पाप सौ करोड़ जन्म
के छूट जाते हैं और करोड़ गौ दान का फल और मुक्ति और विद्या बल परा
क्रम तेज विजय धन धर्म द्रव्य अर्थ सुख कामना यश अचल लक्ष्मी सन्ता
न कल्याण आरोग्यता शोभा रूप सब वेद पढ़ने का फल सब तीर्थों के
स्नान का फल सब देवताओं की पूजा का फल प्राप्त होता है यह सब फल
श्लोक १२७ से १६३ तक में व्यास जी और विष्णु भगवान् ने कहे हैं

सो ऐसा अमोल पदार्थ

संसारी जीवों के उपकार और उद्धार के निमित्त सकल जन परोपकारी श्री

منشی نول کشور کے چھاپہ خانہ میں مقام لکھنؤ چھپا
سنہ ۱۸۸۳